राजस्थानी बातां

बिड़ला सेन्ट्रल लाइब्रेरी
पिलानी

लिपि मूल्य पृ० $\frac{\text{१३५} \times \text{१३ शब्द} \times \text{३० पंक्ति}}{\text{२५० शब्द}} \times \frac{\text{१}}{\text{४}}$ रु०

= ५२ रु० १० आ० ३ पा०

संग्रहकर्ता श्रीनरपति स्वामी

१५-१०-१९४८

34061

" सूची "

क्रम संख्या	शीर्षक	पृ.
१	राजस्थानी बारता	१-२
२	भोगतां रै [illegible]	४
३	साडूळा री [illegible]	१६
४	[illegible]	[illegible]
५	लाखी बिणजारो	४०
६	[illegible]	४४
७	न्याय	[illegible]
—	कड़वो [illegible]	५०
९	बोरो र उधारियो	५२
१०	[illegible]	५८
११	[illegible]	६८
१२	[illegible]	९७
१३	साडू री [illegible]	१०१
१४	भोगतां र [illegible]	१०८
१५	हाली राम जी	११३
१६	[illegible]	११८
१७	[illegible]	१२६
१८	[illegible]	१३०
१९	बाप रो बदलो	१३२
२०	[illegible]	१३३
२१	दुर्गादास जी राठोड़	१३५

राजस्थानी - लोक - कथा - 1

एक रजपूत हो। बो जीरोड़ो सो हो। न तो बाँ कै कोई रिजक हो न कोइ
पूर्त। पण बाँ कै घणूं बड़ो परवार भी कोनी हो जीं रै खातर बीं
नै घणी भाजा-दौड़ी करणी पड़ती। बो मींयूं बोली हा उंको सो। न बाँ रै
कोई गाय बाछली को कोनी बोड़ो हो न घर को ल्हारसो। गाय न को बाछली
नीं आजै आछी। रजपूतण तो घरां बैठी रैती हर रजपूत बंदूक लेकर
बेनजान उजाड़ में नीसर ज्याय हर हिरणियाँ खरगोशियाँ कै गैल भाग्ता
फिरैं कदे तो सिकार मिल ज्याय हर कदे यूं ही सारै दिन धक्का खाय री
पाछो आ ज्याय। पण दो जणाँ को पेट भरणूं भी आबो रहै। बौं
सूअर पग मारबैं में कोई भी काण कसर कोनी छोड़ी पण बा ही हाय गाय
हाय गाय लागी रैती। एक दिन दो दिन को भूखो बण में सिकार मारण नै गयो। बो
एक सूसै कै गैल हुयो। भागतां भागतां सारो दिन चलतो गयो पण सूसो
कोनी हाथ आयो। बो भी सूसै कै बिलम में पड़ कर घर सूं कई कोसाँ
दूर निकलग्यो। दिन छिपग्यो। तो बो बसेरै कै खातर एक गाँवड़ियै में गयो।
बठै बी एक ठाकर रैतो हो सो उंण बूजतै बूजतै बीं घरां जा कमर खोली।
पण बो ठाकर भी भोत गरीब हो। बीं कै भी अन-दाँताँ बैर पड़्यो हो।
रोटी पर रोटी देकर बो भी कोनी खातो। पण बो निरणूं भी कोनी रैतो।
अध-धायो, अधभूखो दिन काडबो करतो। उंण आप कै घर में ही जितो बाजरै
मोठ की रोटी बीं नै भी देई हर पाणी पातड़ूं पेट भर दियो। रात नै सोवण
नै मांचा दे दियो र ओडण-बिछावण नै गुदड़ा गाभा दे दिया। रात नै
अंधेरै ताणी बातां करतो रयो। हुक्को, चिलम, तमाखू पीतो रयो अर
सोतै पड़े ओर तो सैं आप आप कै ठिकाणाँ जा लाग्या, हर ठाकरड़ा आप
को मांचलै पर गुड़ रयो। पण बीं नै नींद कोनी आई। क्यूं कै एक तो बिना
घर ढाररै लैर की चिन्त्या। हाय ठकराणी दो दिन की भूखी बैठी है। आज
भी आ बाट उडीकती होगी। फलतै में खड़ी खड़ी मेरा गेलो देखती होगी।
चिन्त्या करती होगी। एकली खड़ी खड़ी आंसू गेरती होगी। मैं भी भोत
दूर निकल आयो। कोसाँ को आन्तरो पड़ग्यो। तड़कै कै बेरो कीं बगत
ताणी पूगस्यूं। जे तड़कै भी सिकार न पाई तो बडो गजब हो ज्यासी।
ठकराणी नै के लेज्या कर दूंगो। ईं भांत को बिचार करतो करतो
हर बीं नै नींद कोनी आई। यूं बिचार करतां करतां आधी रात आगी
होगी। तो ठाकर कै कान में भणकार पड़ी। हर ठाकर ठै कान दियो। ताक

के सूतौ हो के बीं क्रो ही जो सुणतो होरयो हो। हर उण ध्यान लगायो कै दोनूं
या बोली, किन्नैं हूं आवै है। उण च्यारूं मेर निजै करी पण माणस कोनी दिख्यो।
खाली अवाज ही अवाज सुणती रयी। तो जो आप बी घणूं-चोकस हुयो जो वे देवै है
कै या अवाज तो बीं कै सिराणैं आती हूं नीसरै है। हर नीतिरै बी है बीं कै नजीक
कै काठ मां हूं। दूसरी अवाज बीं कै पसवाड़ै हूं आवै है। बीं नै बी गौर सूं कान
लगा कर सुणी। तो बा एक नीम कै पेड़ मां हूं आवती थकी सुणी। तो अन्दर बाळू
डरयो बाळू हीमत करी।। तो जो वे सूतौ है कै बीं री बन्दूक को काठ नीम नै
बोल्यो - रै रै नीम! कैं हो भाई! बन्दूक का काठ। रै कै तूं ई बुवाड़ी कै
बीच मां ऊग्यो। डैण्गर लड़यो है अर पेर बी यो घर हालो आप की रोटी खाय है। करतार
थांनैं। जो मैं तो चावतो। नई घर कै आंगण मां खड़यो होऊं तो आं नै तीन दिन मैं भीतर
भीतर आर बार कर देऊं। गुदड़ी कै पर हूं खाय देऊं। मैं तो नीम रो च्यार
आंगल को छोटो सो काठ रो टुकड़ो हूं तो बी ई ठाकर नैं खिसकौ मारूं हूं
हर ई नैं पेर पर बी कोनी खाण देऊं। जद वो नीम बोल्यो कै भाईड़ा!
धार धाड़ा तो मैं बी कोनी घालूं। पण मेरो बस कोनी चालै। थै तेरी
बात बाळू कोनी चालै। इणी कै बीच मैं मौत आवती आ रई है। थै
भाईड़ा! बूझै मतना। ई ठाकर कै बेटै की बहू पितरसरत मसतरी है।
हर बा नेम हूं पैलो माछ जो तवै पर गेरै बी नै हतकार नाखो करै है।
सो ओर तो बाकी मरय मैं ई ठाकर कै घर मैं च्यारूं खानी बट पसारल्यूं पण
चूलै कै तलै मेरी जड़ कोनी पसर सकै। क्यूंक चूलै कै तलै की जमीन बी
आवती कै सत हर हतकार कै पाण सीसै हूं बी करड़ी होरी है ओर
मेरा पां बठै कोनी पड़ सकै। सो भाईड़ा! के बताऊं! जाड़ तो मैं मोत
पीसूं हूं ओर मन मैं भी मोत मोत तरलवा उठै है। पण मेरो तो कामो
बी जोर कोनी चालै। जै कोई उपाय थां नै दीसै तो बा मनै बताय। तो
बन्दूक को काठ बोल्यो कै भाई सत हर धरम कै आगै तो मेरो बी जोर कोनी।
एक नीम कै जे सौ नीम बी हो ज्यांवां तो बी कोई हूणी-जाणी कोनी।
हां जे बा ठाकर कै बेटै की बहू पीहर चली जाय तो अलबत हो सकै
हो सकै है। या सुण की ठाकर नै मोत रीस उठी हर उण आप की बन्दूक
नैं नालवांणी पकड़ कर जोर हूं नीम कै मारी सो बन्दूक कै काठ का टुकड़ो टुक
होग्यो। हर पेर उण या सारी बात बीं घर कै ठाकर नैं कही। तो उण बी नीम
नैं जड़ां सूधां कटवा कर बाहर फिंकवा दियो ओर बीं ही दिन हूं वे दोनूं आप की रोटी
खाण लागा।

नोट - रामेश्वर स्वामी नरहड़ (ग्रुप).

बात - २

एक गाँव हो। बीं गाँव में एक भोगतो ठाकर रहतो। बीं के ऊँटों
की जगाँ ऊंट, घोड़ाँ की जगाँ घोड़ा। गायाँ की जगाँ गाय और भैंस्याँ की जगाँ
भैंस्या। अन की जगाँ अन और धन की जगाँ धन। गोलाँ की जगाँ गोला र
बान्दियाँ की जगाँ बान्दी। पण सारी बाताँ को ठाठ हर और कोई भी बात की कमी
कोनी ही। भोगतो भी ठाकरी रो तिरदार हो। रजपूती आण-बाण हर दुनियादारी
रो जाणतो हो। पण बो लुगायाँ को पतियारो कोनी करतो। क्यूँ कै बो कई जगाँ ठोकर
खा चुक्यो हो। एक दिन कै हुई कै सैं होली को दिन हो। जाजिमा बिछ्योड़ी ही। कसूंबो
गल रयो हो। भीतर रावळै में जिमणार पड़ रही ही। सातूं एँण रावळै में चावळाँ
दाळ उकळै ही। आदराक जीमैं हा। आदराक जीम र उठ कर बायर आवै हा। आदराक
जीमण खातर भीतर जावै। घणूं उछाव हो रयो हो। इतरै में भोगतै
कै सातेरै हूं एक ओठी आयो। जद बो कोटड़ी में बड़ण लाग्यो तो बीं नै गढ़
की नाग सामै मिली। दोनों आमनै सामनै भेर फेर। तो नागनी बीं नै
पिछाण लियो और फेर रोकयो कै आज होली नै मत पधारियो। तो उण
सूकै मूण्डै जाब दीन्यूं कै 'राम जी नै या ही सुहाई।' या सुण कर फेर उण
रोकयो कै इतणाँ उणमणाँ क्यूँ बोल्या? कै बोल्यूं न कै करूँ थारी मालकण
आज विना मोई हो गई। इतणी सुणतै पाण नाग पाछी आवड़ी। इस इबार
की इबार जाय कर राणी नै यो समचार कैस्यूं। पण भोगतो भी थोड़ी
दूर पर खड़्यो खड़्यो या बतळावणी सुणै हो। सो फेर उण नागनी नै
दरवाजै बायर कढ़वा दीनी और दो जणाँ नै पैहरै खड़्या कर दिया इतरै नाग
नै दिन उगे पैला भीतर मत आण दियो। क्यूँ कै बो जाणै हो कै आ
तिरिया की जात है। रावळै कै भीतर जातै पैलाँ या राणी नै यो कु-
सुब समचार सुणासी और आज होली कै दिन बार घोड़ो माच होसी।
म्हारै में तो क्यूँ बीतसी सो बीतसी पण गढ़ म धन उलाल्यो पड़ेगो, है बो
कूण खासी? और म्हारी देखा देखी आज सारै गाँव को लोग भी सोग रो
सोग मनासी। तूँ हर कै दिन सारो मीठो धानपर पर रैयो रैयायो रसी
सो यो ठीक नहीं। मैं मरूँ मेरी भाई, तूँ क्यूँ मरै पराई नामी। सो यो समचार
रात रात नै तो दाब लेस्यूँ और दिन ऊगा सुणासूं। या विचार कर बो समचार
दाब लियो और ओठी नै भी समझा कर एक छेडै उतार दियो। और सगर
काम बियाँ का बियाँ चालता रया। पण नागनी कै आफरो चड्योड़ो हो। हो
उण न क्यूँ खायो न क्यूँ पीयो और राणी नै यो समाचार सुणा कर मरदी

पावण खातर तावड़ा पीरवा लागी। हर बा भाग भाग गढ़ में आवै हर पैरायत वीं नै पाछी काढ़ें। हर बा ओजूँ आवै हर बै फेर पाछी कर देवैं। नाणती नै बार बार काढ़दी पण बा तो को हारी नै ओर उण चक्री बाँध दीनी। जद वीं नै क्यूँ ही रसतो कोनी पायो तो बा मन में सोची हात कोई दूसरै रसतै रावलै में पूँचणूँ चाये। तो उण कै करी कै एक झाड़ी को लठ एक खेत में पड़्यो हो सो भर बो लठ दो भोलै भाँणां नै बुलवाय कर बो लठ उठवाय हर रावलै कै गैल नै मेड़ी कै स्हारै लगाय कर खड़्यो कर हर आप ऊपर चढ़ण लागी। तो चढ़तां चढ़तां बा वीं मेड़ी कै लाँकड़ै ना लागी हर मेड़ी कोई हाथ दो हाथ ऊँची रही। इतरै में लठ जगाँ छोड़ हर चाली हर ऊपर चाली नाणती सो धररर धम्म जा कर धरती पर पड़ी। पड़ती ही बा जगाँ जगाँ हूँ छुलगी ओर टींगण हड्डी टूटगी। खुड़को सुण कर राणी आपकी गोली बान्दियाँ नै हुकम दियो कै भाजो हर देखो ए! यो खुड़को सो कै हुयो? इतणी सुणतां पाँण ई राणकली, माणकली, मायतां कै भाठ मारणी हीड़ जगरोही चाली। हर बै भाज भाज पिछोकड़ै आई। तो कै देखै है कै रावली नाण ना ऊपर नै पग होरया हैं। हर बै बावड़ जाय हुकराणी नै अरज करी कै सिरकार बा तो थारी नाण हैं। ओर बेहोश पड़ी है। तो या सुण की राणी झर देसी भाजकर पिछोकड़ै आई ओर आकर बोली कै हैं भो नाण जी! थारी कै दशा है! तो नाण बोली कै मेरै भारी चोट लागी है ओर मेरो बचबो मोत दुहेलो है। तो राणी कही कै रै तो बावली! थे यो ऊबै लकड़ै बेज क्यूँ घाल्यो? जद नाणती बबकारी कै मेरै मरण को धोखो कोनी। पण थारो भाई मर गयो बीं को धोखो है। हर या बात सुण कर राणी धोली हो गई हर [illegible] तो कै थारो भाई फलाँण सीं। रै कै थाँनै कोई ठा! कै ठा कै मै थारै पीर कै ओठी नै बूझ री आई हूँ। बो कोटड़ी में बैठो। हर राणी या सुण कर चीघाई। हर रोवा कूको सुण कर भोगतो समज गयो कै होन हो राण्ड नाणती जा पूँची। राणी को रोज सुण कर सारो मामलो बिगड़ गयो। लोग जीमता अदबीच में खड़्या हो गया। जीमण बैठणियाँ बैठ्या कोनी पगरखी खोलणियाँ पूठी पगरखी पहर लीनी। घर घर में सोग छाय गयो। हर मंगल में कुमंगल हो गयो। जद भोगतो देख की बान्या हर बेगम दे जात कै गम करै? जो आगतरी को भरोसो करै वीं को गुर पीर झूठो हर उठ आप कै गाँव में सारै हूँडी फिरवा दी हर "। तिरिया मातै तो आप हूँ कोनी मातै सागी बाप हूँ।"

नोट— अमर सिंह जी वादल्या से प्राप्त.

" [illegible] रैवर " ५

बात- ३,

एक साहूकार हो. बीं कै एक लड़को हो. बो लाडलो कोडलो हो. बो जनवानदार
में जांतो हो. कोई बात रो तोसर कोनी हो. बीं नै जगाँ की जगाँ सारी चीज
त्यार मिलती. पीसैं को कोई घाटो कोनी हो. टेबरी री जदू बणातो. एक नोकर
सदा हुकम में हाजर रैतो. जे बायर भीतर जातो तो भी नोकर सागै जातो. जे
कूवै बावड़ी जातो तो भी नोकर सागै जातो. जे बाग बगीचै जातो तो भी
नोकर सागै जातो. जे हाट बजार जातो तो भी नोकर सागै जातो। पण
बो एकलो कदे भी बायर कोनी नीसरतो. एक दिन बो बजार में गयो तो बठै
के देखै है के एक काळ नाग साप बिकणूं आयो है. बीं साप नै बजार में कोई भी
कोनी खरीद्यो. तो स्हैर में साहूकार को बेटो आ पूंच्यो. उण देख र कयो के कठै
गई थाँरी लेन नाग को मोल। तो कै भई साप कै मोल का सौ रिपिया है तो
कै गइ जे सौ रिपिया दर बो काळ नाग नै मोल ले कर आप के घरां लेय
आयो. बीं नै एक लोह को पींजरो घड़वा कर बीं में बन्द कर दियो और
काचो दूद और मिसरी मिलाय मिलाय पावण लाग गयो. इण भांत साप साहूकार
कै घर में बैठ्यो मोज करै। यूँ करतां करतां भोत घणां दिन हो गया
तो एक दिन बो ही साहूकार को बेटो ओरूं बजार में आयो तो के देखै है
कै एक सूवो बिकणूं आय र्यो है. ऊँ सूवै को मोल भी बो ही सवा सै
रिपिया कर राख्यो है. सारो बजार का आवै और देख देख र पाछा चल्या
जाँय पण सूवै नै कोई भी कोनी मोल लियो. पण साहूकार के बेटै कै यो
नेम के बजार में आयोड़ी चीज नै जे और कोई भी मोल न ले तो बीं नै
बो मोल ले. सो है सूवै हाळै के पास आकर कयो कै भई बताव तैं सूवै
को के मोल कर राख्यो है. तो कै भई सूवै कै मोल का तो सवा सै रिपिया क
राख्या हीं. कै कमती बेसी कोनी करणा के? कै ना. तो कै ओ ले सवा सै
रिपिया और म्हारो सूवो म्हानै पकड़ाय. तो सूवै हाळै सूवो तो पकड़ा दिय
र रिपिया गिण कर सवा सै गोथळी में घाल्या। साहूकार के बेटै के करी
कै बो सूवो भी आपकी बैठक में ले जा कर पींजरे में घाल र खूंटी पर
लटका दियो. रोजीना दाख छुआरा खुवावै र सूवै नै पढ़ावै. यूँ करतां
सूवो भी पढ़ गुण कर बिरद्वान बण गयो. मिनख की सी बोली बोलै र
सरका सा सारे. साहूकार के बेटै को हर सूवै को गाडो प्यार हो गयो. एक
दिन ओजूं साहूकार को बेटो बजार में गयो तो बठै के देखै है के एक मिनड
बजार में बिकणो आय र्यो. बीं नै भी सारै स्हैर का लोग देख देख पाछा जाय

जद बीं नै कोई भी कोनी खायी तो साहूकार को बेटो मोल लियायो हर बीं
नै भी ल्याकर आप रै घर में छोड लीनी. बीं नै भी रोज रोज खुवाकर
मलाई खुवावैं हर मोटी कोगाड़ सी करली. एक दिन कंवर साप रै पास खड्यो
हो सो खड़े खड़े कंवर नै साप बोल्यो कै भाया! जे तूं मनै खुल्लो छोड देवै
तो मैं तनै मेरै बाप कै कनै हूं आछी हूं आछी चीज ल्या दे दूं।
तो साहूकार को बोल्यो कै भाई छोड़ण नै तो मैं तनै इबार छोड़ दूं
पण मेरो तेरै मैं मोह पड़ ग्यो है. सो थारै बिना म्हनै तो एक घड़ी भी
आवड़ै नहीं. तो कै मेरो मन मेरै मा-बापाँ हूं अर भाई-भायलाँ हूं मिलबा
की करै है. तो जे एक बार भी चाल्यो जाणदेवै तो तेरै सै बडो गुण।
तो कै मनै भी साथ लै चाल. तो कै थाँ नै भी साथ लै चालस्यूं
पण म्हारी बंबी में पैलाँ आगै जाय कर हर पूछ कर आप घरकाँ नै
साथै लै चालस्यूं. क्यूंकै म्हारी बाम्बी में कै बैरी गुण कीसो है हर गुण किसी
कोई भलो है कोई बुरो है। जे कोई भोलो स्याणो फूंक मार देवै तो थारो
बुरो भलो हो जाय. सो पैलाँ मैं एकलो मिल कर अर सगाँ नै पूछ कर
फेर थाँ नै साथै लै चालस्यूं. तो कै ठीक है. तूं बाम्बी कै भीतर जाय
कर पलाँ पूछ लेयं हर मैं बाम्बी कै बायर खड्यो रहूंगो. पाछो आय कर
मनै लै चालिये. तो कै ठीक है. हर बै दोनूं बाम्बी नै भीर हुया. आगै
आगै साप चाल पड्यो हर लैर लैर साहूकार को बेटो हो लियो. चालतो र
साप उजाड़ बेबान में गयो. बठै एक डूंगर कै खोलै में एक बडी भारी बंब
ही. सो बठै साहूकार कै बेटै नै तो बायर छोड दियो हर आप सरल देसी
भीतर चल्यो गयो. बठै बाम्बी में सारो परवार भेलो होरयो हो. सो बीं
नै देख कर सै मोत राजी हुया. कै आव रै भायर. आव रै भायर.
इतरै दिनाँ ताणी कठै रयो. म्हे तो थारी मोत चिन्ता करी. मोत फिकर
करयो. बीं कै च्यारूं मेर फिर गया हर बीं का लाड चाव करबा सै
लाग गया. मा बोली कै बेटा मैं तो झूर झूर कर मर गई. थारै सांईनार
कै मूं आय गयी. बेटी-बेटा हो गया. घर बांध बांध न्यारा बैठ
गया. पण थारो पतो पूंणी आंगू ताणी कोनी कढ्यो सो म्हारै मनमें
घणू सोच हो रयो है. हर बाप बोल्यो कै बेटा! थारै सागतै का कई
समचार आय गया कै म्हारी बेटी स्याणी हो गई है सो साप म्हे तो बेग
सा म्हारी बेटी को ब्या करांगां. थारै बेटै नै कह तो बुलावो हर कर म्हारै।

बेटी की सगाई छोडो. सो लाल, इब ना राम नै चोखी करी कै तूं मोकै पर आग
गयो. मायेला की आप आप गोला हो गया हर इवरै दिनां तांणी तूं कठै गयो हो
म्हानें तेरी गोल गोल हूसार आई. गोल गोल देख्यो. गोल गोल फिरया. गोल गोल
चिन्त्या करी पण तूं तो कै बेरो कठै बिलाग गयो. भाई - भतीजां की गोल र
चाल करयो. गोल गोल छोड करयो. इब सापलो घर कां हूं मिल रूक कर पाछो
चालबा लाग्यो तो बीं कै सै कणां आगै फिर गया. हर तूं आवतो पाछो
ही पूछो कठै चाल्यो. जद जो बोल्यो कै भई मनैं एक साहूकार मोल ले
राख्यो है. सो मैं बीं हूं कोल वचन कर कर आयो हूं. सो वचनां को बान्धोड़ो
हूं. तो कै कोई गोल रह भी सकै है के? कै और तो कोई भी रहबां को उपाव
कोनी. पण हां एक उपाव है: कै जो के है? कै बीं साहूकार कै बेटै
नै मेरै बदलै में कोई इसी चीज दी जाय कै बो बो कस राजी हो ज्याय. तो
कै ठीक है बीं नै इसी की इसी ही चीज देस्यां. तो बीं कै बाप कै कनै एक
एक गादू की डब्बी ही. बीं में यो गुण हो कै बीं नै खोल कर जो कोई
बात कहदे बा ही बात बैं की बैं घड़ी पूरी हो ज्याय. तो कै ठीक है जद
मैं थारै कनै रह ज्याऊंगो पण बो बायर खड़्यो है सो बीं नै अठै बुला
कर ल्याऊं हूं. थे कोई फूंकार मत मार देयो. नहीं तो गजब कर देवोगा. कै
कोनी मारां थे कोई बात को सोच मत करो. हर इब बो साहूकार कै बेटै
नै बुलाबा नै बग्गी कै बायर गयो. आगै जाय कर देखै तो साहूकार
को बेटो बग्गी कै बायर बैठो बैठो बाट देखै है. कनै साप नै गयो
देख कर कयो कै अरे भायला! आय गयो. कै हां भायला आय गयो.
तो कै भली करी पण बार घणी लगाई. कै बार के लगाई मनैं तो घर का
रोक लियो हर पाछो भी को नी आंवण देवै हा पण मैं तो निठ आयो
हूं. तो कै कोई और भी घर कां हूं मिल लियो. पण और कह बातां कै
बात के कहूं जे थे मनैं अठै छोड देवो तो मैं थांनै मेरै बदलै एक
जादू की डब्बी दिवा देवूं. कै बीं में के गुण है? कै बीं में यो गुण है
हर जो कोई बीं नै खोल जो बात बीं नै ओढावै बा ही बात
बा गादू की डब्बी पूरी कर देवै. तो कै ठीक है. जे थे मनैं इसी डब्बी
दिवा देस्यो तो मैं राजी हर मेरो राम राजी. तो कै इसी की इसी ल्यो. हर
थे मेरै साथ मेरी लैर लैर बग्गी में चाल्या आवो. तो कै भई बठै तो साप
ही साप मिलैगा सो मेरो चालबो ठीक कोनी. कै थे कई की सोच मत करो

तो सारै सैहरां नी करी. चौवटैं में हवाई फूट गई हन फलाँणी सेठ घर कोई आदो आ गयो. सेठ सारै चौवटैं मरजाँण हुवा. सैहर में हुग गयो हर लाज लेठ सेठ साहूकार हर राजा मरूजा छाखिया करै लागा. छाप छाप डोलैं लागैं. हजरी बजावैं लागा. एक दिन कँवर सिकार खेलण जंगल में गयो तो बठै उँण एक हिरण देख्यो. हिरण कै लारै कँवर घोड़ो लगा दियो. तो बो चालतो भाजतो कई गोजन दूर चल्यो गयो. बठै दिन छिप गयो हर कँवर एक नगरी में बासेरो माल्यो. बठैं साँझ रै पहर राजा हलकारो साथ लेकर नीसर्यो. सांगै राजा की बाई जी री मोऽबार बाईं री सूरत देख कर पितलाय गयो. उँण रात रात तो बठै काडी. कदूं खायो पीयो. कदू कोनी खायो पीयो. हर दिन उगे घोड़ै पर चढी लागी. सो चार कूँचाँ चार मजलाँ भाजतो भाजतो बो घर आयो. घर मा बापाँ कयो कै बेटा रात कठै काढी? म्हे तो भारी बाट जोत उडीकी. तो कँवर लैर की सगरी बात माण्ड कर अरज करी हर फेर या कही हन फलाँणी नगरी कै राजा की बाई मोत सरूप है. सो जै बा ब्याऊँ तो जलम पाऊँ. तो कै ठीक है. पण बेटा आपाँ बाणियाँ हाँ. आपणै घर राजा की बाई कोनी खटावै. जै थे कहो तो थाँनै बाणियैं की बेटी छैल कोनी होय ब्या देऊँ. पण या मतना ब्यावै. पण कँवर हट पकड़ लियो. तो सेठ सेठाँणी तो या बात देख कर दिसावर चल्या गया हर कँवर गैल नै छोड़ दियो. तो कँवर के करी हन उँण डाबी नै खोल कर कही हन फलाँणी नगरी कै राजा री बाई बेगी मेरै पास आवै. तो बा म्हारबी पासै आ खड़ी हुई. कँवर राजकँवरी साथ ब्या कर लियो हर बठै मोजाँ माणी. एक दिन कँवर रंग गुजरान कर हर राजकँवरी नै साथ लियाय कर बो जंगल में सैल करण नीसर्यो हर उन्नै बीं राजकुँवारी को बाप देस देस में दूती भेजी. सो एक दूती ढूँढती भालती बठै आय पूँची हर कँवरी पिछाण लीनी. तो उँण कुँईकरी हन बीं नगरी माँलै डेरा डाल दिया हर मोको देखण लागी. तो तकतां तकतां एक दिन दाव लाग गयो सो झट भीतर जाय कर राम राम करी हन बेटा मैं तो थारी माँवली हूँ थारै मिलण खातर मैं अठै चाली आई. थाँ नै छोटी थकी नै देखी ही जि थे तो म्हानै कोनी पिछाणो पण मैं थाँनै पिछाणूँ हूँ. हर इण भाँत प्रेम लगा कर आप बठै पगड़ी जमा लीनी. सो मोको देख कर म्हैल में आवै हर मीठी मीठी बात बणा कर कँवर आगै पैलाँ पूछी चाली जाय. सो कुँवर

करतॉं कई दिन बीत गया. बा कँवरी नैं चोवस भुलालीनी. बा नैठे
आवै अठै तो कँवरी बैठे हर बा नैठे हूँ जावै जठै हूँ बा कँवरी रैठे हूँ
भाँत कँवरी पर चोकस घोत सीजी फेर लीनी. एक दिन बा कँवरीनैं कही
हम थे थारी इतरी जान गाल हर प्रेम फलता खड़ी रेहे हैं या कठै हूँ
आवै हैं. तो उँण भोली गोलप करी हर म्हारा गोद जीं नें दे दियो हम
मेरै थाणी करनै एक इती डाबी है सो ऊँ नैं खोल कर जो आदमी माँगै
सो ही आ कर हाजर हो ज्यावै. तो कही कै बा डाबी कीं कै पास है.
कही कै बा तो म्हारै आँ कै पास ही है. तो कही कै बावली एक बार तो बा
म्हानैं बी दिखाय. कही क्यॉंणू बा डाबी तो बैठाई नैं बी कोनी दिखावै. तो
कही कै जै बै थारै हूँ बी छिपा कर राखै है ! तो कही कै फेर थारो बाँ
कॉंई मान राख्यो ? मोरचार लगाई को कॉंई साख करतो. ? थे कॉंई घर
की मालकण हुई ? एक काम करो हम आज थे ओजूँ बाँ हूँ बा डाबी
माँगो. जै बै थॉंनैं दे देसी तो स तो थारै हूँ बै इवाचारी कोनी रावै
हर जैं थॉंनैं नट ज्यासी तो थे या समज लेवो हम थारै हूँ बै फेर
पाप राखै है. तो कही कै ठीक है. हर उँण बीं को चोवस बात भरदियो
साँज कै जर बो साहूकार को बेटो घर आयो हर भोजिन कर कर म्हैलाँ
पधारयो तो बा पगचंपी करण नै हिजूर आई. पगचंपी करती करती कही
कै म्हानैं आज थारी डाबी बकसावो. तो उँण जाब दीन्यूँ हम थे लुगाई
की जात हो सो थे डाबी मत माँगो. तो कही कै मन्नै डाबी न देवो तो फेर
कूँण नै डाबी देस्यो ? मन्नै छोड कर थारै और दूसरो प्यारो कूँण है ? तो
थे मन्नै डाबी कोनी देवो. हर उँण हठ पकड़ लियो. साहूकार भोत कही हम
थे हठ मत पकडो नहीं तो पिसतावोगी. पण बा लुगाई की जात ही तो
कही कोनी मानी. नेठ नैं साहूकार कै हार मान कर हर झाल मार कर
बा डाबी बीं नै देदी. हर पा कही कै डाबी लेली सो तो ठीक करी पण
थे तिरिया की जात हो सो ईं नैं हथ सार राखिया. हथ हूँ उतार
मत दिया. नहीं तो भोत पिसतावोगी. तो कही कै ठीक राखसूँ. आप
जा म्हारो अन्देसो राखो. दूसरै दिन साहूकार तो जंगल में चल्यो गयो हर
लेर हूँ बा दूती आई. हम थे बा डाबी मन्नैं दिखावो. तो झट बा डाबी
ल्या कर उँण दूती नै देदी. दूती डाबी खोल कर बोली हम या फेर जोवाँ
ल्याय. हर बा फेर झट देसी बिलाय गई. फेर बा रोव कर बोली हम मेरो

कमठाण की बिलाय ग्याय. हर बो कमठाण की बिलाय गयो. फेर बा कई
रस इब बैच्यो खुच्यो सामूँ की बिला ग्याय. तो बठै जितरी चीज बासतई
बै सै बिलाय गई. इब उँण कँई करी कै बा डाकी तो कठी करी हर बोली
कै च्यार सिपाई हर एक रथ लावै. तो झट च्यार सिपाई हर एक रथ आय
ऊबो हयो. हर बा बाँ नै बोली हम ईं का बूकिया बाँध कर मेरै रथ में
पटक देवो. हर झट बीं का बूकिया बाँध कर रथ में गेर दीनी. हर बा
बठै हुँ भीर पड़ी. गेलै में एक दूसरै देस को राजा को कँवर ग्यो सिकार
आयो हुँ बाँ नै फेर गयो. हर उँण डूती नै सारी बात बूजी हम थे कुँण
हो? कठै हुँ आई हो? थाँ रथ में ओ कुँण है? तो उँण डूती सारी बात
मॉड कर कह दीनी. जीं पर राज कुमार कही हम थे या राज कँवरी जे
म्हाँनै बकसा देवो तो थे कोड हो हर कोड करूँ. तो कही कै ठीक है. तो कही
कै लियावो थारो रथ म्हारै घोड़ै कै लार. हर डूती आप को रथ बीं लार
टेक दियो. तो चालताँ चालताँ बै आप का राज कँवर कै नगर में गया
बठै डेरा डाल दिया. पण कँवरी या हठ पकड़ लियो हस में तो पुरसाँ
म्हैल में नहीं आऊँ. म्हारै कई नयो इकरँगियो म्हैल चिणावो. तो म्है
इकरँगियो बणानूँ झसरू हुयो हर इन्नै सफकार जद जंगल हुँ पाछो मुड़
कर घर आयो तो कै देखै है हम बठै तो कयूँ न काँई. बठै तो काग उडै
हर कुता घुसै. न फौज पलटण न म्हैल मालिया न राज कँवरी हरन
कयूँ न काँई. एक काल नाग बैठ्यो. दूसरी मिनड़ी बैठी हर तीसरी काँनै
सूवो बैठ्यो. तो कँवर बाँ कै पास आय कर कही हम यो काँई हुयो? साभोत
चिंता करी पण कालनाग कयूँ चीर धोबना कन्हाई हम थे कोई की
बात काँनी हुँ चिन्त्या फिकर मत करो. हर उँण सारी बात मॉड कर कही
हम यो काम एक डूती को है ज्यो राज कँवरी नै भुलाय कर ले गई.
बा कई दिन रोय गया और म्हैलाँ में आया जाया करती हर बीं को
सारो काम करचो है. पण थे कोई सोच मत करो. इब कँवर काल
नाग, मिनड़ी हर सूवै की चोदर जुड़ी हम काँई करणूँ चाये. तो सूवै
कही कै मैं पैलाँ सिन्तर में जास्यूँ. म्हारी उर का भोत सा सूवा-सूई छै सो
बाँ नै या खबर देकर चारूँ मेर भेजस्यूँ हर मैं बी दिन रात उणा मह
कर बेरो लगास्यूँ. तो कै ठीक है पण थे पाछा कितरै दिनाँ में आस्यो
तो कै साथ म्हाँ नै छै मास की म्हालत बकसावो. जै मैं जीवतो रयो

तो छौड़ै मैंनै लागतां ही आप रै पाखै पूगो आयो। ईंस्यूं हरजै
कठै बाज मुरारै कै पांखूं चड़ग्या हर मारचा गया तो थारी पाखैं को
पूग सकूंगो नी। सो छुटो मौत लोपतां हीं ये या समझ लेवो
के सूवटा मारया गया हर फेर ये थारा काम लेतो पड़ नटू करदेसा
हर म्हारी बात मत देखज्यो तो कै ठीक है। हर यो बोल करर कर
सूवो बठै हूं उड्यो। सो उड़तो उड़तो रूंखड़ बोजां में लुकतो छिपतो
आप की जलम भोम में आयो। बठै की का मां बाप काका ताऊ
भाई भतीजा अर साथी संगातिया मिल्या। बै कई दिन के बिछड़े सूवे
नै देख कर मोत हरख मनायो, घणां लाड चाव कया अर भांत भांत
की चीजां खुवाई प्याई। रात नै आप आप का ठा ठर हर हर का लाई लागता
से बठै भेला हुया हर सूवै नै सारी दुख सुख की बात पूछी हो ये
इतरै दिन कठै रया? कांई खायो? कांई पीयो? के के दुख भोग्या?
हर इब कैयां छूट कर आया तो सारी बात मांड कर समझावो तो सूवो बोल्यो हूं
सारी बात बताई हर कयो के म्हारो कंवर मोत भलो है अर म्हारै सागै मोत
चोखो सलूक रांखै है सो बो ई बखत ओखी में है सो मैं बां की खातर
थारै हूं मदद मागबा नै आयो हूं। जे थे म्हारी मन चायी मदद करस्यो
तो तो म्हानै अठै राखो हर नै थारै हूं म्हारी मदद न हो सकै तो म्हानै
बा कहो जीं सूं आगलै ठाकैं पूंच कर कोई दूसरी उपाय लड़ावूं। जद तक
म्हारो मालक को पून पाछो सलो न करूं तब तक मैं थारी पाखै कोनी
ठैर सकूं। तो सब सुवा सूई त्यार हुया कै म्हारो सारू काम खातर म्हे त्यार
छां। ओ अबकी बार छै। जद सूवै सारी बात बताई कै ई भांत म्हारै
मालकण नै कूड़ी हर कर ले गई हर म्हारै मालिक नै धोखो दियो गयो।
म्हारी मालकण को ओ रूप, जे अंजाण सैंजाण है सो ये त्यार सौ देस
में उडर मारो हर घर घर छाण नाखो। हर मैं भी उड़ता फिरस्यूं
सईं सांझ का आपां त्यार अठै ही भेला हो स्यां अर दिन बीती बातां
बतलास्यां। तो कै ठीक कही। हर ईं भांत सारा जणा रात रात तो बासेरा में
रया हर दिनगे च्यारस्यूं फेर उड़ा मारी सो सौ सौ कोस की गिरदवां में घर
घर छाण गेरया। उननै बा साऊकारणी के करी कै यो नेम ले लियो हर मेरै
खातर नयो मैहल तैयार होय तो मैं बी मैहल में पग मेलूं पुराणों मैहल
में पांव धरूं नहीं। हर जे म्हारै हूं जोरी करी गई तो मैं कटार खाय मर

जाऊँगी। तो बो राजा को कँवर कँवरी है बै मुलक बक डाबी की बिना
मदत है आप को नयो महल मन चायो बणवा लाग्यो। हर डाबी नैं इली
काडी करली। उण के करी के एक पेड की जड में गेंरो खाड। खाड़ करा'र
हंडी में ढक कर गाड दीनी हर यो भेद कोई नैं भी कोनी दियो। उनै बा
राजकुमारी पांचा सेर मुंगी मर मर कर मोठ सुवाँ नैं सतारे नाखै हर पाँचा
सेर मोठाँ की मीठी दाल रांध के। सो अणगिणत पंछी पौबर बठै चुगाचुगी
हो पाणी का कुंड भरा दिया सो बाँ में पाणी पीवै हर किलोल करै। ईं
भांत यो आणगर बणा राख्यो। सो बै सुवा भी उडता फिरता बठैई ना पूंच्या
हर बा जद मोठ नाखबा आई तो झट सुवैं की निजर राजकुमारी पर हर राज
कुमारी की निजर सुवैं पर पड़ी। सुवै नैं देख कर बा हसर हसर रोबा लागी
हर मैं कठै ही ओर कठै चाली आई? तो सुवै बोली कै तू क्यूँ रै मत। धीरज कर
मैं पूछतो पाछो राजकुमार थाँने छुडा कर ले चालसी। पण यो मनैं या बताई
कै बा डाबी कठै है? बी बिना काम पेत पड़े नहीं। तो कै बा डाबी कठै
है'र कठै नहीं ईं बात को म्हानै बेरो नहीं। बा डाबी तो ईं इली राण्ड कै
पाछै है। ईं बी नैं कठै लहकोराखी है। तो कै ठीक है। थे मन में धीरज
राखज्यो मैं पाछो जाय कर थानैं छुडाबा को सगरो काम करूँ हूँ हर या
कैय कर सुवो पाछो उड्यो। सो ठठ राजकुमार कै पासै आयो। बठै राजकुमार
आन मिनड़ी बैठ्या बैठ्या उडीकै छा। आप कर झट बाँ नैं इवा सलाम
करी हर सारो भेद माँड कर बतायो। इब बा डाबी कैयाँ मिलै ईं को उपाव
बै तीनूं बैठ कर सोचबा लाग्या। जद मिनड़ी कही कै हे राजकुमार मैं भांत
भांत चून चुन खायो है सो इब कालै यो काम पारो मैं लास्यूँ तो
कै भोत ठीक है। हर इब मिनड़ी बाँ नैं सलाम कर कर हर छै मासकी
कोल ठहर कर भीर पड़ी हर ये छै मास ताणी मनैं उडीकी। हर
बा पाछै चाली चाली चाली ठठ बीं गाँव में पूगी जठै बा राजकुमारी
कैद ही। बठै जा कर मिनड़ी कै करी कै एक मूसा के बिल कै आगै जा कर
लोटगी हर दड़ खींचगी। मूसा आवै हर आप आप कर देख देख जावै
छेलै बाँ या देख ली कै या तो मरी पड़ी है सो ईं हूँ डर नैं करबा की कोई
जरूरत कोनी। हर बाँ बिल कै भीतर आप कै राजा नैं भी जा कर या बा
कही कै आपणै बिल कै आगै एक मिनड़ी मरी पड़ी ही है। तो बो राजा कहै
कै चालो मैं भी देख कर आऊँ देखाँ किसीक है हर कठै मरी पड़ी है।

जद बा बो मिनड़ी नै देखण आयो। मिनड़ी बिल कै आगै पड़ी रहती। तो
चूहां कै राजा सोच्यो कै इब बठै टोली पकड़ण को हालो न को चालो। जद
बो जद्यां और सांकड़ै आयो हर फेर गैरी निजर पसार कर बी नै देखी पकड़ण
जैंया की बैठी पड़ी रही। चूहराज कै मन में कई और विश्वास आयो र
बो बिलकुल सांकड़ै आ कर बैठ गयो। फेर थोड़ी देर तो बैठ्यो रह्यो र फेर
बी कै ऊपर आ चढ़्यो। हर ई की नाक, कान, मूं, पूंछ, पंजा तक आछ्यां
देखण लाग्यो। सो बो मिनड़ी कै छाती पर आ चढ़्यो। मिनड़ी तो गुमसुम
मुर्दा। जद बो कान नाक देखण लाग्यो तो मिनड़ी झट बीं नै आप कै पंजै
कै नीचै दाब लियो र चूहराज नै पकड़ लियो। बो मौत नजदीक करी पण
अब बीं नै कुण छोड़ै हो। पकड़ कर ठाडो कर लियो। तो चूहराज बोल्यो,
कै हे मिनड़ी मनै छोड़ दे। मैं तू जितरा पांवड़ा भरसी उतरा पांवड़ा भर
देस्यूं। जितरा कर काम चालो बी बात रा खबर सुणी हर राजा नै मिनड़ी
पकड़ लियो तो भाग भाग आया हर मिनड़ी नै कैवण लाग्या कै तू
म्हारै राजा नै छोड़ दे र एक राजा कै बदलै दो चार मोटै हूं मोटा देख
कर थारै खाणा भरै म्हारै मां हूं चोखा चोखा छांट ले। तो मिनड़ी बोली
कै मैं थारै राजा नै कोनी छोड़ूं। जीवतो ही मारूंगी। हर जे थे छुड़ाणो
चावो तो म्हारो एक काम कर कर देवो। तो बै चूहा बोल्या कै थारो एक
काम नहीं पांच काम कर देस्यां। म्हानै बतावो बो कुण सो काम है। पण
म्हारै राजा नै तातो ई बी न आवै। तो मिनड़ी कही कै राजा रो फिकर
मत करो बीं नै मैं राजी राखस्यूं। हर म्हारो काम यो है कै ई गांव में एक
डूमती है। बा पत्यां घर में रवै है। बीं कै पास एक डाबी है और बीं कर
मैं मैं औनाणा सैनाणा है। सो बा डाबी म्हारै पांगै बेगी आवै। तो कही कै
इब लेवो। हर बै चूहा भर देगी एक भाजतो दौड़ भाज्या र दौड़ भाजता च्यार
भाज्या। सो सारा डार की डार बीं डूमती कै घर में घुस गया र बीं डाबी नै
देखण लाग्या। बां घर की एक एक बानत भाली, सारी हांडी बासणां नै टटोल्या
सारी बुगची बोजल्यां कै भाड़ो ले लियो, सगली धरती नै टल मल गेरी पण
डाबी कोनी पायी। सारा चूहा निरासा मनखर हीमत हार गया हर डाबी पावै
नहीं। कोई बोल्यो डाबी नै और ढूंढो कोई कह्यो डाबी ई घर में कोनी कोई
दूसरी जगां है। कोई कह्यो कै डाबी कोनी मिनड़ी झूठ बोलै है। बीं रै मन
राजा पर घात है। औंयां बै बैठ्या बात चीत करै हा और उदास होरया हा

आतैं में एक बूडो ओड़ चूसो आयो'र आकर बाँ नै बूझबा लाग्यो, इसं यूं
आज क्यूं हूंडता डोलो हो। तो बाँ कही के बूडा ! के बताबाँ ? बताबता भी
केवतो। जे जूवाँता हूँ ही काम पेम न पड़ेगो तो किसो थाँ हूं पेमथोड़ो ही
पड़ै है। तो कही के सो तो ठीक है पण बतावणूं तो चाये। जद बाँ सगळी बात
माँड कर अरज करी। जद बो बूडो चूसो बोल्यो के जदी तो थाँनै मैं बता
देसूं पण बा थाँरै हूं निकळती होसी है। आ सुण कर सारै चूसाँ रै जी में जी
आय गया इस म्हाँनै एक बार बैरो पड़णूं चाये फेर बा न निकळसकै तो
बीं बात की म्हाँरै चोखो नहीं। जद बो बूडो चूसो बोल्यो के बीं इती के
घर कै धौड़ै एक सूको खोखरो पीपळ को पेड़ है। बीं के बतै ही मेरो
बिल हो। सो मैं एक दिन सांझ नै चुगो पाणी करबा नै बिल कै बारर आयो'र
तो रात नै अखंड अंधेरी रात कै टमल में बा इती एक लोके बलरण में डाल
नै केळ कर बीं पेड़ की जड़ में गाडै ही। बीं कै ऊपर सवा मण की सिलड़ी
राखी है हर च्याँरूं मेरलोह सिंघाण की मरजी कर राखी है। सो थाँरै हूं खुद
कोतो सकै। मैं बी देखबा के खातर इस रै में के मेल्यो है, मोत पच्यो, हूं पण
बाँ बी ताव केतो लाग्यो। सो जे थाँरै हूं यो काम पेम पड़ सकै तो पेमपड़
रतणी सुणताँ ही म्हूँ बूभतै दिवले में तेल घर दियो है, सारै चूसाँ रै जी में
आय गया हर बै झट भाग भाग बीं पेड़ की जड़ में जा भेळा हुया'र
इब जमी कुचरबा लाग्या। लोग कवै है कै चूसाँ नै गणेस जी को यो बरदान
दियोड़ो है इस यो पताळ नै फोड़ कर तरैं पिंयाळ जा सकै। सो थाँरै छोटी'र
हाँतरी जौ रोंकी मूठी रो ज्याय जी बठै बी बरगेला बरगेला कर नाखैगी। सो
बै गणेस जी नै सिमर कर बिलग्या तो बात की बात में सारै धरती पोची कर'र
हरलोह सिंघाण को बरको बरको कर गेस्यो, लो कै बरतण के छेकलारी छेकल
करर दिया'र बीं डाबी के लोकड़ै फेंच्या। सो झट खींच कर डाबी नै बारै ले
आया हर बीं नै गुड़कता धीसता मिनड़ी के थोरै ले जाकर नाख दी। इस या
लो थारी डाबी हर इब म्हाँरै राजा नै बरी करो। गुन्तो बकसावो। तो कै
इब म्हाँनै थारो राजा केतो राखणूं यो लो मैं छोड दियूं। बो थाँरै राजा नै
थाँरै म्हैलाँ ले ज्यावो'र लधो बधो। सो चूसा राज नै छुड़ाकर चूसाँ ता राजा होळ
थका आया कै घरनै आया'र बीं नै मिनड़ी डाबी नै पंजाँ हूं खोल कर
के म्हारै बेई बिछोणा आवै। तो झट झरण झाण करतो बिच्चो अठ कर बीं कूं
फाम उतर गयो। मिनड़ी डाबी नै दोनाँ ही बैठो पंजाँ हूं काठी जड़ कर हरै बिवाळ

में बैठगी'र बोली कै चाल है जिणांरा नठै साहूकार रो है।" इतरी सुणता ई
कर आ जिणांरा मिनड़ी नै लेकर चरण चरण होतो उड्यो तो सट साहूकार
कै कै कमरा मा उतरियो। मिनड़ी साहूकार कै नै जाकर मुजरो करर आगै
आयो हर सूवै नै राम राम। हर फेर साहूकार कै कै चित्रां कै कनै जाकर बैठगई
तो साहूकार बोल्यो'र बताओ हे मिनड़ी! थारी मन चाती बात पूरी हुई'र कैयां
हुई? तो मिनड़ी सारी बात मांड'र अरज करी हर फेर आ उणनी बात कर आप कै
निजर कर दीनी। कँवर उणनी पा'र भौत राजी हुयो। हर उजड़यो घर फेर बस
गयो। मिनड़ी नै भौत भौत स्याबासी दीनी। हर आप कै गोदी में बैठा'र लाड चाव
करयो। हथेली में ले कर दूध-बतासो पायो'र कही कै थे कोड हौर भौत कोड समजूं
हर फेर उणनी खोल कर कँवर कही हम साहूकार री नर म्हारै कनै आवै हरणा
नर कँवर कै कनै आ खड़ी हुई। फेर कँवर कही हम बा दूती भी म्हारै मुंडै आवै
तो नर बा दूती भी आ कर साहूकार कै सामनै ऊबी हो गई। फेर साहूकार री
हम एक बादल म्हैल ओठै घर घर कै चूनै पाथर रो बण जावै
नर जितो वो किलो चकचक ओठै खड़ो हो गयो जाँ री चोटी में आतीजाती
बादली उलझै। हर फेर कही हम ईं म्हैल में अटकी हूं अटकी सांजत सजै। तो नर
अटकी हूं अटकी सांजत सज गई। फेर कँवर कही हम इब च्यारूं मेर बाईसी खाज
खड़ी हो ज्याय। तो बैतो पांच पांच दिन बाईसी फेर खड़ी हो गई। हर खड़ाड़ड़
हबड़ड़ पैरो लांगा लागा। फेर कँवर कही हम ओठै चोपड़ कै बजार तो सहर खड़ो
होय, बाग बगीचा हुय, जिकां मैं मरी हरी हरचां हुय, पिरजा राजमाल
होय, कुवा बावड़ी उजलता हुं, गाय भैंस दुहां ओमरती हुय, ऊंट घोड़ियासा
जगां की जगां दुणकता हुय। हाथी झूमता हुय। चाँदी पीसती हुय। खड़चाता
उधरता होय। केरड़ा रमता हुय। पणियारी नीर भरती हुय। रातिय गेर खेलता हुय।
सारी बातां जगां की जगां हुय हरया नगरी जोधा नी कै गोड़ै लगै। तो सारी
बात वही बैयां ही ऑयचै ठॉयचै हो गई'र सारी नगरी जगमगार करै लागी।
हब कँवर कँवराणी हरची चढ़ कर सैहर में नीसरया। सारी नगरी री दैव माल करी हो
कोई दुखी तो न हैके। पण कोई भी दुख्यारी बठै कोनी पायो। सारी बात रो सुख
चैन हो। तो सारी पिरजा कँवर कँवराणी का दरसण करया हर सीस झुकाय की
मुजरा करया आन नम्या। ईं भांत पिरजा रैतो हस पे म्हारा राजा राणी है और
राजा रैसी। हर पा म्हारी पिरजा है। फेर पछै फिर वा दूती नै गलालिये में गड़वा दी
हर आता जाता भी कै ठोकर मारै, सूवै मिनड़ी नै छोड़ दिया हर वै दोनूं सुख सू रया, सुख सू रया।

नाट - बुध राम स्वामी, [illegible] से आयु.

दो भाण ही। एक को नाँव हो हळदी र एक को नाँव हो मिरच। बै दोनूं एक घर में ही आर्ती ही र एक घर में ही बास्ती ही। एक ही उमर की ही। बै दोनूं साथ साथ रैती। जठै मिरच जाती बठै हळदी बी जाती र जठै हळदी जाती बठै मिरच जरूर जाती। इसो कोई बगत कोयल ही मोको पड़तो हुतो कै ज्याती न्यारी होज्याँता र जठै एक पूगै बठै दूसरी न जा सकै। बै दोन्यू ही मोत सोवणी ही र रूप ही रूपाळी ही। आँ कै रूप की सोभा बखाणी जाय। आँ नै जाणी बैठी ही मात। घड़ी ही। एक दिन हळदी बोली है भाण, मिरच मिरच। मैं तो नानेरै जास्यूं। तो कै जा। मैं तो नानेरै कै जातै ही को लगाऊं न। तूं जा नानेरै नै र नानेरो खावो तन। मिरच को सुभाव अति आकरो हो। हळदी को सुभाव अति नरम। तो हळदी आप की मा नै कयो कै मा मैं तो मेरे नानेरै जास्यूं तड़कै सो तूं मनै एक चूरमै को पीड़ियो चूर र मेरे पल्लै बाँध दे इत मैं गेलै मैं भूख न मरूं। तो कै ठीक है। तूं तेरी नानी मास्यां हूं मिल आ घई रोटियाँ खाय, गोरी भाटी हयार, चूनड़ियाँ ओढ़या। तो दूसरै दिन दिनगे पैलाँ चूरमै को पीड़ियो पल्लै बंध र नानी कै चाल पड़ी। तो चालतां चालतां कई देर हो गई। तो आगै सी बीं नै एक झाड़ी को घर आयो। तो हळदी कै पगाँ को खुड़को सुण र हळदी नै झाड़ी हेलो मार्यो। कै मेरी बाड़ तळै र कुण जायरै ए? जद हळदी हेत सूं जवाब दीन्यूं हंस "मैं हूं ऐ भाण, हळदी हूं।" जद झाड़ी कयो कै मेरै तळै काँटा बिखर रया है सो तूं भार झाड़ र काँटा परै गेरती जाये। तो बड़ी हत भैर जास्यूं भई मेरो काम राती को नै घरो। र उणा कै सारा काँटा भाग झाड़ र दूर गेर दिया र फेर आप कै गेलै पड़ी। जद वा थोड़ी सी दूर पूँची तो बीं कै गेलै मैं एक भट्टी को घर आयो। हळदी कै पगाँ को खुड़को सुण र हळदी नै भट्टी हेलो मार्यो हत "मेरी बाड़ तळै कर कुण जायरै ए?" जद हळदी जवाब दीन्यूं हत "मैं हूं ऐ भाण, हळदी हूं।" तो बड़ी हत भै भाण। मेरी राख र कोयला छाँटती जाये। तो बड़ी हत भाण छाँट देस्यूं। मेरो काम राती को थोड़ो हुय? [illegible] हथ पग काम करवा खातर ही दिया है। र उणा भट्टी की राख कोयला छाँट कर दूर गेर दिया र आप भार झाड़ की र साफ कर कर आप कै गेलै भैर पड़ी। बीं नै चालतां चालतां कई देर हो गई तो एक नदी को घर आयो। नदी आप कै घर मैं सूती पड़ी ही। सो बीं जद गेलै जाती हळदी कै पगाँ को खुड़को सुण्यो तो बीं हेलो दियो हत कुण जाय है ये? या मेरी बाड़ तळै कर ये! जद नदी को हेलो सुण र उणा

आज दीन्यूँ इंत में हूँ थे भाण, हल्दी थे। तो हें मेरे कनारे पर सिंवाल जिम रया है सो बाँ नै दूर करती जावे। तो कही हत भाण, बात म्हारी बाई माणक मोती होया हैं। राम जी इबर पण बाग करणो नै ही दियो है। सो उण नंदी पर जाए सिंवाल गा काई ना दूर धीकरियो हर कनारे नै चोखा इंतर रो साफ कर दियो। जल वा नंदी री ओडापोड़ी बात कर री फेर आप के गेले मोर पड़ी। जद वा थोड़ी आगै ही गयी तो बी हें आगै एक बाड़ दोबार आयो। वा आप के घर में रहती पड़ी ही। जो गह उण हल्दी के पगाँ पर रड़क्यो जण। तो उण हेलो मार्यो "या मेरी बाड़ तोड़ कर कुण जाय है ये?" तो हल्दी उण रो नाल दीन्यू इंत "मैं हूँ थे भाण, हल्दी थे। तो कही हत भाण मेरी बाड़ रे ऊपर जाला छाय रया है थोड़ा दूर करती जावे। इदी क्या हें भाण, करती जाऊँ। मेरो के जावे है? राम करती राखेला इबर दूर है। राम जी इबर पण काम करबा नै ही दिया रख्या हैं। हर वा गट बाड़ री जालो उतारबा लाग गई। सो थोड़ी देर में सारो जालो उतार कर दूर गेरकर नकी हुई। हर फेर आप रे गेले मोर पड़ी। सो चालती चालती आप री नानी के पहुँची। बठे हँस हँस बाँथ्यूँ बरोबर लागी मामियाँ हूँ मिली मामाँ हूँ मिली नाना नानी हूँ मिली। भाई बहणी हूँ मिली। आडोसी पाडोसी हूँ मिली। हर फेर वा आप के नानेरे में रहबा लागी। जितरै दिनाँ वा नानी के रही उतरै दिनाँ तै वा काम काज भाज भाज करिया। सै हूँ हँस हँस बोली। कोई हूँ भी मूँ मैलो मोती बोया। कोई काम लाग माथे तल मोती घाली। कोई रो भी कपड़ो धोती गोबर बा नानेरे में तड़ौ दिन भाग भाग काम करती। कदे भी रोती आप कती। बा काम करती रहती आपतीही रोती। नाना नानी के वा मन लाग गई। मामा मामियाँ की वा लाडली बण गई। आडोसी पाडोसी नै भी वा चोखी लागी लागी यूँ रहताँ रहताँ कई दिन हो गया। तो एक दिन वा बोली कै भाई मनै अठै आयाँ मोत दिन बहीत हो गया। मेरी मा याद करती होसी। भाण मिय उडीकती होसी। सो मैं तो इब मेरे घरै पूठी जास्यूँ। तो नाने नानी भी मोत रोकी हत रे छोरी इ लाडी थोड़ै दिन तो और अठै ही रैवो। पण बा तो बोली कै भाई नाना। भाई नानी! अब एक बर तो मनै म्हारै घरै जाबा देवो। हर फेरूँ थे कहस्यो तो मैं फेरूँ आऊँ पूठी आ ज्यासूँ। नाना-नानी घणूँ गल घाल्यो, हत बैयो गैयो छोरी इत दिन म्हारै पासै और रैर जाय। पण हल्दी नै बठै गयाँ घणा दिन हो गया हर सो वा एक बर तो पाछी

आवणूं ही चावै ही। जद नानै-नानी बीं नै मोकळो रिपियो पीसो हर गाबा लत्ता देयो। ढांढा ढोर रा रखाळी रखा भीर करी। मांमो-मामियां सूं मिळी जद वां भी कही हक हलदी बाई! थे तूं आई रे ने तूं चाली? म्हारी तो तनै देख्यो। रात भागो सो थोड़ै दिन ओर ठेर। पण हलदी बोली कै म्हनै आयां नै दिन हो गया। मां जावै ओकली है। बीं रै काम काज री सारी बातां री जड़ रही हुसी। तो एक बर तो म्हनै थे जाबा ही देवो हर जे थे कैसो तो मैं पूठी फिर कर ओजूं आ जास्यूं तो कही कै बाई थारी खुसी रही। थारै जच्चें सोथे थारो थोतो देव कर ले जावो ओ घर थाँरो थारे सूं आगो। थारै जच्चें जिकी बात लेवो हर जच्चें जिकी छोड़ो। ओ तारो घर थारो है। अठै थारो हाथ पकड़बा वाळो कोई नहीं है। सो हलदी तो वटी गई हर मामे मामियां घणूं मन चायो रिपिया पीसा हर गाबा लत्ता दीन्या हर फेर बा आड़ोसी पाड़ोसी सूं मिली तो वां बी मात करी हक हे हलदी! तूं इतणी बेगी आई हर इतणी बेगी चाली सो थारी या बात म्हारै तो चोखी नहीं लागै। बावली थोड़ै घणै दिन तो और ठैरी होती। पण हलदी कही हक ई मोहर तो म्हानै थे जाबा ही देवो हर जे थारो ही जच गई तो मैं ओजूं पूठी फिर कर थारै पासै आ जास्यूं। ई भात बा बां नै भुळाय चपळाय कर हर लटकता कर लटकता ही छोड़ र पाछी घर नै मोकळा रिपिया पीसा गाबा लत्ता हर मन चायी मोंत मोंत री चीज बात लेकर भीर पड़ी। आगै नी आई जद बीं नै गेलै में बाड़ रो घर आयो। बाड़ आपके घर में सूती पड़ी ही। सो बा गेलै बगती हलदी रा पग बाजता सुण कर बोली कै "मेरी बाड़ तळै कर कुण जाय है ये!" जद हलदी ऐलो मारयो हक मैं हूं ये माण, हलदी ये।" तो कै मेरे घर री बाड़ पर मोत मोता थे चूनड़ियारे लीरिया सूके हीं सो थांनै निजर चावे उतार उतार कर ले जावो। तो कै माण मैं तो मेरे नानेरे सूं ही घणूं ही लियायी सो म्हनै तो थारा लीरिया कोनी चायै। ना कै माण, एक आधो तो म्हारै हाथ रो बी ले जाणूं ही पड़सी। सो बाड़ हठ पकड़ लियो। जद हलदी नै बी ओड़ालणां ही पड़्या। हर बा बाड़ सूं बांथूं बांथ मिल कर फेर भीर पड़ी। तो आगै गेलै में नींदी रो घर आयो। नींदी बी आप रै घर में सूती पड़ी ही सो हलदी रा पग बाजता सुण कर बा बी ऐलो मारयो हक कुण है ये बा मेरी बाड़ तळै कर जांण हाली। जद हलदी जाब दीन्यूं कै मैं हूं ये माण, हलदी ये तो हालरही म्हारो ठंडो ठंडो पाणी पीती जा। कही हक पीती जास्यूं माण। पण

मत्नैं तो घणो तिस चोनी। स्हीटस जै घणी तिस रोनी तो थोड़ो सो ही
गुरको लेलेवो पण थाँनैं पाणी तो पीवणूँ ही पड़सी सो जद हलदी थोड़ो र।
नँदी रो मोती बरगो हर ओलो सो ठंडो पाणी पी कर तिरपत हो गई हर फेर
नँदी सूँ आँधूँ आँगी मिल कर आपणै घर नैं भार पड़ी। सो चालतां र आगैसी
मड़ी की गुलाड़ी आई। जा आपणैं घर में सूती पड़ी ही सो जद हलदी बीं
घर कनो कर नीसरी तो बीं की पैड़ बाजती सुण कर हलदी नै मड़ी हेलो दियो
हस "मेरी बाड़ तेले कर कुँण जाय है ये? जद हलदी सुण कर पाछो जवाब दीनूँ
हस "मैं हूँ ये माण, हलदी ये।" तो हलदी रो नाँव सुण कर मड़ी भर
देती उठ कर बारणें आई हर हलदी रै आड़ै फिर गई हस माण, आज आज
तो तूँ म्हारै पावणी रैती जा। दिन भी छिपाण में आयो। तूँ मोत दूर सूँ चाल
थकी आई है सो आज रात तो बासो मेरै घर ही ले। पण हलदी नाकार
नट गई हस मैं मोत दिना सूँ पाछी आई हूँ सो मेरी मा हर मेरी भाण फिकर
लेर नैं बाट देखैं ही। सो आज आज तो थे म्हांनैं जाबा दो हर ओरूँ कदे
जै थे कहस्यो तो मैं आ जास्यूँ। तो स्हीटस माण थे म्हारा लाडू पेड़ा तो
ले ज्यावो। तो स्हीटस मेरै कनैं तो मोत बोज हो रियो है सो इतो बोज कैंयाँ
चालै? तो स्हीटस घणूँ नहीं तो जितरो चालै उतरो ही बोज ले ज्यावो पण
पण कँईं न कँईं लाडू पेड़ा तो ले ज्याणा ही पड़सी। तो हलदी आछ्या र लाडू पेड़ा
बाँध लिया हर फेर घर नैं भर पड़ी। सो चालती थकी चालती थकी थोड़ी दूर
गई तो आगै सी झाड़ी को घर आयो। झाड़ी आप कै घर में सुख सूँ सूती
पड़ी ही सो जद हलदी कनै कर नीसरी तो बीं का पाँव खुड़कता सुण कर झाड़
दे हेलो मार्यो हस "मेरी बाड़ तेलै कर कुँण जाय है ये? जद हलदी जाब दीन्यूँ कै
"मैं हूँ ये माण, हलदी ये!" हलदी को नाँव सुण कर झट दे झाड़ी हेलो दियो कै
ए माण, मेरा मीठा र बोरिया खाले हर रात रात मेरै घरां ही बासो बसले।
तो स्हीटस माण, मैं कई दिनाँ सूँ पाछी आई हूँ। म्हारै घरां मेरी माण फिकर
बाट देखै है सो मत्नैं ख्या चोनी नहें। हर जे थारै घणूँ मोह है तो ओरूँ कदे मैं
थारै घोरै आ जास्यूँ। तो झाड़ी थे एक दिन कोनी पाँच दिन रख लेयो पण आज
तो मत्नैं जाणा ही है। तो कै माण, मेरा पीला पीला बोरिया तो मूँठी पसो तूँ
जरूर लेती जा। स्हीटस माण, मेरै कनैं बोज मोत घणूँ हुयो रो बाज्या मरतो
को पाँव उपड़ै नहीं सो थे म्हारै पर माफी राखो हो इब ओले आसूँ जद थारा ये
सा। बेर झड़का कर लेती जास्यूँ। पण झाड़ी आड़ी फिर गई हस ओरूँ की ओरूँ

देखी जावगी। इण ओले तो थाँ नै म्हाँ रा चोर ने ज्याँ ताँ ही पड़ती होवै
नहीं मत जी। हर काड़ी को यो हठ देख कर हलदी चोखा चोखा और तोड़ खा
आप की गोद में भर लिया। हर काड़ी को हठ पूरो कर कर हर औं हू भातभांत
मिल कर आप कै घर कै गैले पड गई। हर घर कूँचाँ धरमशालाँ चालती थकी
चालती थकी सोतो पड़लो आपकै घरें पूँची। घरें जा कर आप को बुगचा खोल
खोल कर सब नै दिखायो हक मैं यो धन ले कर आई हूँ। तो हलदी को यो
माल मामलो देख कर भीतर ही भीतर जल गई हर देख हलदी तो यो इतरो सामूं
ले आई हर मैं हाथ पर हाथ धर दियाँ यूँ ही ठाली बैठी रही। पण इब और
के। तो बा जी इब आप की मा नै बोली हक मा, मा, मैं बी नानी कै जासूँ।
सो मन्नै बी चूरमैं को पीण्डियो करदे। तो कही हक बेटा! को देसूँ पण तेरो
सुभाव क्यूँ खेरो है सो तूँ हलदी की नाँई चोखी फलोपेली। तो कही माथे ई
बात को सोच मत करो मैं मेरै सुभाव नै मेरै बस में राखूँगी हर सबकै
पगाँ की खूसड़ी बणी रहूँगी। तो कई, हक बेटा! मेरै तो थारो यो बिसवास
पड़ै नहीं। पण जे थारै या हीजच गई होवै तो चली जावो। हर दूसरै दिन चूरमू
पल्लै बाँध कर मिरच बी आपकै ही आप कै नानेरै कै गैले भीरपड़ी सो
चालती थकी चालती थकी पैली पोत काड़ी कै घर कनैं पूँची। जद बा कठैकी
नीसरबा लागी तो मिरच कै पगाँ को लुड़ कर सुण कर काड़ी होलो मचायो कै मेरी बाड़
तलै कर कुण जाय है पे? काड़ी को यो होलो सुण कर मिरच बोली कै के होयो
है? गेलो के तेरै बाप को है? गेलो तो राजा जी को है। म्हारै जचै जद जावाँ हर
जचै जद आँवाँ। जद काड़ी बोली हक ये भाण बुरो क्यूँ मानै, मैं तो तन्नै सावळ
बूझूँ हूँ हक कठै हूँ आई है? कठै जाय है? के थारो नाँव है? जद मिरच
क्यूँ चीड़ी पड़ी हर बोली हक मैं तो हलदी की भाण मिरच हूँ हर मेरै नानेरै
कै जाऊँ हूँ। तो कही कै भाण मेरै तलै कांटा हर पत्ता भीत सारा मेलार
रया है सो थोड़ा आँ नै भा झाड़ कर नाकै दीकैली जा। जद मिरच बोली
कै क्यूँ? मैं तेरै बाप की नौकरणी हूँ के? तो कही कै भाण दोरो क्यूँ मानै थाने
राजी करदे। मैं तो तेरी भाण हलदी भारगी ही जणाँ तन्नै बतला लीनी। तो कै
हलदी तो सदा की बड़ी है। बा सदा ही परम्परा सट का मारती फिरै। पण मैं हलदी
सरीकी होऊँ तो मेरो घर कैयाँ चलै? मैं तो इसैरे की छाया बी को पड़ण धूँ ना।
पराये मूत को कै निवायो? तो कही हक भाण, बुरो मत मानै मैं तो भूल मोलै
थाँनै कहदियो हर कहदियो। आज आज तो थे म्हाँनै गुन्नो बकसावो हर जैं आँ

कन्हैं तो म्हौने मावै कोनै तीन तलाक।' भोलै बामण भेड खाई, फेरूँ खा तो राम दुहाई।" झाड़ी बापड़ी चुपकै सी आप कै घर में ओटी जा बड़ी। हर मिरच झाड़ी में इसी सेतलड़ी करी कै सोगन कुण खीर। हर इब बा आगै नै चाली। सो चाली चाली चाली थकी मट्टी कै घर कनै पूंची। जद बा मट्टी री बाड़ तलै कर नीसरी तो बीं कै पगाँ का खुड़का सुण कर मट्टी टेलो मार्यो, कै मेरी बाड़ तलै कर कुण जाय है ये? तो मिरच तरड़ाई में भरी बोली हर कै तेरो कंठलो तोड़ लिया? मैं तो मेरै गेलै जाऊं हूं जे तेरो कयूं उठावूं तो मेरो हाथ पकड़ लेय। तो कै माण, बुरो कयूं मानै मैं तो तन्नै सावल बूझूं हूं। कै बताणी तेरी सावल। कै ये माण, मैं तो थाँनै या बूझूं हूं हर थे कित की चाली आई हो कठै जावो हो के थारो नाँव-गाँव है? हर मई या सुण कर मिरच औरूं भूंभलाई कै ले,ले मेरो नाँव-गाँव तैं कैंयाँ बूझ्यो? कै मेरै हूं तन्नै सगपण करणूं है हर मई उल़टी अल़वाड़ मचा कर मिरच मट्टी कै गलै में घलगी। सो बापड़ी मट्टी को पिंड छुडावणूं ओखो हो गयो। बीं निठ्याँ सीक लेरो छुटायो हर भोली माण, मैं तो थाँनै या बूझूं हूं हर थे हलदी की माण किसक हो कोनी हो के? कै मैं तो बा लागण हूं। कयूं मेरो नाक कटै सो। कटले या सुण कर बा बी बापड़ी कानाँ में तेल घाल कर चुप चाप आप कै घर में जा बड़ी हर या तो बुरी बलाय आई रे बबाज। हर इब मिरच बठै हूं भरिपड़ी सो गुणगुणाट करत चाली बाड़ कै घर कनै जा पूंची। पीडा खूंसड़ा पैरयाँ खसबड़ खसबड़ करती बाड़ कै घर कनै कर नीसरी तो बीं कै पगाँ का खुड़का सुण कर बाड़ टेलो मार्यो। मेरी बाड़ तलै कर या कुण जाय है ये? हर या सुण कर भ… मिरच बापड़ी ज्यूं रंगाँ नै चिरमी दिता दीनी है। हर कै क्यो देखो बाई बात औरूं कैयै। कै ये तिरजें कयूं माण? मैं तो आयै गयै नै सहज ही बतला लियो करूं हूं यो मेरो सदा को सुभाव ही है। जद मिरच उछली कै देखो तेरो सुभाव। इसी नकल करो जे तेरो सुभाव है तो बीं नै तूं तेरै कनै ही राखो राव। खबड़दार हूं जे घणी सिर पर चढी तो लिंग तुड़ा लींगी। जद बाड़ बापड़ी नरमी खींच लीनी हर साप जोयरा सदा ही देख्या इजार देवी अब कै।' हर मिरच बैं यांही लाग… इता करसाँ जाय हर अब बोलै तो कर दियो है हर जे ओरूं या बात कर दीनी तो राण नै बालतै गैर कर बाल दूंगी। सो बापड़ी बाड़ कै जी में घणी मंडगी हर उण निठ पिंड छुडायो। हर माण मैं तेरै आगै हाथ जोडूं हूं तूं तेरै गेलै जा हर मन्नै यो गुनो बकस। जे औरूं थाँनै बतलाऊं तो मैं म्हारी पूत कमाय नै खाऊं

सो बापड़ी गाय आगा घर री हर कुओ। बापड़ी रा कैंयाँ नैनाँ मिरग नै बी दै गेलै घाल्यौ। मिरगो बड़बड़ार करती आगै नै चालती। सो बड़बड़ती जाय हर आगै आगै चालती जाय। चालताँ चालताँ थई हर थकर गई तो बी नै उथैं बा नैड़ी थी हर आँख बा बड़ बड़ बड़बड़ करती जी नै सतें रतैं री गोफरी तो बी रै पगाँ रा खुड़का सुणा रैया मिरगा नै देतो सायो। फेरी बड़ नै कुणरैया जाय है रै? हर कई अठै आ कै नाग नै छेड़ दियो है। आ सुण र मिरगो थोड़ी फिर नै आई हर बठै रै भाग गई रोग, बाड़ी बड़ी मेरी मैं खूब जिता रै? मनै गेलै बगाती नै तू कैंयाँ छेड़ी? आ सुण कर नैड़ी री बोलंड कुणा ढक भा रै पूरी बात आगा गई। पण इब तो मिरगो कै छुड़ रो पाणी गोल आँखाँ रै गयो हर। सो बा डरती डरती बोली कै हे नाग। नाराज मत ना होवे। मेरी बड़ी भीबड़ी ही, बालं ताँ भी लें बीसर गी है बोतर ज्यो। कै आँख्याँ ता नीचा कैंयाँ बोसर गी ती नै लम्हातक री खाल नहीं तो लोग खबड़ हैसी खीच री व्यालघूँ तो हाथ मैं पकड़ा दींगा ले, ले, रही तैं मनैं गेलै जाती नै कैंयाँ रोकी। अब तो मैं तेरो बचन मार गोयो, अब मैं तेरो घुत मार गोयो? तूं मनै मेरै गेलै जाती नै कैंयाँ रोकी? सांप का पाड़ करसू री जैरूंगी। नहीं तो आऊं मूं सम्हाल री बोलियो। तो बापड़ी नैड़ी नीचौं नीचौं हर ऊपर री ऊपर रैगी। हत यो तो ढांलियाँ रो छलो छोड़ दियाँ सो कैंयाँ नैनो हाथ पग तोड़ र गैल छुड़ाई। हर मिरग आँ लाताइता आती आय कै गेलै पड़ी। पण बा सारै गेलै बड़बड़ती गई। हत यो कै गेलो है बलाज। ईं गेलै तो भूल कर भी न आऊं चाये। ईं गेलै मैं तो सारी सांप बाड़ी बाड़ी, छाकरी, हैम री ताडुवाँ रबोणी भरी ही आँ रोजाँ दै शासण मैं चाले। जिकी रातैं हूं सारी उमर मैं भी बोली मिली बाँ हूं आज मड़ मोटी लेणी पड़ी। इसी रांडाँ दै तो सौ कौस परै भी जीवरै। रांड बोगली, गेलै जातां नै बांधाँ पड़ै। इसी रांडा नैं तो आदी धरती मैं गाड़ै हर आदी बारैं राखै। आतंक जातां राण्डाँ कै ठोकर मारै। आँ थो तो ओर क्यूं न थै। राण्डाँ थी तो बगताँ बूलाँ। यूं गाल काड़ती काड़ती चालती चाली चाली थकी नानेरै कै सांकड़ै पूगगी पण बाहर गई हर बी रा पग दूखै लागा। सो बा नानेरै नै गाल कोड़ै लागी हत इसै नानेरै कै तो आग लगा दे, चूंकमड़ी लगा दे, च्यारूं मेर फिरकी ऐर लागै भोंपो लगा दे सो सारो सो सारो पाटै उतर ज्याय। बालं जोगो इतरी दितरी कै दूरै ज्यो चालताँ चालताँ सारो दिन ही गयो ओ हूं भी बोली आयो। आज तो आयगी सो आयगी ओ हूं तो भूल र भी बोल आऊं हर बा एक मोटी नीचौं बैठगी। मोटी री ठंडी छाया ही सो बीं नै सुवावणी लागी हर बा आडी होरी ही तो भर सोयगी। सूती सूती नै दिन ढल ग्यो। सूरज आथण ग्यो। गाय बाछड़ी घर नै बावड़ी। अकास मैं खेचड़ी। गुवालिया गांइकै डिगरी, गांइकै नाल।" गांइके डिगरी

गोइंद नाळ वाळा घणा आप आप रै घरां नैं पाछा गया। ढोरां री धूंण आयी जद बा की नींद टूटी'र बा झट जागी। देखै तो सूरज तो छिपणोळा में गयो'र देख छिणाळ। न तो कीं हूं जाणा न कीं हूं पिछाणा। सो बा झट आंख मसळती खड़ी हुई'र ले गूंळी हाथां में नानेरै रै गेलै भर पड़ी। ज्यूं ज्यूं सूरज छिपै ज्यूं ज्यूं बा दरवाजा माथै। हम सूरज छिपै पैलां जे कैंणा ऊंमां आगलो नाको जा ल्यूं तो ठीक रहै नहीं तो म्हारी मोत लोग होसी र रात नैं रोई में एकली नैं डर लागैगा। सो बा बेबूज उडी। सो भागतां भागतां लैं रै मूं में झाग आग्या, चैरो लाल हो गयो सास पेट में नावड़ो होती'र हाथ कै काफा होठां पर फेफड़ी आगी। बीं की मोत डुरगती हुई'र बूजी मत जात। सो बीं नैं मोत झाळ आई पण गेर के चालै। नेठ नैं बा छेलै नाकै झाळ में भरी नानेरै पूंची। आगै पोळी रा कूंवाड़ जड़ग्या पड़्या हर सो। एक सागै हेलो पर हेला मचा दिया'र कुवाड़ां कै लातां पर लात मारै लागी। कै था तो खोलो'र का मैं तोड़ूं हूं बळ ज्याणां नैं। सो नानी मामियां देखो हर यो के बवाल आ पड़्यो। सो एक भाजती दोय भाजी'र दोय भाजती च्यार भाजी झट दे कूंवाड़ खोल्या'र आगै आय र देखै तो आ तो मिरच भाणती खड़ी है। जद मामियां घणी लाड चाव हूं बीं नैं भीतर घर में लेगी'र आगणैं में पाटो घाल र बठाई। मिरच सारै घर कां हूं मिली फिरी'र घर कां बी भल भल चाव राख्या। हम म्हारी भाणजी मिरचूड़ी आई। चोखो खुवायो पायो, चोखो मचलो ढाळ र सुवा दीनी'र रात नैं घर का का सार समाचार बूज्या'र हम तेरी मा राजी है न? हलदड़ी के करावै है? थारै गांवां री कियां के समाचार है? कद सीक तो तूं चाली ही? कठै कठै गेलै में ठैरी'र चढ़ी'क नहीं। गेलो तो कोई भूली नैं नी? तो मिरच आं सारी बातां रा आबळ थबळ ही जाब दीन्या'र क्यूं करड़ाबण में भरी जाब दीन्यां। तो घर कां देखी हाकर है, गेलै में हरगी होसी सो इं नैं स्यात पलक सोवण देवो। दिन गे सारी बात आराम हूं बूजस्यां। हर रव मिरच सोय गई। सो सूती सूती सवा पहर दिन चढ़े उठी। घर कां देखो थोड़ी है सो क्यूं जगावो सोवण देवो। नींद हूं धाप ज्यागी जद आप ही उठ खड़ी होसी। सो बा सवा पहर दिन चढ़े जागी। आंख मसळती गाबा लत्ता पैर कर खड़ी हुई। हाथ मूंडो धोय कुरळो फाक र लो कियो'र न्हाय धोय कर हव मामियां में आय र बैठी। बैठी गा… लेती'र न्हाणा धोणा में मिरच सब हूं चढ़ती रैती। सो मामियां कै रळै गई तो… बाजरियै की रोटी, दही की बाटको दे दियो। मिरच सबड़ सबड़ खाय कर तती ही… बा खाणा पीणा में तो कदी नैं बी ऊपर कोई आंवणा देती पण बा तो तके का… में ही गई ही। सो कळेवो कर बर झट हेलै हुई। बोई माजी दस्यो कै मिरच बाई म्हो…

मीनाक्षी नै रोटी बणा ताले तो मैं दूध आट ल्याऊँ हर कोई बोलती रह मिरच काई नै थे थोड़ी देर म्हारली छोरी नै पकड़ो तो मैं खिलौणो लाय दूँ, कोई बोलती ओ बाई मेरो बच्चो पकड़ लेवो रा, जद मैं थाँ खातर दूध काढ़ ल्याऊँ। पण मिरच नरर बेकण री। वा आप कै गालाँ कै जे कोई रवर भी लगा देतो तो बी नै घड़ी ताँणी हँसतो रहती सो शायद तो बीं नै आँख्याँ देख्या बी को सुहावतो ना। सो जद जे कोई बी नै टोकती तो बीं नै ही घणो करड़ो लागतो हर पग बाँधर कर चूलै में गेरदेतो मरोसैं शायद मामा ही दे? जे मैं शायद ही लिखाती तो ओठै जद आली मोर देख थोड़ो पड़ेगा हैं? शायद तिलगायत कर रोटी नाख देवाला मोत। भाजो ही बोली। तो मामी तो ताँई बी तेरे हर ऊपर ही ऊपर रह ज्याती। हर जे कोई बी नै तागूँ गाल देदेती तो वा मूँ सूँ गाय कर मण को कर लेती हर आँगण में जाय कर सब सूँ नीचे बैठ ज्याती। तीन तीन दिन ताँणी रोटी कोनी खाती। इसी ढुलती कै सारे घर को मन घाघतो पण वा तो कोई री बी मनाई कोनी मानती। मानती तो आप हूँ नई कोनी मानती साची आप हूँ। सारा मामी मामा निहोरा करता, सारे बाप का निहोरा करता पण वा पत्थर की हो ज्याती। किंकी बात कान में बी कोनी घोलती हर जद बीं नै भैरी भूख लागज्याती हर इब तो रोटी खासूँ बिना कोनी रैया जाय जद वा अपणें आप उठती हर ठै रसोई में जा कर रोटी खाणो ढूँढती। जद तो तो भूखी पाछी जार वा ज्याती। यूँ रातों करतो बीं नै कई दिन होग्या। नानी बी बीं नै मत समझाती हर तूँ ओड़ नारी आ के लक्खण सीख गी? तन्नै पराये घर जाणूँ है तेरी सासर वैरी नीसरैगी? पण वा तो किंह गाम दे भी कि बी को सुणती ना। आप कै मन कै मतै चालती। नानू बी मत समझातो हर काई पर्ण तू हूँणी नाड़ हो गी इब बी कोनी समझै तो कद समझैगी? बावली तेरा औं लखण आछ्या कोनी। बावलतबैड़ो नहीं करणूँ जो तूँ सदा यूँ ई करती रही तो थारै जमाई कटणूँ ओगतो है। पण वा तो बैंदी ही उइयाँ हर बैंठी ही बैंसे। मामा बी बापड़ा मत समझाता हर मिरचली थारै यो सुभाव मतिरवो है सो यो बाण छोड़ दो। थाँनै चूनड़ियो रंगवा देस्यूँ। मोचड़ी मँगवा देस्यूँ। हरथी जो जो कैस्यो सो सो बणवा देस्यूँ। पण थे यो सुभाव छोड़ देवो। मामीन मम्मा, नानी नानू नै जणाँ सीख दे हारग्या पण पत्थर पर का आतै तो बीं कै सीख लागै। साच जो कही हैं तो मूठ कोनी कही। नीम न मीठा होय सींचो चाये गुड़ अर घीव सूं जाँ को पड़यो सुभाव के जासी जीव सूँ।" चाये कोई लाख जतन कर ल्यो पण सुभा पड़याड़ो छूटै कोनी। पण इस्ली बात या है हर थोड़ै ही दिनाँ में मिरच आप कै तेज सुभाव रै कारण सैं बै जी हूँ उतरगी हर सारी तूमणा सी लागै लागगी।

सौरै घर रौ देख कर विचार करियो, हम आपकौं तो घर में गिरचली रै आई उलटो आठ पहर रो कुटियो होगो। सो ई हूँ तो मिरचली न आवती तो ही ठीक हो। पण खैर अब आप गई तो म्हूं उगत सरकै जो देखें कर ई नै ई रै घरौ ठेग सो। तो म्हीं ठीक है। तो मिरच नै एक तो घागोरियो सिमा दियो, एक लुगड़ो मामूली सो ढाँग उतारवा नै ल्या दियो हर घर एक चूरौं री पींडियो पलू बाँध रा घर नै सौंप दी। मिरच री आप री तो घूं ले र भर पड़ी, पण वीं री भी मत हरित हुयो हरा देख हलदी नै निकी बड़ रही है हर जी नै रवाणों री सूरत, पीवण री सूरत, ओढण री सूरत, पैरण री सूरत। वीं नै तो निहचल कर दीनी हर म्हनैं यो री घागरियो र ओढणियें रा घर देकर फिर आई ढाँग उतार दीनी। पण लिखेला सो पावै। साची कही है काग हैं कंकर तो दे दरे स्यो कंकर। सो आप रै करम नै दोष देती थकी रोवणूं मूं करियां चालती थकी चालती थकी नंदी रै घर कनै पूगी। तो मिरच नानै रै दामजो नै देख कर मत विरोध कियो हो र मन री मन में सोच माली ही जी हूँ वीं रै सौरै डील रै लेकवो होरियो हो र जी नै तिस लाग री ही सो नंदी रो घर देख र मिरच रैलो फाल्गो हम यो घर वीं री है ये माण। तो नंदी नाल दीनूँ हम यो तो नंदी रो घर है। तो मिरच बोली हम है माण! तिस लाग री है सो थोड़ो पाणी भी पावै गी के? जद नंदी चिंघावी हम चली जा रांड मैरे घर कनै हूँ नहीं तो रांड नै इसी लहर कुहर रा पाणी में कुहर दूंगी। मिरच बापड़ी मत ल्याल्ल बोली हम म्हनै थोड़ो सो पाणी कंठ आला करवा नै दे दे। मेरो हलक सूक गयो। र तिस मरती रै मेरे मूं में झागला आ गया। जे तूं पाणी न देगी तो मेरे हूँ घर लेणूं ओखो हो ज्यासी। पण नंदी तो एक भी रोती सुणी रै चाल रांड निकचढ़ी। तेरे ज्यार सी में दिन में पचास से साठ देखूं हूँ ये गेलै सौरै दिन र सारी रात लाग्या रहे है। सो मैं कीं की नै पाणी पावूं। हर साच बात तो या है कै थारे नाली तूं ओठी री गई ही तूं सागण वा ई ही। मैं तनै जाण पिछाण कर भाणूं हूँ सो तनै पाणी तो दे पाऊँ तेरे माँय कोई सोई इसूँ फेर खैर तेरे गेल के नाऊँ। पण तूं एक काम कर हम मेरे घर कनै हूँ ओनी पर होज्या नहीं तो ठीक कोनी है। सो मिरच लेहरूर र करती आपको सो मूं लेकर आप कै र लागी। हर इब का सुबकती सुबकती चाली थकी चाली थकी थकी हर आगै गई तो वीं नै गेलै में बड़ रो घर आयो। बड़ रै घर री बड़ पर मोत का लुगड़ा, ओढणी सूखै हर। सो वाँ नै सूकता देख कर हर वाँ रो भाँत भाँत को रंग देख कर मिरच रो जी चाल्यो हम कै एकदोय भलेर सा लुगड़ा मा बड़ दे दे

तो मोकळो ज्यागां मैं घर बड़ती हो ज्याऊँ। सो मिरच देखो कणो इस यो
घर कीं रो है ये, भाण ये? जद बाड़ घर में सूती ही बोली पिछाण ली
इस या तो बा साग रा मिरचली है। जिकी ताती लड़की गई ही। सो ई राण्ड ने कठै
मूँ लगावो? सो बा कठै भी बोली बोली हर चुप रयी। जणा मिरच ओरूँ हेलो
मारयो इस यो घर कीं को है ये भाण ये? जद बाड़ बोली हाँ तो तेरो है बाड़ को।
कठै तन्नैं के करणो है? तो कही इस भाण तेरी बाड़ घर ये इतरा ओड़णा सूकै है
सो एक ले'र तो बावळी म्हाँनैं भी देदे। या सुण कर बाड़ मिरच ने लबड़ धक्कै लीहस
जाती रै राण मेरी बाड़ तळै हूँ नहीं तो राण्ड रै सूळ ही सूळ चुभा दूँगी। रै
रै राण चान्दड़ी! काल परसों हर ली बात हूँ इसी बावळी मूरखनी। लबड़दग
जे मेरै ओड़णाँ रानी हरथ घालण लियो तो चोंटै मैं पोय ल्यूँगी, उड़ कर तेरै ऊपर
आ पडूँगी हर तन्नैं दीसैं रै तळै हाल ल्यूँगी। तो नै तूँ बेरो नी को पावै
तो मेरै घर कन्नै हूँ भाग जा। तेरै मैल तो मैं जाणती तो तेरै मैं करतीसोई
करती पण खैर तूँ तेरी करणी हर मैं मेरी करूँगी। या सुण कर मिरच उडी
इस राण बाड़ कहे तेरै ऊपर आ पड़ै हर तन्नैं तळै ही तळै साल लो सो जाय है
तजा तोड़। इब बा भाजती भाजती इर तोणी चली गई जद की नै लरदीवैं
पर भट्ठी रो घर दीख्यो। सो इब बा तावळी तावळी चाली। बा दिन गो ही गेलै ही
गेलै चालती आवै ही सो कीं ने भूख लागगी ही। रस्तै में घरों की बा कठै को
खा सको ही न। सो भूखाँ मरती को पिराण जाय हर। पल्लै को पीपिड़ो की रोटी
की नाड़ तोड़ कर बाल्यो हो। सो बो की रै कॉम को चलतो? भट्ठी रै घरों लाडू पेड़ा
हर तो बाँ नै देख कर बी रै मूँ लाळ भरयाई हर ऊँण बाड़ तळै की नीसरती हेलो
मारयो इस बो घर कीं को है ये भाण ये? जद भट्ठी बोली रै यो घर तो गइ मेरी
भट्ठी को है। कठै तेरो के काम है? भट्ठी बोली पिछाण लीनी ही इस या तो बाड़ही
साग ण मिरचली है। जद मिरच दबती दबती बोली कै भाण भूख लाग री है
सो जे तूं कै तो दो चार लाडूड़ा मैं भी खाल्यूं? जद भट्ठी बोली कै के कये?
ओरूँ कैये। कै ये भाण, मन्नैं भूख लाग री है तो जे थे कवो तो दो चार लाडू
उठा कर मैं भी खाल्यूँ हर जद भट्ठी कूकती इस लबड़दग, जे लाडवाँ पर हरथ
घालत लियो तो राण्ड को हरथ बाळ दूँगी। मेरी लपटाँ हूँ राण्ड को मूँ भुलस
दूँगी। चली जा ये मेरै घर कन्नै हूँ नहीं तो इसी करूँगी सतेलड़ी हरथ याद
राखैगी। भट्ठी की बात सुण कर मिरच भाजी इस करे सच्चाई राण्ड फूक न दे।
सो भाग तेँ तेरी हुई। कोई आद कोस पर जा कर थमी हर साँस लियो। इब बै

कै जो मैं जो आगो हक णाण मार ही न गेरतो। इण मिरच मूं मिलिये री नेई होयाँ नापड़ी घर नै चालण लागगी। पण वा पगाँ तो गेलै आगै नै टुरै है पण पाछल गैलनै। हन मैं घरां जा कर के दिखाऊं? मैं तो गीतै पल्लै ओंगई ही बैयाँ री बैयाँ पाछी आय गई। जे घर वा पूछसी तो वाँ नै काई कैसूं? आड़ोसी पाड़ोसी पूछसी तो वाँ नै काई कैसूं? सासरा सूं हेलड़ी हेलणा नै आयी है सूं दिन होयाँ तरै लारै हूं। काई काई लाई तो मैं वाँ नै कै दिखासूं? मोत मूंडो होगी। हलदी तो इतरो माल मामलो ल्याई हर मेरै पल्लै काँई जी होती पड़ी। सो इब कै करणूं चाये? तो उण सोची कै इण मरतै अंधारै पड़ै गाँव में जाणूं चाये जी हूं कोई जी होती देख लेवै। हर रात गाल नै घरां रै कर दिन गे पैलाँ खेत में चली जास्यूं सो ईं मोत लारौ पनरा बीस दिन खेत में गाँव उठे पैलाँ तो जास्यूं हर सोझै पाछै पूठी गाँव में आस्यूं। यूं वा तरै तरै का विचार करती करती टाल्लैर आप को गेलो करै ही। सो हग मग हग मग चालती थकी चालती थकी गाँव कै सीवाड़ै पूंची तो कठै कै देखै है कै धणियूं नीरो गाय चरावै है। जीरै मिरच नै आवती देख कर पिछाण लीनी हक या तो मिरचली है हर वो धणियै नै बोल्यो हक भाया भाया! वा देख मिरचली आवै। वा देख मिरचली आवै। जद धणियूं बी मिरच नै देखण लाग गयो। इतरै में वा ओर नेड़ी आ पूंची तो धणिया कही हक है तो या लागण मिरचली ही पण या तो टूलती आवै है सो कै बात है? ईं कै ताप सिरकी चढ़ै है कै! हर धूरे वाँ निगर पाणी कर देखी सो वा राम की पूरी पग कर पग मेलै हक बो नै सोतो पड़ै गाँव में बड़णूं हो सो वा ताबल ज्यूं ही? हर धणिये नीरै कै बीं री चाल देख कर या चोकस जच गई हक होत हो मिरचली बेमा हैटर बी रा पग जीमत कै काणा होती उपड़ै। सो चालो आपां बैं कै सामाँ चालाँ तो कै बी दोनूं मिरच सूनैं चाल खड़ी हुया। सो वाँ नै जातो कै बार लागै ही ऊर बैं कै सांकड़ा ना लागया हर पग बाजता सुण कर मिरच सूंवैं देखै तो धणियूं नीरो दोनूं कनै आ लाग्या। मिरच री जी तो मति डूब पायी होगी कयूं के वा तो सैनां मैनां हूं दूर रैला खातर होलां चालै ही हर बैं दोनूं हाईं कालम धीमें बैं दें कनै ही आ पूंच्या। इब वा लुके जी तो कठै लुकै? वाँ नै सामैं देख कर वी कोनी मूं बोली थप होगी। हाय इण नै मैं कयूं पूछ लेसी तो मां नै मैं के केस्यूं? इतरै में ओर नेड़ै आ गया हर बोल्या कै मिरचली राम राम। नानी कै गयी थी कै कै हां जावती आई। जद नीरो बोल्यो कै नानेरै हूं कै कै ल्याई? तो मिरच कै बातै पैलाँ ही धणियूं बोल पड़यो हो ल्याती कै? जूता खाये बिना आयगी थोड़ी है। तनै वे ई कै कुण नयो ल्हेर होती। रात दिन तेरै सागे नै है।

नोट- निःछल/नारायण स्वामी, रतनशहर से प्राप्त.

लखी बिणजारो -

एक बिणजारो ऐसा'क बिणज किया करतो। पाँच दूंजाँ बालद हर खोड़ी बिणा
जारी नै सदा सागै राखतो। वो पैलाँ गरीब हो सो गुड़ लकड़ी बालद में भर
कोनी लेरतो कयूं कै दामाँ रो बैर्क काम लेवतो हो। सो वो थोड़ै दामाँ में गुड़-
मोली चीज भरतो। गुड़ मोली चीजाँ में और तो कयूं खास हाली-चीज ही
कोनी हर लूण एक इसी चीज ही जिकी घर घर में चायती है। सो वो साम्भर को
लूण आप की बालद में भरतो। हर फेर वो बालद नै बारलै गाँवाँ में हाकदे-
तो। सो खेतड़ै गाँवाँ में नाज कै बदलै में लूण चलादेतो। कठै मोठाँ कै बदलै
कठै मूँगाँ रो ठेठ कर को हर कठै बाजरै रो ठेठ कर देतो। लेणाँ रा बार दूसरा हर
देबा रा दूसरा राखतो। लेण रा बार बड़ता हर देण रा घटता राखतो। तकड़ी में
पालँग हर डांडी में अन्तर घणा राखतो। देतो जो पालड़ै रै नीचै नै मोलो मारतो
हर लेतो पालड़ै रै ऊपर नै मोलो मारतो। हर डांडी मारबा में इतो हुंस्यार हो हाथ भर बजा
में ह्यार मिनखाँ में आँख में ताकु दे कर सै नै आन्दा रा देतो। हाँ वो जितणूं लूण
भरतो जितरो ही बाजरो मोठ बदलबाँ ले लेतो। खरचो-नीतारांस रतो कोनी। बैल तो रोही
में चरलेता हर गाँव में होता तो कोई खेतड़ै कनै रूँ कठै रूँ गूँणूं कठै रूँ फलालेराँ कनै
चपा लेतो हर आप होदूं लोग लुगाई जाट जमींदाराँ रा राबड़ा रोटा लेलेर खालेता
हर सौ दिन थापा थापता रैता। सो यूं करताँ करताँ दिन बीत्या मास बीत्या बरस बीत्या
हर बिणजारै रै घर में चनणी बापरगई, लिछमी को परगास हो गयो। तो उण इब कई
बैल खरीद कर लिया, कई नौकर चाकर राखै लागो, दो च्यार तम्बू छोलदारी सिमा
लिया, दो अेक गाड़ा करवा लिया हर आप को पूरो ठाबो कर लियो। तो सारै देस में बी
को व्यापार चालै हर सब गाँवाँ में बीं की साख जम गई हर पूरी पूरी भरमानत (?)
हो गई। जै गाँव में जाय बठै ही लोग बी को छोकिया (?) हर मोकलो हुको भरभर पावै
दूध दही की कटोरा मूँ आगै धरया रैं हर बैं कै डेरै में आठ पहर चौसठ घड़ी चोह
जुड़ी रै। सो अैंयाँ बिणजारियाँ मोजाँ माणै। आप तो निवार रै पिलंगा पर पोडै हर सू
आगला बिणती जोवी रै। सो यूं बाताँ बाताँ बीं को व्यापार सारै पोवलै में फैलगो
हर पीसै को धो होतो रयो। तो उण इब आप कै बिणज नै और भी बढा दियो। इस
सैकड़ूं चोगणा बैल, चोगणा हवेली चोगणा तमू चोगणा गाडा छोलदारी कर दिया हर
बीं की बरकत तो इसी बाबड़ी कै कयूं बात करो। इब उण बिणज कै सागै सागै बोरगत
करणी सरू कर दीनी। तो कोई नै तो बैल मोल ले दे हर कोई नै रोकड़ा रिपिया दे दे, कोई
को ब्याव करवा दे तो कोई को खरच भरवा दे। कोई नै हल चलवा दे तो कोई नै बीज दिला दे
कोई नै ऊँट दिवा दे हर कोई नै कयूं हर कोई नै कयूं। पण मुद्दे बात या ही क उण

तौ चोखलै में आप री लिणत बोरगत रो फैलाव करतो रियो। इसो कोई बी घर कोन
हो जैं रो लाबी करनैं रूं कोई न लियोड़ो होय। छोटैं हूं ले र बड़ै नाणी सैं बे
लिणगारी री मैगत हूं बाल बाल बणग्यो हो। हर सारो चोखलो बीं रै हुकमांन
सो करतो। इब तो बीं रै चान्दी पर जाल पड़नै लाग्यो हर बीं पर राम री इसी रजा हुयी ह
बीं रै लजानैं को ढेर कुबेर रै लजानैं नै बी ढेक गयो। बड़ा बड़ा राजा बादस्या बीं
की खुसामद करण लाग गया। हर रजवाड़ै में बीं री कुरसी पक्की गई बीं री निजोरो
रुपसां तांणी जाजनो लाग लाग्यो हर रजवाड़ां में बी बीं री पूरी पूरी मान हो गई हर
इब बीं री आग जाग्यो तो बो जाग्यो हर तुरताल तांणी नोगी जावतो फिरै है। इतरी
लिछमी को थधो थो हाथैं पर बो आप रै घर री फौज इकठ्ठण करलीनी, घरका हाथीघोड़ा करलिया
घर री तोपां लाम्बै मूंछां की हर बैं ओरछै मूंछां हाळा गुजरवा। मोकळी फौज हाथां पर उंण छोटै
छोटै रजवाड़ां नै टरका देर र आप रै हाथ में लेलिया हर कई रजवाड़ां हूं बो मामलो लेण
लाग गयो। यो हाल होयौ पर बीं री निजर गो आज तांणी निरमल ही इब मैली हो
गई हर राजां कन्नैं हूं डोला मांगैं लाग्यो। राजा बी बीं रै मैं हूं थर थर कांपता हर
बीं रै हुकम सरू डोला देबा लाग गया। कई राजां की उण तरी ब्या लीती हर कैयां
नै जिको बीं की सामनूं करयो हर हुकम न मान्यो बां नै पणियां छाळ करदिया
फेर बो डोलां तांणी ही कोनी रुक्यो फेर तो बो पाज नै तोड़ कर मन मानी करबा लाग
गयो। हत मैं राजा की राणी की बो बड़ाई सुणतो हर बा राणी मोत सरूप हैं बैं हा
राजा पर चढ़ाई कर देतो हर बीं नैं कह दिवातो। इस या तो थारी राणी मन्नै दे
हर नै राणी मन्नैं न देवो तो म्हारी लड़ाई करलो। जो बापड़ा कई तो आप री गा
डरता दे देता हर कई सामनूं करतो बां को मन री कूत उठा देतो हर जीनै जीवतो
पकड़ लेतो बीं की बच्चा बच्चा घांणी मां कर पिलर देतो। इं करतां करतां बीं
धाक सारै चोखलै में जम गई। हर बो खूब रंग राज माण्यो। बैं रै रणवास में न
सै राणी हर पांच सै पटराणी ही। हर गोली बांदियां हर नाती मोटी पासवांन
को अत न पार हो। हर बीं री मूंछ चोटी पर चढ़ गई ही। पण सायरां की
कथी है तो सोलह आंना साची है। हर बढ़ी को फिर नीचो है। जो आदमी बढ़ी करैं सो
छेलै नाकै नीचै गिरै। या की या मोम फिंद बिज गारै फै हुई। कवै है के उण टेम
नरवल गड में राजा ढोल राज राज करतो। बीं री राणी मारू मोत सरूप ही। बीं को
चोखलै में सरनांव हो। सो जद मांन सिंह नै बीं रै रूप को बेरो पड़्यो तो बो मन ही
मन में मोत मोत का विचार बांधै लाग्यो हर होय न होय मारू नै जद मैरै महलां ल्याऊं
तो जिया जलम पाऊं। बीं नै सारी मनां नै फिरै करकर करहूं हर मेरी मोदा मैं चोमाल

राणियाँ मैं जी नै सब सैं ऊपर राखूं। मेरै म्हैल में था मेरी [illegible] लगावै, [illegible]
लैजावै लेन भी [illegible], पण थे जी थे [illegible] रा मोटी मोटी [illegible] हरमैं
मेरै सागै चौपड़ [illegible] खेलावैं रा मदरा [illegible] रंग माणूं। [illegible] हजार [illegible]
अर मेरै आंगण में [illegible] तो [illegible] मेरो सारो म्हैल जगमगा उठै। यूं जो [illegible]
रा [illegible] आप रै मन में थो पक्को [illegible] [illegible] [illegible]
सैं हर [illegible] सैं नरवल गढ़ री मारू राणी [illegible] हर इण आप री फौजाँ
नै हुकम दियो हक नरवल गढ़ नैं कूच कर देवो। हर [illegible] री तोप हर [illegible]
रा [illegible] देवो। सारी फौज भी भर थी। पगाँ चालतो कोई भी [illegible]
नै [illegible] तो जी नै [illegible] लीन [illegible]। [illegible] उण [illegible] हक [illegible]
छतरी सुलतान है [illegible] बो बड़ो बांको वीर है हर जी हूं [illegible] स्यारै है सो [illegible]
पूरै [illegible] हूं नरवल गढ़ नै चालसी। [illegible] स्याणो लोगाँ री [illegible] है हक [illegible]
[illegible] री [illegible] तो जी नै [illegible] हर [illegible] हक [illegible] चायैं [illegible]
[illegible] [illegible] जतरो [illegible] हर हर [illegible] चड [illegible] हुया। तोपाँ पर [illegible]
पड़ी, हाथियाँ पर [illegible] चड गया हर [illegible] [illegible] इक [illegible]
[illegible] पड़बा लागी। [illegible] दुनी धर धर कांपै लागी हक आज [illegible] री परदेशी
[illegible]। बड़ा बड़ा गढ़पती कांप उठ्या हक मामलो [illegible] भी थो [illegible]
[illegible] देवै। सो कई राजा [illegible] हर [illegible] में [illegible] री [illegible]
रा [illegible] हर [illegible] पगाँ आप आप गैलै में [illegible] हक [illegible] म्हाने
कोई [illegible] गुना हो [illegible] जी री म्हानै [illegible] हर [illegible]
[illegible] जावै पण आप आप रै दल नै पूठो फेरो नहीं तो [illegible]
[illegible], [illegible] ठोड़ [illegible] रा [illegible] भाज छूटैगी तो
आप आप रो दल [illegible] पाछो फेरो। तो या सुण र [illegible] नै [illegible]
[illegible] हक म्हारो और कोई भी राजा पर चढ़ाई करबा रो बिचार कोनी [illegible]
[illegible] तो नरवल गढ़ रै [illegible] कंवर पर चढ़ कर [illegible]। [illegible] या सुणी तो [illegible]
आयो हर पाछा आप आप रै [illegible] गया। हर [illegible] पाछै नरवल गढ़
पूंच्यो। नरवल गढ़ रै ऊपर चढ़ र आवतो सुण र [illegible] री [illegible] जी कांप उठ्यो, पण
जी रै एक सुलतान को सहारो सो जी [illegible] पर दिल ठाडो [illegible] बैठ्यो। [illegible] तो दिल
कांप उठै हर [illegible] ठाडो [illegible] हक [illegible] [illegible] कांई बिगाड़ सकै है? [illegible] छतरी
सुलतान सरीखा पायक ऊभा है। [illegible] नरवल गढ़ रै बाहर [illegible] [illegible]
[illegible] दिया। [illegible] री [illegible] गई, घोड़ाँ रै [illegible] लाग गई तोपाँ रा गोला [illegible]

हरखचंद जी री हवेली आगे भोम सिंह री नाहर नाल तरवारां रे भीच में दुरगायो [illegible] गई। [illegible] मरदां री तरवारां [illegible] देख दुरगायो। [illegible] [illegible] इण मुलकां मांयनै [illegible] भी भारी है। आगे भोम [illegible] आगे ले [illegible] गई तो भवानी [illegible] [illegible] [illegible] मादू रै [illegible] भोम सिंह रे आगे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दे [illegible] भोम सिंह भी [illegible] है [illegible] [illegible] आगे [illegible] लेखो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सुरताण [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भोम सिंह सु [illegible] [illegible] [illegible] जाणी [illegible] दोनूं [illegible] [illegible] मादू [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] जावो आंख मींच [illegible] है [illegible] [illegible] आप [illegible] नहीं तो मादू [illegible] [illegible] भी [illegible] भोम सिंह रो [illegible] [illegible] [illegible] भाई जणा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मादू [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] भी [illegible] सुलतान री [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मादू [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रोकतो रो रोकतो रै गयो। भी नै भोम सिंह नै भी [illegible] [illegible] [illegible] मादू [illegible] आई है तो वो भी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पर आय पूग्यो। अठै मादू नै [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मादू नै [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मादू है [illegible] [illegible] भी मादू [illegible] है। मादू [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आप [illegible] [illegible] [illegible] आ [illegible] मादू री [illegible] पकड़ लीनी तो मादू बोली [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है? [illegible] [illegible] पर [illegible] है। जे तू मरद है [illegible] [illegible] [illegible] आई है तो [illegible] [illegible] [illegible] पकड़ [illegible] भी [illegible] तू तेरी मां [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible]! जे मैं [illegible] [illegible] [illegible] तो मैं हूं [illegible] [illegible] [illegible] है। मेरै भाई [illegible] [illegible] [illegible] सुलतान है। [illegible] [illegible] [illegible] तेरी [illegible] [illegible] [illegible] देगो। तेरी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तेरी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भी [illegible] [illegible] [illegible] आगे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मादू [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मादू नै [illegible] [illegible] [illegible] मादू [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मादू बोली, मैं तो मादू [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

तूँ जाणै ही' मारू नगर नीतै लो राणा री जुड़ी नै र पेर तूँ दिखाणू जावै है। कोई गोली बाणदी नै पकड़लै र वीं नै ही' मारू जाण कर थोड़ै सैंडै पड़। या बात सुण र मर गोरा मिंदू मारू री बाँह छोड़ दीनी रेत में रातों की रात हूँ सो में तो गाली की ही बाँह पकड़तो चालतो लागूँ, गोली बादड़ी री गुना पकड़तो चालतो बोलतो लागूँ। ईं डूं बोलतां में महल गानेती फेंकती। तो मर मारू बाँह छोड़ दीयो र कैंया कै थारी मारू नैं जा कर कह दैवै हम या तो आ म्हारी मैहलां में आवै र नहीं तो मैं बड़कै बाबल जाट की इगालियाँ इगालियाँ टिंडा देवूँगा। तो मारू रही हम चालो जावै है। इब गाती ही थारी समाचार में मारू नैं कह देस्यूँ र जैं गा मैं कैया बात री तो मैं वीं नैं थारै पासै घाल देस्यूँ। यो बात वीं कै कर र मारू नैं छटी आप रै मैहलाँ आई र मोर मिंद आप रै डेरै गयो। मैहलां पूंचतां ही मारू मर देंणी आप री दासियाँ नैं कही हम दासियो रो ! ओ मर मेरै भाई सुलतान कै डेरै जावो र वीं नैं कह देवो हम गो बाँ चालू करलो हो या तो पलवीं मेरै पास आ र रै। र सांपकली चांपकली नामतों कै गाठा नारागी हुई दासी बावै हूँ आगे र वा कैं हूँ आगे हम मैं गाऊँ बाई जी, मैं गाऊँ बाई जी। नैठ नैं छोड़ाणी जो बाँ में तैं कैं गिरै री चोगालो दिखलो मोग की र या सिणगार सालू पाल कैं हीवो दा र पल्लू तलैं है का छतरी सुलतान कैं डेरै नै थारै पड़ी। तो म्हारा मारा साली है डेरै पूँची र पूँचती ही छतरी सुलतान नें आप की रुम पेतिया वाली माणा चाँ नैं मैहलाँ में इब री स्यात सारी कम्याँ दैसी जे चालू आडै करतो हो वीं तो चालू गी माणा कैं मैहल में जा कर रहो। तो दही हम आज इतो रै काम हो गयो जो इतणी बावल करी है। तो कैं म्हाराज ! म्हांनै आँ बातों रो के बेरो। मैं दासी ही जात हाँ तो म्हाराज म्हांनै असली बात कुँण बतावै ? आप बेगा मैहल पधारो, म्हांनै तो इतरो ही जमाचार कयो है। तो गाही हम चाल, तो छतरी मर पाँचूँ कपड़ा पहर र मर पाँचूँ हथियार बाँध कर आप की माणा मारू रै मैहलाँ पूँच्यो। आगै पूँचती ही' मारू सुलतान नैं आडै हरयाँ लियो हम रै वै दई मायला ! आज तूँ थारो मूँगत दिखावै हो मैं इब की स्यात जुतो फैंकी का का मरूँगी। तूँ मूँछ कतर कर घाघरा लुगड़ी पहरल, हरयाँ का हथियार फेंक दे र हरयाँ में चूड़ी पहरले। नैणाँ में सुरमो सार काजल घालै मैहल में बैठ जा र थोड़ी वी लुगाई बण जा जी हूँ दुनियाँ जाणैगी या बोली कहै हम थारो छतरी सुलतान लुगाई मार है। जद छतरी सुलतान कही हम बात कांई है ? म्हारी समझ में कोनी आई। आज थे इतरी नाराज क्यों होरी हो ? तो म्हां नैं कयूँ नहीं कर बतावो। जद मारू रै आँख्याँ में आँसू ढलकै ढलका चाल पड़्या

हम में इहैं के जताऊँ ? तूं तेरी आँख्यां हूँ तौपरस देख ल्यो या रह कर उण आप सौ चार नाकै कर का आप सौ कांचो तरीर दिखायो, जो हूँ हमर हमर लोई रगै हो। बा बेमाल उणा हरा बेलिणा लौ कै हथ का कर तेगम का कोरड़ा कामका रा काण्याँ। सो हारै बदन पर लीड़ी उपड़ री ही। हम देख तेरी माण कौ दो हाल सोम सिंह बिणा नारै का दीनू हर फेर तूं अहै मनै जीवतो ही म्हैं दिखावै है। हा तड़कै दिनूं पैलाँ को नरवलगढ़ रो ठाकुर जालिमसिंह कर देगो, जणै हथा मैं हथकड़ी हर पगाँ में बेड़ी, गलै में तोख जंजीर घाल कर सारै सैहर कै बीचूँबीच होर र ले ज्यावैगो हर नरकै बैदखानै री खाड़ में डाल देगो। तेरी सारी जगत में नकटाई होसी। सो तूं पैलाँ बिचार ले। जे तेरै बूढियाँ में बल है जद तो बा वह हर ने तेरैं भुजाँ में बल न होय तो का वह दे। जी हूँ मैं मेरो हाथो लगूँ नहीं तो दिनगे पैलाँ को मेरी मौत लिखत करैगो। जद या सुणी तो छतरी मन में मोत रीस करी। बैं को मूँ लाल सेंदूर हो गयो। आँख्याँ का डोरा खिंच ज्याता जाड़ करड़ काड़ बाजबा लाग गई हम म्हारै चाड़ कर बिर सूदैर हसो मों कुण नै जायो है ज्यो म्हारी माण को नाँव बी लेदे। हर उण माण नै कही हम में तो कोई बैरो गादड़ो हूँ हर कोई हा सूरवो हूँ। ई बात को बेरो तो तड़कै सोम सिंह हूँ भिड़्याँ पड़सी। पण थारै मन में या के आई ज्यो यो एकली डोला कर बड़ी म्हेर का चली गई। जे थानै जाणूं ही हो तो पैलाँ म्हानै खबर देणी चायै ही। जे थे नमने को चालती तो आज म्हानै म्हारी आँख्यां थारै बदन पर कोरड़ा न देखणाँ पड़ता। पण खैर जो हुई सो हुई। पण अब तूं मेरो बी हथ का देख मैं बी छतराणी का चूख्या है। डाँगरा लादबा हाली बिणा नारी को दोनो चूख्या। या कर का छतरी सुलतान अंगड़ाई लेकर करड़ देनी खड़्यो हो गयो हर आप कै डेरा नै चाल पड़्यो। डेरै जाय कर वो आप कै सूरै साँवतां नै भेला कर कर हर सोम सिंह का सारा समचार सुणाया हर कही हम तड़कै खातर सब लोग त्यार हो ज्यावो तड़कै सोम सिंह की बोटी बिखरेरो बोबो है। करड़ी खाँप तै हर खाँप हूँ खाँप नै भिड़णूँ पड़सी। या सब सूरै साँवतां हाँ ज्यार पताप पताप कर त्यारी करबा लाग गया। हर छतरी सुलतान को औकलौतो यो ही लैहरो भायतो हो सो बी हूँ भिलबा नै हर सकती डाँग मढ्ढा लेबा नै छतरी बै कै दा मिलकर का त का ले कोला नै गयो। बो बाणियो नीना मैं सूतो हो। घर का ढूँढाड़ मंगल हो चुक्या हर ला जी बोलत छतरी जी वै घर पूँच्या हर जातै ही डेलो पाये हम रै सोतै हैं कै जाजै। वो बाणियो तो बोलो जागा पण जी बी तू जागै ही सो उठ बा नै क्यों हम जी थारो भायलो आकै तो बारणों हडुग्या देख रो है। [illegible]

बेटा की ने मत ओगाळे री बेटो [illegible] हर। [illegible] छतरी सुलतान मैं हरमोर ल्यायो। आजो [illegible] हर फेर [illegible] हर गयो। आज ईं [illegible] थारो थैं ओळ्यूं हुयो। [illegible] मुट्ठी [illegible] ज्यो थाँनें रात नै [illegible] ओळ्यूं [illegible] [illegible] नै [illegible] मैं [illegible] ही [illegible]। [illegible] आ पड़्या। [illegible] काम आज [illegible] पैलाँ [illegible] पड़्यो हो हर [illegible] पड़ला [illegible]। मैं थारो हूँ [illegible] आयो हूँ। [illegible] मान लो। जे ओळ्यूं [illegible] हूँ मिळैगाँ। [illegible] आ पड़्यो। जद छतरी सुलतान [illegible] समता [illegible] आ गयो है हर लड़के [illegible] पैलाँ की [illegible] म्हारा [illegible] मारता है। सो तेरै हूँ मदत माँगवा आयो हूँ। तूं म्हारो पगड़ी बदल भाई है तो म्हारै दुख [illegible] की सीरी है बड़े [illegible] मैं [illegible] [illegible] है। जद [illegible] रात [illegible] थाँनें [illegible] तूं म्हारै हूँ [illegible] खातर [illegible] आरी रात [illegible] पण [illegible] म्हारै हूँ [illegible]। क्यूंकै म्हे [illegible] हाँ। [illegible] गोळा मार सकाँ हाँ [illegible] [illegible] सकाँ। जद छतरी सुलतान [illegible] है [illegible]! [illegible] [illegible] जो की धरती पर [illegible] करमा मैं और [illegible] होगा। जो [illegible]। म्हे तो रात रात [illegible], [illegible] पैलाँ तोपाँ कै सामनै [illegible] पड़ती [illegible] म्हानै तो [illegible] कोई चीज चाये न कोई [illegible] चाये। दो [illegible] खातर किसो [illegible] काम चावै है? हर राम राम कर कर छतरी सुलतान [illegible]। जद वै दोनूं बात चीत [illegible] तो [illegible] [illegible] की [illegible] बाँ की सारी [illegible] सुणी ही। हर बा आप कै [illegible] की कायरता पर मन ही मन झूंझळावै ही। इसा आछ्या निकाम नामरद [illegible] पानैं पड़्यो है जो धरम कै भाई नै [illegible] उतर देकर [illegible] लड़्यो हुयो। [illegible] काळ जीणूं है [illegible] मैं भाई नै [illegible] कोनी दियो। यूं पेट में घाल्यो जीव [illegible] दिन टहरैगो। मौत आसी जिकी तो चौड़ै [illegible] कोनी छोड़ैगी। मरसी [illegible] चौड़ै। तो [illegible] [illegible] है [illegible] जिवाणो [illegible]। सगळै [illegible]। फेर मरणूं तो [illegible] दिन सैं नै हैतो फेर [illegible]। [illegible] फाड़तो [illegible] धार [illegible] सती। हर [illegible] आज हूँ धणी नै आडै हर [illegible] मरद [illegible] माता नै [illegible] कर लुगाई [illegible] नै। मेरा मा-बाप की [illegible] पापी हर जो थाँनें लुगाई नै लुगाई [illegible] आप की लाडली बेटी नै लुगाई [illegible] लगा [illegible]। थे तो लुगाई हो सो काजळ घाल कर हर म्हारा घाघरा [illegible] लुगाई [illegible] फेर कर बींनणी बणो। [illegible] मैं [illegible] कर [illegible] मैं [illegible]

आवो हर मानै अरज थांनूं आपड़ा हर थांनूं हथियार सूंप द्यो। तो मैं महलांनूं भेज कर
छतरी सुलतान री मदत कर सकूं। छतरी थारै घर आ'र साथ मांग्यो, कर मदद मांगतो हुयो
नट गया। तो थारै हूं ना देतो की नांई। थां नै कर तो जाण दैसी माली ढाई दिन हूं मोत
मोत लेती लाती लड़ाई सो आंतेडां दै बी मन में रीस आय गई। ओ तो आखर मरद
बच्चो हो तो उण मरद पर आप री ओछी सोली पागड़ी बांध कर हर हथियार बांध
लेकर बोल्यो दै मरद। आरतो काढ़े। मैं भी रण में जाऊं हूं। दै तो निवाळो री डांगरो
डांगरो कर देगो हर का म्हारो मालिकियो रण खेत में डर देगो। या तो मैं पाछो आ कर
थारै हूं मिलूंगो हर या थे म्हारै हूं सुरग में मिलवा आ ज्यायो। मोई म्हारा थारै
बोल करार है। यो ई थारो म्हारो पण है। यो ई थारो म्हारो नेम धरम है। जै ईमें फरक
पड़ै तो एक दूसरै री दरगा में दोखण गिरस्यां हो। यूं पक्का बोल करार कर कर हर नेम
धरम बांध कर साहूकार रो आरतो पाछो बरला कर घर हूं नीकर दुयो हर छतरी सुलतान
रै डेरै जा पूंच्यो। हर आ छतरी सुलतान हूं रामा स्यामा करी हर कयो। मैं भी आप रै साथै
तेरी लड़ाई में चालूं हूं। थारै कनै मेरो काड़ पड़ैगो। औंयां मोत मोत आपस में बात करता
रया, हर फेर सुलतान कही हर म्हारो भायेलो एक पठाण और है तो मैं बीं रै कनै बी मिलण
नै जाऊं हूं। तो वही अंकलो मन ना मान्यो, मनै बी साथै ले चालो। आपां दोनूं ही मिल'र
आयां तो औ दोनूं पठाण रै घर गया। बठै पठाण बी मैरी नींद में सूत्यो पड़्यो हो
सो छतरी सुलतान बीं नै बी हाथ लगा'र नींद में जगायो हर सारा हाल चाल कह
सुणाया। तो पठाण रो अवड़ो बोलतो हर भाया! जद तांणी मेरी ज्यांन में ज्यान है बठै
तांणी तो कीं रो मूंडो है ज्यो थारै सामै रण खेत में डर सकै। हर जद म्हारी खिरड़ाई
अलगी हो गया तो पाछै म्हारो जोर नहीं। हर तूं तो थारै डेरै चाल हर मैं मेरै भाई
भतीजां नै बांकै लड़ाकां नै लाई लागतां नै हर आड़ोस पाड़ोस रै भी जोगह्यमत
वाळा राजां नै सब नै बतलाऊं हूं। तो छतरी सुलतान तो मुड़ र डेरै में आयो हर पठाण
कै बेटै गैल हूं कर पर आप रो सहायो त्यार करयो। हथियार पाती त्यार करया, चौकार
मरद मूछ्याळा जुवानां नै छांट छांट कर निरवाळा कर लिया हर एक घर री फौज
फौज तैयार कर त्यार कर लीनी। हर उण नै सुलतान हर बाणियां रो बेटो एक नीणां रै घर
गया बठै ज्यांती चोर बी सुलतान को भायेलो हो। सो छतरी सुलतान जाय ज्यांती
नै बी बाली नींद में जगायो। ज्यांती आंख मसळतो उठ्यो हर सुलतान हूं मुजरो
कर पूछ्यो हर हे भाई! आज इसो के ताव पड़ग्यो जो तूं रात नैं बी जगाय लीनी।
जे कोई घणूं ई जबरो काम हो तो भायला फेर मिल लियां होता। बावळा आंख
आधी रा पैरो बगै हर तूं इतां कठै को कठै गळियां में फिरतो फिरै। ई रैन में

तो म्हे ई डाणाई हो फिरता नै। थारो गलै आदमी यां के काम? जै था दातणकाल नै लोग मूरखो कौ है, मैं छतरी सुलतान नै मौत मा दैहूँ, मैं छतरी सुलतान नै जीतो मर कर देहूँ तो ई नर सुलतान आज आदी री आगलाँ मैं शहर री गली गलियाँ में फिरतो फिरै है। इसा रे दाता रूठ गयो। तो छतरी सुलतान कही हम मेरे वाली रो तो दाता ही रूठ गयो। आज तीसरै पहर मारु लाई मेरी सुरता वा बड़ी फरहाल गई ही सो कठै लावी बिणजारै डेरी डाल राखी है। उण मारु रै कामकाज कर बोरड़ा च्यार माथा रा बदन की खाल उतार दीनी सो तड़कै दिनगे पैलाँ बिणजारै वाला मेरा सामनै लाकनै मारता है। सो मैं तेरै हूँ मिलबा नै आयो हूँ। जै तूं कुछ बी म्हारी मदत कर सकै तो कर नहीं तो म्हारा ये छेला मुजरा हर पाछलो मिलणो मान लेवै। तो मोंती चोर कही हम गरमा! तूं सोच मत करै। मेरो नाँव मोंती चोर है। मैं रूम स्याम रै बादशाह री हरम के मैहल में बड़ कर बी वै गलै रो हार ल्यायो हो। बाण नगरी रै राजा री सूतेडी मूँछ काट कर ल्यायो हो। हर रै बेरा लियो विकार रै काम मैं ई चाणी चार पर कर गेरया है। सो तेरै मोम सिंह बिणजारै की तो कैणू ही के? जै तूं कहै तो दिन ऊगै रो ऊगो मारण पारे पैलाँ मोम सिंह को सिर काट कर तेरै डारै टांग दूँ तो नर सुलतान कयो हम ना। इसो ओछो काम आपाँ चोरी करैं। ई हूँ लोग इती मैं कैवतचाल ज्याय हम छतरी सुलतान डर कर आगनै लाकनै चोरी लड़ायो रा डर का सूते री सिर काट लियो सो ई बात मैं आपणूँ छतरापण चोती है। पण हाँ एक काम कर हम बी कै डेरै में जाय कर वाँ री तोबाँ रा जुजरबै रोगलाँ का मूँ डाट दे। तो ठीक मौकै पर बींनै तोब काम दे दे हर आपणूँ दल ज्यादा न बेचै। तो रै मोती मेरै बाँतें हरक कोक्याल ई इब लो। प्रातैक मैं सब तोपाँ का मूँ खामोदूँ हूँ रा मगल फूरे पैलाँ थारै ल्यां खबार दूँ हूँ। तो कही ठीक है। तो या बात सुण कर छतरी सुलतान तो डेरै आयो हर मोंती चोर आप रै साथियाँ नै साथ ले कर हर मिलाना भेस धारकर हर चोकस तज बज कर मोम सिंह रै डेरै नै चल पाया। आगै वाँ नै पैरायती मिल्या हर वाँ नै टोक्या हम आगैं तो जाण को हुकम नहीं है। तो बाँ कह्यो हम हुकम तो म्हारा ई है। ये हुकम लेणा कुणा है? तो या सुण का पैरैदार बी कड़क रह्यो हम ये लुगाई कुण है? कठै हूँ आई है? कठै जाय है? आँ नै रोकणूँ ठीक है कि नहीं? तो उण कह्यो के मई ये कुण है? तो कही हम म्हे मोम सिंह री जणनाँ हाँ। तो रै ये इताँ कठै हूँ आई हो? तो कह्यो के म्हे सैहर मां मेल लेण नै गई ही। तो मेल ले कर आई हाँ हर आप मोम सिंह की भेजी गई हाँ हर आप मोम सिंह नै ही सारी बात जा कर आज किमाड़ियाँ। थे म्हानैं मत रोको। म्हारै गैल छतरी सुलतान का आदमी लाग रहा है ओ तो अठै तोनाँ म्हारो

गैल जैज आया है तो औरे वठै दिल्ली का तखत सुणता होग्या। तो ये म्हारै हूं छाना आज मत रो। ने गंदूफूर गो न नर सुलतान नै तो बेर्स पड़ग्यो हक थारो भोल भोम सिंह री जानकारी ले आई तो बड़ो गजब हो जांगओ। थारो टहरो तो म्हारै म्हालो आवै जिड लोगों नै लप लागगो हर भोम सिंह थांनै वखत हूं सोहैगों गावली जुग कर पेरयाती तो कुप होग्यो हठ वडे सच्चांणी कांई गड़बड़ न हो जाय। हर आप तो सिंह कुड़गाम ल्यार औं हूं म्हारी नाव बोतो वरी हो भेलो नाका गैलो दे दियो। [illegible] की हैदेरी रात ही। अकाश मैं बादलां री घटा टोप छाया होड़ी बादलां री च्यारूं मेर गरड़ गाजो हो रयो हो। आंदी माँचा होके लागी ही। कोई कोई बूंन पड़े ही। च्यारूं मेर सूसाट माचा रयो हो। हाथ न हाथ दोखो सूजै ही।

[illegible] लोग होतर हो गी ही। सो ओ भीतर बड़ता ही सीदो तोपखानै गया हर वठै मेह हूं भीजयोड़ी मोरी का पीडा बांधर बांधर का सगली तोपां का मूं खूब लाम दिया हर तमाम जुआरेलै रांगलों नै भी मॉरी हूं गैर डार दिया हर ने कोई डार खोलै भी तो तोपां हर जुजरबै खराब ना हूं सेलां री ओलाणां हूं कुचारयां रलजै हर जुजरबां नै दे बेर्स निकली वार लागी। इतणी देर मैं तो दे बेर्स दे राम की पिरजा होग्या। सो यो चौकस बन्दोबस्त कर कर हर जांती चाढ़ ज्या बावड़्या। हर म्हार सीदो छतरी सुलतान के डेरै पूंच्या। हक है ना सुलतान! मैं थारो लगलापोड़ो काम करो कर आयो हूं सो इब मतनै जो काज करसे सो करदे। तो कहीं हक ज्यांती! तड़कै भोम सिंह रै माल की लूट होयगी जद पैलां लूट रो हुकम थांनै दियो जावेगा। हर उन्नै नरवल गढ़ कै राजा दोलत कंवर की सारी फौज त्यार कर लीनी। उनैं सारी पठाणी फौज भी त्यार होगी। इनैं सादूकार लै आप रै नौकर चाकरां नै त्या खड़्या कया। हर छतरी सुलतान को सारो सारा कमर कर्यां जाड़ पीसैं हो। सो बो सारी त्यारी को सरोकाम बन्दर करता भोम सिंह जिण जोरै नै कुरा भेज्यो हस त्यार हो ज्याये। छतरी सुलतान आवै है। तूं आज तांणी फूल्या फूल्या चरचा ही। पण थांनै आज सेर नै पैसेरी मिली है। त्यार हो ज्यावे म्हे आया हर इब बों च्यारू नाकों हूं भोम सिंह पर धावो बोल दियो। एक नाकै हूं पठाणी फौज पड़ी कूद कर, दूसरै नाकै हूं नरवल गढ़ री फौज, तीसरी बांती हूं ज्यांती चोरहा साहूकारां के डेरै रा लसर मिलवां लाग। हर चोथी बांती हूं छतरी सुलतान आप कर छांटवां छांटवां ज्वांन ले कर भोम सिंह रै दल पर टूट पड़्यो। म्हैं तेरे पर सुलतान आ पड़्यो है। भोम सिंह रै यो घमंड हो हक तेरो सामनो कुण करै है। तेरै नांव हूं हिरण लोड़ा होय ही। तूं ईं तो भलाईं चढ़ाई कर देवै, तेरै पर चढ़ाई कुण कर सकै है? तो बो ईं घमंड मैं बैठो रयो। हर उन्नै हूं छतरी सुलतान है धावो कर दियो। हर बड़ा बड़ा देवा

लागया तो च्यारूं कानी हूं ओक सागै घूलियो उठ्यो। हर काळो काळो च्यारूं कूंटां हूं आगै बादळ लाग्या तो बो बी हूं आवो हर बो बी हूं आवो। जो सुलतान गढ़ गोरख नाथ रो चेलो हो सो बो ओ गढ़ गोरख नाथ री। बोलतो जावै हर बाडकाळी जा तो जावै। सो दे जिकै रो ही ऊपरनै पाग दे जिकै घोड़ी बीच में गेर। सो मार मार करतां भीम सिंह री फौज रो घेरलो काढ गेरयो। हर उन्नै हूं पठाणी फौज बाडो लै लियो सो ज्यो आगै पड़ै बै नै ही कतल करदे हर आगै हूं आगै नै दाबतो आवै। नरबळ गढ़ री फौज बी बुरी तरै बोरगो बाड़ियो गया दीखे। हर ज्यांनै चार मो लाख कारबै बी बोला लगा चालै हर धरती लाल करता आवै। भीम सिंह यो हाल देख र ओसाण-चूकगो गो। उण बखत दे आप रै तोपचियां नै हुकम दियो हक च्यारूं नाकां तोपां दाग दो पण देखै तो तोपां रा मूं बी मांटी हूं खाम्यां पड़्या ही। हर या मांटी स्यात में नीसरै नहीं। तो तोपच्यां भीम सिंह नै अरज करी हक महाराज! नीव री आग्या करूं, तोपां तो मांटी हूं उटी पड़ी है। हर भीम सिंह क्यो रै हैं? कै हैं रै महाराज! तोपां रा तो मूं माटी हूं दुक्या पड़्या है। बस या सुणतां ही जिणजाटै रा हैं कनै रै सागै बहत्तर नाडियां री जी एकर सागै नीसर गयो। हर बो सूंनू हो गयो। उण टेमी हक इब बांच सकूं नहीं। हर जे भाजूं तो भाजण नै जगां नहीं। क्योंकै च्यारूं मेर हूं छतरी सुलतान री फौजां बढ़ती आवै ही सो बो अकल बकल हो गयो हर बी रा सोळूं सागै खोया गया। इब बीं कै जासरम मारणै रै सिवाय कोई दूसरो गेलो ही कोनी हो। तो उण रै करी हक आप री बिणजारां नै तो सब नै आगै कर लीनी हर आप आपकी उघाड़ै सिर, उभाणै पगां, <u>हाथां में काचै सूत की आंटी</u> घास रा तां मूं में पकड़ लेकर छतरी सुलतान रै सरणै चाल पड़्यो। छतरी सुलतान जद भीम सिंह नै आवतो देख्यो तो हथियार हाथां रा हाथां में ही रुक गया। हक तिरस्यै बैरी पर हथियार चलाणूं पाप है तो आप बी रुक गयो हर आप री फौज नै बी रोक दीनी। इतै में भीम सिंह नर सुलतान रै पगां आ पड़्यो हक म्हारी भूल-चूक माफ करो हर जो हुकम होय तो म्हारै हूं डंड भरवा लेवो पण म्हारी ज्यान बकसो तो छतरी बिणजारै नै कही हक मैं मेरै मायलै ज्यांती चोरनै घर जाण छोड़ चुक्यो हूं हक थारी बिणजारै रै खजानै लूट होगी। सो फकत मैं तो मा ही चाहूं हूं हक म्हारी जबान मूठी न पड़ै हर दूसरै आज तांणी जितै राजावां नै तैं तेरी बनमें गार रोळफाट बांधर ती बन घाट दे। तीसरै, जितै राजा री हूं मामलो हर डोलो लेतो बो सब बन्द कर दे। हर चौथो तूं यो पण करलै हक आज हूं तूं कोई फरबी चढ़ाई घर घर नहीं जावैगो हक आगलो आज गुन्है होय। हर पांच वां जदै तूं छतरी सुलतान री आंण मुणो उठाणी हर में जिई जिकाज बी मत रैय नाही तो थारो लोळज हां

आगो। तो भोम सिंह रूपारी बात कबूल कर लीनी हर नर सुलतान भोमसिंह नै छोड़ दियो। भोम सिंह री बहन रै जी बालक आप रै [illegible] आ कर जो पेट सूं मोत्यां री राजां नै [illegible] हर वाँ री बेड़ी [illegible] दीनी हर पै तब छतरी सुलतान री नै बोलता आप आप रै घर गया। फेर ऊंण साचै मोतियाँ रो थाल भर हर आप रै [illegible] छतरी सुलतान रै डेरै नै भीर पड़ियो। जितरै छतरी हर सो आप री माता मारू रै महैल आयो दरवाजा नै [illegible] गयो। मारू आप रै महैल पर सारी [illegible] नै [illegible] लियाँ खड़ी खड़ी देखै ही हर देखो म्हारो [illegible] भोम सिंह री। इतरै में [illegible] आया हर छतरी सुलतान [illegible] मारू रै फरजंद हूं जीत गयो हर भोम सिंह हार गयो। भोम सिंह री तोपाँ रा मूँ बन्द हो गया हर जिण [illegible] हूं [illegible] री रोती साथी। इतरै में मैं देखै है कै छतरी सुलतान [illegible] चंवर ढुळावता हा, नै [illegible] आप री माता रै महैल आवै है। तो माता मारू [illegible] हूं आगे पाटै री [illegible] सँजोई। महैल रै दरवाजै सोनै रो पाटो घाल्यो गयो हर मारू सात सखियाँ रै साथ गाजै बाजै हूं मारू रै आरतो लेतर साचै मोतियाँ रो थाल भर कर दरवाजै पर आई हर [illegible] री आरतो उतारियो। हर फेर माई माथा बतळावता थकां आप का महैल में आया हर बैठे आज मा आप रै [illegible] उजला चावल बणवाया हर मूँगाँ री दाळ बणवाई खरी [illegible] घी मंगवायो [illegible] माई नै मैं मेरे हाथ सूं [illegible] हर तीन बतीस तीवण [illegible] पापड़ तळवाया। हर फेर माई नै आप रै हाथ हूं खूब रंजा रंज। कर जीमण करवायो हर लाख दाद दीनी हर इस दुनियाँ में धरम कर्म री होय तो छतरी सुलतान सा हूँय। हर सुलतान री मारू माता रै [illegible] पण थारै बेटै रै [illegible] नै जरूर जरूर आऊंगो। यूं छतरी [illegible] री माता नै बचन दे कर महैल हूं उतर कर डेरै नै आयो। तो बठै भोम सिंह साचै मोतियाँ रो थाल भर कर निजर करण नै लियाँ त्यार ऊबो। आप डेरी में [illegible] हर फेर भोम सिंह साचा मोती नीजर करया। तो छतरी सुलतान मोतियाँ नै [illegible] री पाछा फेर दिया हर मन में या विचारी कै [illegible] हूं निजराणो लेबो ठीक नहीं। जै कोई नौकरी [illegible] रो धणी होय तो निजराणो लेणूं चोखो नी लागै। पण जिण कनै हूं निजराणो लेबो [illegible] कर आऊं हूं। इं तरै हूं छतरी सुलतान आप री माता, नरवल गढ़ रै राजा ढोला री राणी री लाज राखी, नरवल गढ़ नै [illegible] होबा हूं बचाया, पिरजा री सिर आई बलाय टाळी, चोदा सैं चालीस बनवै राजाँ री बन्द छुड़ाई, पोंगळ रै राजाँ रा डोला बन्द करवा कर सती धरम री रिछ्या करी हर पापी भोम सिंह नै हार [illegible] भुगतायो। इति।

- गिरधारी राम पुरोहित, पिड़ावा से प्राप्त -

एक गाँव री बात। मैं दीवाळी रो तँवार आयो तो सारै गाँव री लुगायाँ आपरै घर
घर में लेवण घालण लागी हर आप आप रै घाँण झूँपड़ा नै लीपै-पोतै लागी। वीं ई
गाँव में दो नणद भोजाई भी ही। वाँ भी आप रो घर लीपण पोतण रो विचार कीयो
सो भावज तो लीपू खरलो हर नणद लीपू चोतियो ले दोनूँ माटी लेवण नै रोई में
खाद में गई। खाद गाँव सूँ घणी दूर ही। तो वे चालती चालती थकी खाद पर
पूँची। तो पूग नाकै तो नणद आप रो चोतियो रख कर हर ओतियो लेकर माटी खोदै
लागी हर दूसरै नाकै भावज आप रो खरलो मेल कर बठै ही खाद में माटी खोदै लागी
सो जठै नणद केराती भाँ जठै तो मोती ही मोती नीसरैं हर जठै भावज खोदती भाँ जठै
माटी ही माटी नीसरै। सो नणद रै खाद में मोती नीसरता देख कर भावज भीतर ही
भीतर जळै लागी। इण या तो गीर भरी होंगरी आपरी चोतियाँ री चोतियो भर कर
ले ज्यासी हर मैं ओड भरी माटी रो खरलो भर कर ले ज्यासूँ सो या बात भली ही
भूण्डी मालिम होवी। तो ऊण आप री नणद नै कह्यो हक तू थारली मोतियाँ हाली जगाँ
तो मनै दे दे हर तूँ म्हारली माटी हाली जगाँ आ ज्या। तो नणद बरगी हक मैं तो मेरी मोतियाँ
री जगाँ छोड़ कर तेरली माटी हाली जगाँ कोनी आऊँ। मैं तो मेरा मोती खोद कर हर मेरी
चोतियो ठाडो खूँमा खूँम भर कर ले ज्याऊँगी। मनै मेरी लिछमी माता साचा मोती दूह्या
ही। तो मैं तो मेरा मोती मेरी माँ नै दिखाऊँगी, सगळा सहेलियाँ नै दिखाऊँगी, आस पड़ोसी
वाँ नै दिखाऊँगी। सो तेरै माटी रै खाद मैं मैं कद्दी क्यूँ खोदूँ ? तूँ ही तेरी खोद। तो या
देख रा पैलाँ तो बीं नणद नै फुसलाई हक मैं थानै चूनड़ियो मँगा देस्यूँ, घाघरो सिमवा
देस्यूँ, मोचड़ा सिलवा देस्यूँ पण तूँ थारलो मोतियाँ रो खाद मनै दे दे। पण नणद जाबक
नट गई। तो छेलै नाकै भावज नणद रो चोतियो तो उठा कर परै फींक दियो हर नणद
री बाँवळी पकड़ कर फींकी जिको इक पाँवड़ा परै जाती पड़ी। जाँवड़ो उँगळी नै
तोड़ै। सो भावज तो ठाडी ही हर नणद बापड़ी होंगी ही। तो बा भावज रै सामनै देखै
ही। रोवती थकी नाकै खड़ी रही। हर भावज भर ले र ओतियो हर नणद हालै खाद
नै गैदं गैदं खोदै लागी। पण अब पत ही तो बाँटलो भाग न बाँट्यो जाय। सो जैं कै
भाग में कंकर हो बो कै स्यो संकर। सो जितरो भी खाद नै नणद खोद्यो जितरो तो
साचा मोती आया हर जद बै ही खाद नै भावज खोदण लागी तो दरड़ दरड़
माटी ही माटी नीसरै लागी। भावज खाद नै भोत खोद्यो। आगलो लो खोद्यो, पिछलो भी
खोद्यो, बाँकूँ खोद्यो धाँणूँ खोद्यो, ढूँगो ऊँडो खोद्यो पण बठै भी मोती कोनी नीसऱ्या
तो या देख कर भावज कै मन में रीस उठी तो ऊण आप रो खरलो तो माटी सूँ भर कर आप रै सिर
पर उठा लियो हर नणद नै नणद रो चोतियो कोनी उठाणो। बा बापड़ी हेला मारती ही

रैगी। हत नाबी मन्नै भी मोत्यां चोतियां उछाल, अे नाबी मन्नै वी मोत्यां चोतियां
उछाल दे।" पण नाबी कईं सुणै ही? वा तो उण आग बिद्या बणावतां। आप कै
घर नैं नीर पड़ोस बाई बापड़ी गैलै नै सेवती की सेवती रही। बीं नैं चोतियां बैठे बूण हो
उछाला हाला। तो वा थोड़ी दे तो खड़ी खड़ी आप नैं चोतियो जणै रोती रही हता ईंनैं
नाबी वाद्यो ही। आजयाप हर फेर तिलायां मां कर चोतियां उछालतै नैं हर्यां लागा पड़ाला
बालकही ही चोतियां मारीदे होगी भूमी होगी उठै हो? इतरै मैं के देखै है हत हिर
कलाड़ां री जमात आवै है। तो मन वैं कलाड़ा करै थी गावा लाग्या तो आगै
री आगत्तैं नैं बतलायो हत बाबाजी! बाबाजी! चोतियां उछाल दो। तो वे जोगी
बोल्या हत बच्चा मेरे सूं लैरदो उछाल सो। मड़ भी हूं लैरदो मन्नै आपे तुम्हा
बीं नैं बोली हत बाबा जी। बाबा जीयां चोतियां उछाल दो। तो वो बीं बोल्यो
हत बच्चा! मेरै हूं गैलड़ो उछाल सी। तो वा बापड़ी खड़ी खड़ी बोलड़ै नैं उडीकी। इतरै में
गैलड़ो जी जोगी जी सांवड़ै सी आ गयो। तो वा बीं नै वी बोली कै बाबा जी बाबा जी
मन्नै चोतियां उछाल दो। तो वो बोल्यो कै बच्चा गैलड़ो ही गैलड़ो उछालसी। सो वा बापड़ी चुप
होकर गैलड़ै ही गैलड़ै नै खड़ी खड़ी उडीकती रही। सारा कनफड़ा जोगी नीसर गया हर
बां कै कै लैर ही लैर एक बूढ़ो ओड़ जोगी आयो। तो वा बीं नै बोली हत बाबा जी बाबा
जी चोतियां उछाल दो। तो उण कही हत उछालस्यूं बच्चा। सो वो कहतै साथ ही आपकी एक
नारै की झोली मैं तो बो मोतियां को भर्यो चोतियो और लियो हर दूसरै नारै की झोली
मैं बीं नैं बांह पकड़ नै आप की झोली मैं गेरलीनी। हर चाल्यो पड़ो चाल्यो
चलो आप रो उजाड़ बीयाबान में आप रै एक धूणों पर गयो हर बठै बीं नैं आप की चेली
बणा लीनी। सो थोड़े दिनां तो बीं नैं आप की धूणी परा ही राखी हत हरजर है मैं बेरो
पाछी माग लागा हत बठै रहवरां मैं बिलबा लागा स्याय। तो मैं चेली बिना तो बैठूं
बूढ़ै को मेरी सेवा टहल फेर कुण करसी? मैं तो निठी या बिद पीयी हैं। सो बीं नैं मेरी
हिवलास हिवलास सा पक्की कर लीनी हर फेर बी नैं गांव मैं भिख्या मागवा भेजणवी
लाग गयो। हा ऊँ नैं या बात समझा दीनी हत आपणी धूणी सूं गांव मैं जावां जद
मूं आगै तीन गैला आवै है। सो तू बांवै गैलै बी मागवा जाये, डांवै गैलै बी भिख्या मागवा
जाये। पण बिचलै गैलै मत जाये क्यूं कै बिचलै गैलै जाणो हूं गेलो कै ऊपर ही है सो पैलां
बाँ को खुद ही को घर आवै हो। सो जोगीड़ै देख्यो हत जे या बी गैलै चली गई तो ईंका
घर का मां हूं कोई न कोई मिल ज्यावैगो हर ईं नैं पिछाण लेगो हर ईं नैं घरां ही राख
लीजां। सो वा ओरी दिनां तो बड़ै बांवैं गैलै गाली हर कदे भिख्या ल्याबा नै डांवै गैलै
जाती। तो यूं करतां करतां कई दिन बीत हो गया। सो एक दिन ऊंना बिचार कर्यो हत

बाबा जी कया करै हैं कै बिचाळै गेलै मत जाये तो आ कै ए दिनाँ बिचाळै गेलै चाल पड़ी तिसरयाँ। बींनै कै ठा है? सो बा बिचाळै गेलै चाल पड़ी। सो चालती चालती गाँव कै भीतर बड़ी तो पैली पोळ आँ बाई ही घर आयो। घर बा बिछुण्या लौंवड़ा नैं सीदी घर कै आंगण में चालती हुई घर सो गीत गावा लागी - "है नणदल मो बाई मोती चीसरी है गाई! कोई नणदल रोवो मोती, मो बाई मोती है गई! भावज नणदी घर आ की [illegible] आई है गई! बूड़ी जोगी जी आयो नणदल नैं लेगो है गई! बा घर घर फिरै मांगती, बाई टुकड़ो खो है गई!" जद यो गीत सुण्यो तो बाँ की मा बीं री अवाज पिछाण लीती। हर बा झट घर माँ हूँ भागती भागती उठ कर आंगणैं में आई। आगैं आ कर देखै तो या तो आप बाळी ही लाडली बेटी है। तो झट आ कर हाथ पकड़ लियो हर या बुणा है? मिलकली! कै हाँ! हर तूँ कठै गई ही? हर मनै तो घूं भाजी लोगी नैं ले र नैं सनै मैं छोड़ कर आ गई। कठूरै में बो डा बठै तो [illegible] मोती ही मोती बीणया हर भाबी खोड़ी बठै ही मोती ही मोती बीतरी। जद भाबी मनै बोली हर तूँ तेरली मनैं दे हर मेरी [illegible] तूँ लेले। तो मैं मेरी मोतियाँ री [illegible] भाबी नैं खोती ही। तो बा मेरयर नाराज हो कर मनैं तो हथा पकड़ कर ताकै फींक दीनी हर मेरै चोतियाँ नैं भी उठा कर दूर बगा दियो हर आप मेरली [illegible] करदी मोती खोदबा लाग गई। तो फेर बीं [illegible] मोती तो रोती बीमस्या हर कोरी माटी ही माटी बीतरी। जद भाबी मेर [illegible] नाराज हुई। बा आप कर देख्यो तो माटी हूँ भर कर उठा लियो हर मनैं मेरी चोतियो सोती उठवाओ। मैं हेला मारती ही रैगी। मैं ठू हूँ एक [illegible] की जमात आई तो मैं बाँ नैं कयो हर बाबा जी! बाबा जी! मनैं मेरी चोतियो उठाबो। तो आगलो बोल्यो हा मेरै हूँ गैलड़ो उठासी। बीं हूँ गैलड़ो बोल्यो मेरै हूँ गैलड़ो उठासी।" ईं तरियाँ सारी जमात बठै सूँ नीसर गई हर मनैं कोई भी चोतियो रोती उठायो। तो सैं सूं गैलड़ो गैड़ एक बूड़ो ओड़ सादू आयो। मैं बीं नैं भी बोली हर बाबा जी! बाबाजी! मनैं मेरी या चोतियो उठावो।" तो बो मनैं बोल्यो हर उठाऊँ बाई।" हर बो मेरै नेड़ैं आ कर मोतियाँ री भरयो चोतियो तो आप री झोळी में एक न्हांक गेर लियो हर मेरी बाँ पकड़ कर झोळी रै छोरै नाँ दें [illegible] दीनी। मैं रोती कूकती बीं री झोळी में चाली बीं रै लारै ही एक उजाड़ बीयाँन में चली गई। बठै बीं आप रै झूंपड़ा पर जा कर मनैं झोळी माँ हूँ काढ़ी हर आप रै बठै भूला कर बई दिनाँ ताँणी राखी। जद बीं रै [illegible] हुकलो ईं छोरी नैं झोळी रेरबा आवै गाँव में झोळी दे कर मैं गी चायो। तो उण मनै थोड़ै जा लैं गाँव माँ हूँ बिछुण्या मारग ल्यो। पण एक बात सही याद राखैलो हर बाँटो गेलै भी आजे हर धोरी गेलै भी आजे पण बिचाळै गेलै मत जाजे। सो मैं बाँटो गेलै ही गई

हर दाँतों गेलैं बी गई पण आज मेरै मन में आई हक बाबा जी हरा बरसाँ कैं हैं देखिया लै गेलै मत जाये। सो बिचलै गेलै में के बात है? आज तो देखां बिचलै गेलै बी चाल कर देखणूं चायै। सो बीं बात नैं बोनूं लगान बेतर में आज बिचलै गेलै आई। आगै आकर देखूं तो पैली पोट आवणूं हीं घर आयो। हर में घर देखकर पिछाण लियो। या सुण कर बीं री मां आप की बेटी नै गलै लगा लीनी हर भगवां गाबा त पैरवा दिया हर न्हुवा धुवा कर चोखा गाबा पहर लिया। उन्नैं उडीकतां उडीकतां घड़ी दे होगी। काची छाक ढल गई। बड़ी छाक बी ढल गई। सूरज माथा आ गयो हर पीयो बा बखत हो गयो। पण चेली कोनी बावड़ी। जद बाबे जी कै मन में कई स्याणा उलटा सा के बात हुई ज्यो आज इतारो ताँणी चेली आली ले कर कोनी आई। सो बो एक बर तो सोचै पद बा गाँव कानी देखै हक के बेरो गेलै में आवती होगी। हर एक बर देखली हूं पाछा उतरै। सो यूं उतरतां चडतां बीं नै पीयो ढल गयो हर तीसरो पहर हो गयो। जद उँबा हरै हक हो न हो चेली तो कठै न कठै जरूर उलझ गई। नहीं तो बा इतरी देर कदे बी कोनी लगाया करै है। सो उँबा चेली नै ढूंढण को बिचार कर्यो। हर बो आप को तिलक छापा क र पगां में पावड़ी पहर कर हर लाठी ले र बीं गाँव कै गेलै पड़ लियो। आगै सी चेली का पांजा देखिया हर बो जां खोजां सीदो बिचलै गेलै आयो। गाँव में बड़तां ही बूजण ला हक कोई मेरी चेली बी देखी है? कै नहीं भई मैं तो कोनी देखी। तो आगै सी मानुष इकै नै बूज्यो कै मेरी चेली बी देखी है। कै भई मैं तो कोनी देखी। यूं बूजतां बूजतां बठै बीं चेली हाली घरां पूंच्यो हर बठै बांलै ना कर बूज्यो कै भई मेरी चेली बी अठै आई है? तो बीं चेली रै मा कयो कै हां बाबा जी आई। थे थोड़ी देर अठै आराम करो मैं थारी चेली नै थारै कनै बुला देस्यूं। तो बाबा जी तो पोळी में बैठ गयो हर बीं एक खाड खोद कर बीं में लकड़ी गेर कर आग लगादी। हर जद लै लकड़ी बळ कर खीरा ही खीरा हो गया तो बीं पर काचो सूत को ढोलियो घाल दियो हर ऊपर चादर बिछा कर बाबा जी नै कयो हक बाबा जी आओ थे मोजिला कर लेवो। इतरै में थारी चेली बी आ ज्यासी सो बाबा जी मालिक का मूलो भीतर घर में चाल्यो गयो। बठै बाबा जी नै कयो हक आप ई ढोलिये पर बिराजो हर मैं आप कै वास्तै चाल लगाऊं। सो बाबा जी मद जाक बीं ढोलिये पर बैठ गयो। तो ढोलिये कै काचै सूत तार बीं कै ऊपर बैठतां ही बीं कै बोज नै न झेल कर तड़ देती टूट गया हर बाबा जी धररर धम देती बीं खीरां भरे खाड में जा पड़्यो हर बळतै हूं मुं कर भूगड़ो भूगड़ो हो गयो। अंयां बाबे जी नै तो बगात में गेर कर हक बाकड़ा मालक नै फळसै में आही तो गाड दीनी हर सिर सेर बाजार गाल दियो सो आतांक मारणसां ठेकर मारदी। हक जे कोई छोटी नणद नैं हलावैगी तो बीं की भी या दसा होसी।

न्याय -

अेक गाँव हो। जीं में च्यार भायेला रैता। एक साहूकार, एक कायथ, एक सुनार हर एक रजपूत। वै च्याऊँ ही धापते घराँ रा हा। सो वाँ रै न रोटी री चिंता ही न कपड़ें री। वै सारै दिन हर सारी रात एक जगाँ बैठता, एक जगाँ उठता, एक जगाँ सोवता, एक जागता एक जगाँ खाता हर एक जगाँ पीता। वै चारों मेर भटकता, जाणे आँदी आतो चाये ओला पड़ो चाये बीजली पड़ो पण आँदी चूकै मेह चूकै तो भी वै एक जगाँ भेळा होणों में कदे भी कोनी चूकता। सो यूं करतां करतां दिन बीत्या, मास बीत्या, म्हैनां बीत्या, बरस बीत्या पण वाँ री चोकड़ी तो कोनी टूटी। वाँ रा ब्याव हो गया, भूवाँ आय गई, टाबर टीकर भी हो गया पण वाँ रो मोह घर में कोनी पड़्यो। तो एक साल देस में काळ पड़ गयो हर सारी पिरजा दुख पावण लागी। नाज री तोड़ो आ गयो। घास पानड़ै रो तोड़ो आ गयो। ढाँगर ढोर से भूखाँ मरता मरै लागा। नाज रै बेवै माणस तड़पड़ावै लागा। तो इब या हालत देख कर वाँ भी च्याराँ बिचार करयो हक आपाँ नै अब ठाला बैठ्याँ कोनी सरै। क्यूँ न क्यूँ कार रुजगार जरूर करणूँ चायै नहीं तो अब घर रो काम चालणूँ भोत ओखो है। सो यो मनसूबो कर कर वाँ परदेस जाणे रो पक्कौ बिचार कर लियो। हर आप आप रै घराँ हूँ च्याराँ अेक अेक लाल लेली। हर इब वै धर कूचाँ धर मजलाँ चालता रा देली साँकड़ी करी हक बठै हूँ क्यूँ सामान भर कर हर देस में ल्याकर बेचस्याँ जी हूँ घर रो आगो भी चालस्याँ हर मूळ भी ज्यूँ रो त्यूँ पड़्यो रैसी। सो आमाँ रा आम हर गुठल्याँ रा दाम हो ज्यासी। पण भाग रो चक्कर अठै बिच में आ पड़्यो। हुई या कै वै च्याऊँ जद दिल्ली रै साँकड़ै पूग्या तो अेक दिन जंगल में ही वाँ नै दिन छिप गयो क्यूँ कै वै पैली रै मजलाँ में दिन छिपे पछै लोग गैलै कोनी चाल्या करता हा जठै दिन छिप ज्यातो बठै ही डेरो डाल देता। यो वाँ रो नेम होतो। सो भी च्याऊँ जठै ही रोही में एक ऊँची सी टेकड़ी देख कर बीं पर डेरो डाल दियो। हर रात रात रो बखत बठै ही काटणूँ चायो। तो वाँ रै करी हक रात रो समै है ओर जंगल रो मोको है सो रात नै बारी बारी च्याऊँ जणाँ पैरो लगा ल्यो। तो पैली पहर को पैरो तो साहूकार ले ल्यो। हस पैलो पैरो क्यूँ आसान रै जो सो बो तो मैं दे ल्यूँगो। दूसरी पहर रो पैरो कायथ ले ल्यो हक यो मैं दे लेऊँगो। तीसरी पहर रो सोनी ले ल्यो हर चोथी पहर रो रजपूत नै दियो। तो पैली पहर रै पैरै पर तो साहूकार बैठ गयो हर बाकी रा तीनूं सोय गया। पैली पहर खतम होतां ही ऊँण कायथ नै जगा दियो। सो दूसरी पहर कायथ पैरो दियो हर टेम पूरी हुई जद ऊँण सोनी नै जगा दियो। सोनी बैठ्यो हो हर ओर तीनूँ जणाँ सुख हूँ सूत्या पड़्या हा। तो सोनी रै मन में पाप जाग्यो हक अेक लाल तो हूँ मेरै घरां हूँ ल्यायो हूँ हर तीन लाल आँ तीनाँ कनै है। जो जे आँ हालै भी तीनूँ लाल मेरै हाथ आ-

२- मनोहरलाल स्वामी, मोड़ीन्दा से प्राप्त.

ज्याय तो मौज हो ज्यावै। एक लाल को मोल एक लाख रपिया है तो च्यार लालाँ को मोल च्यार लाख हो ज्याय। हर यो इतणूँ धन तेरी तो सात पीडी में की थानी हुई। सो जे होय तो तूँ आँ हाली लाल चोरले। आँ नै के बेरो पड़ै है क ई लाल चोरी

है! रात नैं च्याऊँ जणाँ न्यारी न्यारी पैरै पर रैसी। जे वो तो जाणसी क बो चोरी है हर जो जाणसी क बो चोरी है। तेरै अेकले पर ईंण भैंम करै है! सो या सोच कर ईंण बाँ तीनवाँ कै पगड्याँ कै पल्लाँ कै जो लाल बँधा री ही वै खोल कर गुपत की हर अब आप को पैरो खतम होताँ ही ईंण रजपूत नै जगा दियो। रात कै चौथै पहर रजपूत आप कै पैरै पर जा जबो हुयो सो भाव भलै कै ताँणी पैरो देतो रयो हर जद दिन उग्यो तो झट ईंण तीनूँ सूसोड़ाँ नैं बी जगा दिया। कहीनैं नई दिन उग आयो है सो उठ खड्या हुवो हर आप आप का गाबा लत्ता सँभाल कर त्यार हो ज्यावो। म्हैं आगलै गाँव का गेलो साँकड़ो करौं। सो बै तीनूँ उठ कर पैली पोत पगड़ी ही सम्भली तो पगड़ी कै पल्लाँ कै झूठी गाँठ लाग री। तो बो तो बोल्यो क मेरी लाल खोगी हर बो बोल्यो क मेरी लाल खोगी। तो बो तो बीं कै मूँ कानी देखै हर बो बीं कै मूँ कानी टुगर टुगर देखै। पण इब कूँण सो कीं को नाँव लेदे। क्यूँकै पैरो तो न्यारी न्यारी च्यारवाँ लगाया हा तो कूँण जाणै कीं री लाल कूँण लीती हर सै की लाल एक जणाँ ही लीनी। ई बात को कीं नै ठीक पड़ै? तो बाँ च्यारवाँ ही यो बिचार कर्यो हस आपाँ नै इसी न्याय करणी चाये क आपणी लाल बी लाद ज्याँ हर लाली की ई न्याय सोजे कोई का पड़दा फास हो गया हर यारी में फरक पड़ गयो तो ठीक नहीं क्यूँकै काल को काम है हर मितव की मन है सो चाल न्याय हर चाल न्याय। तो बाँ च्यारवाँ मिल कर बिचार बाँध्यो क आपाँ दिल्ली सारा जणाँ मिल कर चालस्याँ हर बठै बादस्या बीरबल है सो बाँ कनै हूँ या न्याय करवास्याँ - "ऐसी न्याय करो मेरा भाई, ल्होदें लाल रैहै मितराई।" सो बै सब बादस्या की कचेड़ी नै ध्या दिया। सो चाल्या चाल्या चाल्या कथक्या सीदा ठेठ दिल्ली पूँच्या हर बठै बूजता बूजता सीदा बादस्या की कचेड़ी गया। हर बठै जाय कर उणाँ दुहाई घाली क हे राजन पतराज, दीन दुनी का बादस्या, छोटी खुदा, जीव की अम्मा पावाँ, म्हारो बी एक न्याव करणूँ चावै हर न्याव बी इसो करणूँ चावै कै 'ऐसी न्याय करो मेरा भाई, ल्होदें लाल रैहै मितराई।" हस च्यारवाँ की लाल बी आ ज्याय हर मितराई बी रै ज्याय। बाँ की दुहाई सुण कर बादस्या बाँ नै आपकी कचेड़ी में हाजर बुलाया हर बाँ नै कही गई क भई थारै के दुख दरद है सो खोल कर सुणावो तो बाँ हाथ जोड़ कर अरज करी कै सिरकार! म्हे च्यार जणाँ च्यार जात का हाँ, फलाँणो गाँव का हाँ हर लँगोटिया यार हाँ। म्हारै हाथ में काल पड़ गयो सो म्हे च्यारूँ एकेक लाल सागै ले कर बिणज करबा

आरै परदेस आवै हा। गेलै में एक जगाँ म्हां नै दिन आथण गयो हर दिन छिपे पछै गेलै चालणूं मना है सो म्हे च्यारूं जणाँ जंगल में एक ऊँचो टेकड़ो देख कर बठै डेरा डाल दिया हर रात रात तो अठै ही वासो लेस्याँ हर दिन उगे आगलै गेलै लागस्याँ। पण रोई में जीव को जिनावर को, नारदो बघेरे को, चोर को चकोर पूरो डर भी रवै है सो म्हे यो विचार करी करयो हर आज की रात च्यारूं जणाँ बारी बारी अेकेक पहर पैरो लगाले। सो ई तरीकैं हूँ च्यारूं जणाँ सोय बी लेस्याँ हर पैरो बी लाग ज्यासी। सो च्यारूं जणाँ बारी बारी पैरो बी दियो हर रात नै तीन तीन पहर सोया बी। म्हारै च्यारवाँ कै पगड़ी कै पल्लै च्यारूं जणाँ की अेकेक लाल बँध री ही। सो न जाणै म्हारै माँ हूँ कुण से खोल कर बै लाल चम्पत करी। क्यूंकै पैरो लागताँ थकाँ दूसरो तो कोई चोर-चकोर आ कर म्हारी लाल खोल कर लेज्याय सकै नहीं। बीनै यो के बेरो पड़ै हर कै आँ कै कनै लाल ही हर बै आँ की पगड़ियाँ कै पल्लै बँध री ही। आँ लालाँ को भेद तो म्हाँ नै ही च्यारवाँ नै हो हर घर को भेदी लंका ढावै सो यो काम तो म्हारै माँ हूँ ही च्यारवाँ माँ हूँ कोई लै नै कोई सैं को करयोड़ो है। सो म्हे अब या चावाँ हाँ कै म्हाँ नैं म्हारी लाल बी ल्हाद ज्यावै हर चोर की चोड़ै न आवै क्यूंकै चोर चोड़ै आँवण हूँ म्हारी मितराई में फरक पड़ै है। सो "अैसो न्याय करो मेरा भाई, ल्हादै लाल रहै मितराई।" तो या सुण कर अकबर स्या बादस्या बो चितराम को होग्यो हर बिना चोर को बेरो पड़े लाल की ल्हादणूं भोत ओखो है। सो बो या अरज सुण कर बाचाबन रै ग्या। हर सारी कचेड़ी में जितरा राव उमराव बैठ्या हर बै बी सै या अरजी सुणता रै ग्या। हर इसी न्याय न तो आज तक सुणी हर न कदै आँख्याँ हूँ होताँ देखी। तो बादस्या बीरबल नै कही हर रै बीरबल! तो बीरबल बोल्यो हाँ, जहाँपनाह! कि थे ही इन का न्याय करो। तो कही आँ का यो न्याव तो भोत मामूली है। मैं अपणो आप ही न्याव चुका देस्यूं। आप आँ कै न्याव वास्तै हूँ खातर जमा राखो। हर बाँ च्यारूं भायेलाँ को न्याव बीरबल आप पर ओर लियो। बाँ नै डेरो दिवा दियो हर बाँ कै खाबा पीबा को बी परबन्ध बान दियो। हर बै बठै आप का मजैं हूँ रै लागा। रैताँ रैताँ एक दिन होग्यो दोय दिन होग्या, च्यार दिन होग्या पण बाँ की न्याय तुरत कोनी हुई। जणा बै उतावल करबा लाग गया हर म्हारी न्याय बेगी होणी चाये क्यूंकै म्हे देस छोड़ परदेस में बैठ्या हाँ हर म्हे जीं काम खातर आया हा बो काम म्हारो यूं को यूं पड़्यो है। सो जे म्हारो काम करदे तो न्याय तो म्हे म्हारै पाछै पुगनो लागाँ। उन्नै बीरबल बाँ नै कहबो करयो हर थारो न्याव आज करूँ तड़कै करूँ हर बाँ हूँ दो च्यार दिन में ही गैरी मुलाखात करली हर बाँ में खूब हिल मिल ग्यो। सारै सारै दिन हर सारी सारी रात बाँ कनै बैठ्यो रै खूब चौपड़ पासा खेलै हर खूब हँसै बोलै। मतलब यो कै बीरबल बाँ नै आपसकै ड़ाकर लिया हर बाँ की बीरबल हूँ सरम लाज खुल गी। जद बीरबल बाँ नै चोकस पिछाण लिया

तो अेक दिन वाँ नै आप कै घराँ भोजिन रो न्यूँतो दियो। बिरै बिरै रा भोजिन त्यार करवायो। हर वाँ नै आप रै हाथ हूँ खूब रैंजा रैंजा कर जिमाया। जीम जूठ हर पान बीड़ा चाव कर जद बै पूठा उरै नै आबा लाग्या तो बीं बगत बीरबल आप रै कमरै में चोपड़ माँडी हर या कुहाई हक थारै न्यारै जणाँ रै लागै तो मैं चोपड़ सदा ही खेलूँ हूँ पण आज तो थारै नालाँ हूँ एकेक हूँ न्यारी न्यारी चोपड़ खेलस्यूँ। तो वाँ भी हरी हक हाँ खेलो।" तो बीरबल पैली तो आप कै पास चोपड़ खेलण खातर साहकार नै बुलायो। जीम जूठ कर पाँन बीड़ी रन्नै कर दिया हर सोनै री स्पार हर रूपै कै पासाँ हूँ दोनां खेलण लाग गया। सो रदे तो बीरबल रा तीण काँणाँ हर साहकार रा पो बारा पच्चीस हर रदे बीरबल रा पो बारा पच्चीस हर साहकार रा तीन काँणाँ। सो खेलताँ खेलताँ रई देर हो गई हर बाजी गैरी घुल गई ऊं बखत बीरबल बीच में एक बात छेड़ी। हक साहकार! आज तो मैं तन्नैं एक बात रो न्याँनूँ बूझूँ? तो साहकार बोल्यो, हक एक रो नहीं दोय रो बूझो फिकर। तो बीरबल हाथ हूँ तो पासा गेरै हर मूँ हूँ साहकार नै बात कै। साहकार हूँकारा दे। हक एक गाँव हो। बीं में दो लोग लुगाई रैता। जात रा बै म्हाजिन हा। वाँ कै घर में अन धन हर लाव लिछमी री तो रामजी री दीनलाग री ही। जगाँ री जगाँ सै बाताँ रा आगड़ा ठाठ हा। पण एक बात री कुमी ही हक वाँ कै पुतर कोनी हो। बै दोन्यूँ निपुता हा। वा जप तप हर तीरथ बरत करया तो बुढापै में वाँ कै एक पुतरी हुई। वाँ बी रा घणें लाड चाव हूँ पालण पोसण करयो हर जद पैरी रात आई तो मोकलो धन दायजो देकर ब्या मुकलावा करया। हर वा आप रै सासरै आँणी जाँणी हो गई तो करणी मालिक री हुई हक एक बर वीं नै लेबा आरै वीं रो घरवालो धणी आयो। मा बाप दोन्यूँ बूढा हो गया हा। तो वाँ या देखी हक आपणूं तो पाछलो नाको साँकड़ै आ गयो है सो आपणैं कन्नैं जो हीर जुवारात है सा जो आपाँ आपणा हाथाँ नै देवाँ तो ठीक रैवै सो वाँ आप री बेटी जँवाई रो ऊँट धन दौलत हूँ लाडो भर दियो हर वाँ नै बिदा कर दिया। बै चाल्या पकया चाल्या थक्या आप रा रई दूर आ गया तो गेलै में वाँ नै अेक बड़ो भारी तलाव आयो। तो साहकार रो देख कर बोल्यो हक आपाँ ई तलाव पर न्हाबो धोबो कर लेवाँ। तो वरी कर लेवो। तो ऊँट बठा कर साहकार री नैं तो ऊँट कन्नैं बठा दीनी हर आप न्हाबा खातर ऊं तलाव में बड़ गयो। बो तलाव रो एक चक्कर काट आयो, दूसरो काट कर आ गयो हर फेर तीसरो काटबा लाग्यो। साहकार री वीं नै भोत रोक्यो, पण बो कयो। बो मान्यो। तो अब काटै जद बो अद बीच में गयो वीं बगत वीं रा साँस टूट गयो। वीं घणी ही हाथ पग पटकाया पण घाट पर कोनी पूँच सक्यो, हर अद बीच में ही डूब गयो। हर बठै उजाड़ बियाबान में साहकार री ऊँट री मूरी पकड़्याँ अेकली बैठी। वा घणी ही रोई कूकी हर घणाँ ही सिर माथा फोड्या पण कै जोर चालै हो? थोड़ी देर में बठै एक लाकड़हारो अ

बो बठै रात री रात लकड़ी बीणबा आया करतो हर मण भर रो भरोटो बाँध कर बनैं लागतै सैहर में बेच कर आया करतो। दोरों सोरों लकड़ियाँ रा रहै दो च्यार पीसा उठता हर बीं रै घर में नाज दै सेर लागतो। लूँठै टाबरी तो बीं रै ही मोकली हर कमाबाळो हो बो अेकलो। सो बो रात दिन धोळै बळद री नाईं भागतो पण तोबी बीं नै पेट भराई री रोटी कोनी मिलती। हर बो करजै पर करजो काडतो। घर में तो गाडा दाळद रो। सो आज बीं नै बन में आबा री सी बीजळी हर रोली री सी भळ सबा लो लाखां बरस री साऊकार री बेटी अेकली बैठी ल्हादी हर ल्हादो बीं रै सागै धन दौलत हूँ लदोड़ो ऊँट। सोचा माया जे बो लकड़ारो लेले तो बीं रो दाळद तो गैल री गलियाँ जाय हर बीं री सातपीड़ी ताँणी बी ऊबा रो टा रा खाताँ निसरताँ धकाँ बी छे रोनी आवे। साऊकार री बीबी बीं नै देख कर घूगाबै लागी हर मेरै में तो यो मूँडो दुख आ पड़यो हर मैं अठै उजाड़ बण में एकली लुगाई री जात के करूँ? कठै जाऊँ? नाँव जाणूँ न गाँव न पीरसासरै रो गेलो जाणूँ सो हे मानवी! मैं तो अठै तेरै छारै हूँ। तेरी गत सो मेरी गत। या सुण कर लकड़ारै कयो के तूँ मेरी धरम री पुतरी है। तूँ कोई बात री सोच फिकर मत करै मैं तनैं तेरै ठोड ठिकाणै घाल देस्यूँ हर जो थारै में भगवान दुख गेर दियो बो तो मेरै बस रो कोनी। बातकाढ़ाई अंधर ये हैं हर बो बीं साऊकार री बेटी नैं हर बीं रै धन भरे ऊँट नैं चोखस मोल री बीं रै पीर घाल्यायो। जे बो चावतो तो सारो धन हर लुगाई राख सकै हो पण बीं रै तो एक पीसै हूँ बी ललाक लागै ही। पाछी रा पाँच सात दिन बीं नै बीं कै साथ आताँ जाताँ लाग्या हर पाछी रो घर रो काम पक्यो। टाबर भूख मरता कड़पड़ा बै लाग्या हर बो ज्यो दो च्यार पीसा रोज री कमावतो बै बी रुक गया। इबलो हर दो साढ़। ई पर साऊकार कै हाथ हूँ एक नाके तो पाला पड़या हर दूसरै नाकै मूँ हूँ यो बचाव निकळ पड़यो भलो आदमी हो बापड़ो।" बीरबल री परखना पूरी हुई चोपड़ री बाजी खतम हुई हर साऊकार उठ कर बायर आयो। इब बीरबल कायथ कै नैं बुलायो हर चोपड़ खेलताँ थकाँ बैं ही बात री दुसरावण करी। हर कायथ बी या ही कही हक बापड़ो भलो आदमी हो ज्यो दूसरै रै दाव में पड़यो।" इब रजपूत नैं बुलायो हर बीं रै सामनै बी बैं पाँ ही सारा नेग चार करया कया हर उण बी यो ही पडूतर दियो हक बापड़ो हसल मा बाप रो बिन्द हो ज्यो पराये दुख में पड़यो। इब तीसरो रजपूत बो आप री चोपड़ खेल कर बायर आयो हर इब सोनी रो भीतर गयो। सोनी रै सागै बो बीरबल बै रा बै नेग चार करया हर सोनी हड़क न भड़क या तो उठ्यो हक 'साळो बाड़ रो। नहीं बीं नै तो आप री लुगाई कर लेतो हर धन दौलत आप रै घर में गेर लेतो हर खूब भोगतो बिलसतो पण उण तो घर आई लिछमी नै पाछी फेर दी।" या सुणताँ पाँण ई बीरबल सोनी रो फूँचो पकड़यो हक या तो तो चाऊँ लाल कुरैधारे नहीं तो तनैं घाँणी में ही पिलवा देस्यूँ। या सुण चाऊँ लाल बीरबल नैं देदी हर बीरबल दूसरै दिन च्यारुवाँ नै भरी कचेड़ी में बुला कर एक लाल पकड़ा दीनी हर बे च्यारूँ जणाँ खुस हो आप रै गैलै लाग्या।

एक बोहरनियूँ हो। बैं कै घर में सो गाड़ा बोहरी कमाऊ बो लखलो हो हर टाबरी
रतणी ही के कारचाँ कूवो गरे। बो रात दिन भाजतो भाजतो को धापतो न, पण फेर
बी जपरलो पानूँ कोनी आवतो हर गंडक जिसी रब नीकलती। जद बो दुनियाँ में हीं जितरी
बातरी बातरी सैं काम कर धाप्यो हर तोबी फेर की हल कोनी नीसरी तो बौं कीलुगाई
देख कर बोली हर औ तो आपणूँ आगो चालै कोनी हर जे थे रखो तो आपाँ
आपणी टाबरी नैं लेकर मेरै पीर चल्या चालाँ। मेरा पीर हाला धापता है सो
बाँ कै सहारै आपणाँ बी दिन टूर ज्याँय। क्यूँ तो आपाँ कमाँवाँ हर क्यूँ आँपाँ नैं मेरा
भाई स्हारो देदीं सो आपणी जावा पल ज्याय। हर जणाँ बै आप आप की सूरत
रत संभालन हाला हो ज्याँय तो आपाँ आपणाँ पाछा ईं घरा आ ज्यावाँ। लुगाईयाँ धन
हैं, बड़ो होताँ कै बा लागै है? जद बोहरनियूँ बोल्यो हक "ना, इसो काम आपाँ तो भूलकर
बी कोनी करोंं, क्यूँ के जे आपाँ तेरै पीर चल्या चालाँ तो आपणूँ कुड़मो घाँणी हो ज्याय
क्यूँ के जे औ टाबर आपसरी में लड़ैंगाँ तूँ आँ नैं मारैगी हर जे औ तेरलै भायाँ हाला
टाबराँ हूँ लड़ैंगाँ तो तूँ आँ नैं मारैगी हर जे तेरै भायाँ का टाबर आँ हूँ लड़ैंगाँ
तो बी तूँ आँ नैं हीं मारैंगी। सो टाबराँ का तो मार मार की तूँ घेटलो काड गेरैगी
हर जद टाबराँ नैं मारता देखूँगो तो एक दो बर तो मैं तन्नैं बरजूँगो हर फेर मेरै हूँ बी
कोनी रयो जायगो सो मैं तन्नैं मारूँगो। हर जद तूँ बारघो ड़ो घालैगी तो तेरला
भाई भाज भाज आवैंगाँ सो तन्नैं ठोकतो देख की बै मन्नैं कुटैंगाँ। सो हाँ,
तेरलै भायाँ की तो क्यूँ ईं कोनी बीगड़ैगो हर आपाँ हीं आपाँ सैं कुर ज्याँगाँ
हर आपणूँ कुड़मो- घाँणी हो ज्यायगो। सो तेरै पीर में रहकर जीवणैं हूँ औ भूखाँ मरणूँ ही
चोखो है। नोट- राम निवास जी बैद के भाई के प्रात.

बोहरो हर उधारियो-

एक गाँव में एक हटवो हो। बो इसो करड़ो आदमी हो कै रोकड़ी दामाँ तो चाये बैं हूँ कोई
हजार रिपियाँ की चीज लेल्यो पण उधार बो एक पीसै की बी कोनी करतो। बैं हीं गाँव
में एक उधारियो रैतो। बैं को यो पण हो कै उधार तो बौं नैं चाये कोई हजार रिपियाँ की
चीज पल्लै घाल दो पण रोकड़ी दामाँ बो कीं नैं चीतारामी बी कोनी देतो। एक दिन बौं
उधारियै कै घर में नाजनीमड़ ग्यो। तो उँण देखी इस नाज तो ल्यावणूँ जरूरी है हर गाँव
में जितणाँ बोरा है बाँ हूँ सै हूँ उधार नाजपात अगाऊ ले राख्यो है सो इब कोई करणूँ चा
तो उँण सोच विचार कर यो विचार के- रायो इस आज तो बैं हीं हटवै के चाल कर अकल
लड़ाणी चाये। हर बै आप को लेकर पछेवड़ो हर बैं हीं दुकान पर पूँच्यो तो आगो हटवो देख
बोल्यो इस आवो भाई जी, आप नैं के लेणूँ है? तो कही हक लेठ मन्नैं तो दो रिपियाँ की बाजरी
ल्यावणूँ है। तो कही आवो आपणी दुकान पर बाजरी देखो हर दो की ले ज्यावो, च्यार की ले ज्यायो मरज

रोप उतणैं री लेज्यावो। जद उठांरियो बोल्यो है सेठ, मन्नैं किसो नाज उधार थोड़ो ही लेणूं हूं? मैं तो लोकड़ी रिपियाँ ल्यायो हूं जेरी हैं आप रो सरण सरण करज्यो सो सारै बजार में फिर री हर चोखो नाजसो लै दुकान हूं ल्यूंगो। लोकड़ीयाँ री नाँव सुणतांई सेठ जी और भी ललचाग्या इस बूंणी री बखत है सो दिनगे पैलाँ री चार री बिक्री बढ़े तो ल्याग तो जीर है हर या भलै हूं भेरा 'उजणी नहीं चाये सो सेठ जी भाज री दर हैं बीं री कागद माँलो पछेबड़ो पकड़ लियो

लाज नै धोळत म धोळत देख कर मा पाटगी.

नोट :— हनुमान दास स्वामी, रतन शहर से प्राप्त.

"बूढै बारै ब्या"

. सो बो कुण पावै लागो. अर उण सोच कर विचार कान्यो हर दूसरो ब्या करै बिना भिखारी रोनी-तो उण आप कै घर बामण नाई नै बुला कर कयो हर यै तो ल्यो २५. २५ रिपिया हर दुगाणी धूंगो थांनै फेर. जे थे मेरो ब्याव सारो दियो तो थारै खीर खांड हूं मूं भरूंगो. जोशी जी एक छोरी मेरै खातर होड कर आवो. आगला रिपिया जापे जितरा ही लेवो. रिपियां वांनी हूं वाची मन ल्यायो. राम आपां मूं मांगा ही देवांगा. गैणूं आपणै घड्यो घड़ायो ह, गैलड़ी रो त्यार पड़्यो है. पण थैं यां नै यो कर कर काम फेस पाड़ो. या सुण कर मिसर जी हर नेवगी जी की मूंछां पर ताव दियो हस कई दिनां हूं हाथ पर हाथ दियां घरै ठाला बैठ्या हा. सो आपणी बीनारण चोखी सुणी. घी कै कूंपै हूं लागगी. पांचूं आंगळ्यां घी में हर सिर कड़ाई में. चोखै चोखै लाडू पर तो पड़ैगा फिरस्यां. गांव गां की सैल करस्यां हर दो टींगां घी हूं चोखा रोटा पाड़स्यां. सो सबै राम दे तो पावै. हर उणां आप की गुदड़ी गोळ करी हर सेठ जी हूं खरचो लेकर भीर पड़्या. सो एक गांव हूं दूसरै गांव हर दूसरै गांव हूं तीसरै गांव चौथलै में सपाटा मारण लागग्या. सो जठै जाय बठै ही दो दो मांचां पर तो कमर खोलैं, चोखा चिलम तमाखू पीवैं हर घरां हूं भळेरी रोटी खाय. सो फिरता र कई दिन हो गया तो सेठ जी को फेरा पड्यो हर बै मुड़ कर पाछा घर नै आया. सारी समन बातां सेठ जी नै अरज करया. हर सेठ जी को चोखा दिन काढी कर थान बैठ गया. हर थान बराबर बणा कर ल्यो कर ल्यायाया.

दी फेर म्हेड़ो कर कर आँखाँ जाँणे की बीनणी की आँटकी खोल दीनी. अर इण सेठ जी पूरा पूरा घर जारी लग गया. पण बीनणी जुवान हर सेठ जी बूढा. सो बीनणी की रू सेठ जी हूँ कोनी मिली. सेठ जी घणाँई बीं नै इद पताशा पोवै, घणाँई खोपरा खुवावै घणाँ-ई सेला गाभा पहरावै, घणाँ ई छाबिया करै, घणाँ ई हथ हथे-ल्याँ पर राखै. पण बीनणी रो जी सेठ जी में कोनी पड़ै. जणाँ सेठ जी एक दिन विचार करयो हस के बात है कै मैंन करणा हर जितणाँ जतन करलिया पण तो भी बीनणी रो म्हारै सागै जी-जोग कोनी मिल्यो. सेठ नै विचार करतौ करतौ आ कै या समज में आई हक मैं तो बूडो हूँ हर या जुवान है. सो ई वास्तै म्हारो आपस में मेल कोनी खाय. सो यो मेल खुवावा नै म्है जुवान तो हो सकाँ नहीं पण हाँ जुवानाँ कर जिसा लोग दिखाऊ काम कर सकाँ हाँ. तो इब सेठ जी के करी कै जुवानाँ को सो तो भेस बणा लियो. कड़पोताणी रो छुरंगो साफ करतो जैपरया खण्डला बाँधै. लाम्बी बाँटाँ री कमरी पहरै गिरियाँ ताँणी की धोती बाँधै. बूँटेदार जूती पहरै हर मुड़ तुड़ कर चाल चालै. पूँछ मार मार कर पग मेलै हस धरती पैरसी सरक ज्याये अब छैलो पाव धरैगो. बोरगत कै काम दूर दूर का गाँवतर करै हर रात पड़े घरै आवै. आवतो ही खाँवू फाड़ू करण लाग ज्याय हक आज यो मेरै न्हैवण खातर तातो पाणी कोनी राख्यो. हर आज रसोई ठंडी होगी. आज साग में लूँण ज्यादा गेर दियो. यूँ घणाँ नखरा करै अर खाय पीय कर ढोलियै जाय जद सेठाणी नै बिरै बिरै री भादरी की बात सुणावै. हक आज मैं फलाँणै गाँव हूँ चाल्यो तो मनै गैलै में हैदेरो होग्यो हर दो चोर मेरै कनै तरवार लेले कर आया. मेरै कड़ाँ कै ऊँड़ै रिपियाँ री भरी थेली बँधी री. हर मेरै हाथ में एक पतली सी डाँगड़ी. जद मैं गैलड़ै गाँव हूँ चाल्यो तो गाँव का बापड़ा मनै मोत कयो के सेठाँ के रातनै कू वखत इताराँ अेकलो मत जावो. पण मैं बाँ रो कयो कोनी मान्यो क्यूँ कै मेरै गैल की तरली चिन्त्या ही कै जा अेकली मेरै बिना रोय रोय मर ज्यायगी. सो मैं बठै हूँ बिना आगो पाछो देखे ही चाल छूट्यो चालती वखत फेर मनै गाँव का टोक्यो कै थे रीतै हाथ मत जावो

कोई लाठी डीगंरी थारै सागै लेता जालो. पण मैं कदू बी ग्यान गिणती कोनी करी हर सिर हलाय की चाल पड़्यो, हल लाठीडींगरी आपैं ही आगलो आवतो आप दे लाग ल्यावैगो. बैं हाली बीखोगा ल्यूंगो। अठै हूं लाठी को पांतिर बोझ कुंण ढोसैं ? हर मैं गांव नै भीरहुयो. चालतो चालतो जद नंदी कै ढावैं पूंच्यो ढावैं पर झालर बाजगी. झलाई पड़गी हर नंदी कै कछारां में कूंचां की झिरड़ उग री. जठै आदमी ताली बजा कर ल्हुक ज्याय तो ढूंड्यो को पावै नी. सो बीं कूंचां की झिरड़में तीन चोर छिप्या बैठ्या. एक जणूं गेलै कै बांवैं नीचै, एक जणूं डावैं नीचै हर एक जणूं गेलै की गैल पर. सो जद मैं बां रै कन्नै पूंच्यो तो बै चाणचकै एक सागै तीनूं जणां तीनूं नीचां हूं मेरै ऊपर हर पड़्या हस मारल्यो मारल्यो. मैं मेरै ध्यान में घूंगली मारयां बग रयो हो. जे मेरी जगां बठै और कोई होतो तो डरतै री भायपार ल्यातो. पण मैं तो मेरै मन में मांसो भर बी डरो कोनी ल्याय यो हस ये तन्नैं मार लेगा. हर मैं ओसांण पाय कर झट पाछो ओटालियां पैंतरो बदल्यो हर झट एक जांट जा लियो. सो पीठ तो जांट कै पेड़ कै अड़ा दीनी हर मूं बां कांनी कर लियो. मेरै हाथ में बस या बांस की बैतड़ी ही सो ई नै घुमावणी सरु कर दीनी. हर या बैत जों बखत घूमी तो इसी घुमी हस ई को चोफेरै चक्कर बनग्यो. चोरला कन्नैं आवैं हर बां कै बैत कामरीड़ पड़ैं. बै बारी बारी तीनूं जणां सिर हलाय हलाय कर मेरै ऊपर हैंसरड़ी कर कर आया. पण मेरी बैत बां की इसी तप्या जुगत करी हस बां कै डील कै च्यारूं मेर फिर आयी. बां की चामड़ी उधड़ आई हर सारो सरीर लोई-झरांण हो गयो. बां नै घणी ही झालां पर झाल आई. घणी ही बां मेरै ऊपर जाड़ पीसी. घणा ही बां घेरिया घाल्या पण मेरै आगैं बां को कदू बी उठाव कोनी चाल्यो. बै मेरै सागैं कोई पहर छै घड़ी तांणी या धींगा मसती करता रया. छेलै नीचै मन्नै इसी आई झाल हस मैं खींच की म्हारली बैत नै बां मायलै डोम चोर कै नकतोड़ै पर रुकर कर मारी. सो सागै ही तो नाक सागैं ही आंख्यां की मांपुण हर सागै ही कानां की लोल मेरली बैत कै चिपग्या आया. हर बो चोरटो घुगाय कर पाछो भाज्यो कै हे मालड़ी! मरग्या रे.

हर बै दोनूँ जी बीं कै लैरका लैर भाग्या. इस बाँ का बापग छूट गया. हर बै जाँय हीं अछंट. बावड़ कर बाँ तो मेरै कानी आँख उठा कर बी कोनी देख्यो. हर मैं जी बाँ रै गैल पगपोत्या कै चार, मा र- घाऊँ! आयो. जाँण कोर्णं, हूँगो. सो कै तो बै मेरै ऊपर वार बण कर आया हर हर गया तो बै रुका गया कै जाँणूं मेड़ा कै सिर पर हूं संग गया. हर मैं मेरो बैं हीं मदरी चालहूँ झूमतो घूमतो अपणें गैलै लाग्यो. पण मेरै मन में तेमबो मै नइंआ. यो इस लै जिवड़ा तूँ एकलो है हर ये तीन जणां है। सो चालतो र ओठ घरां पूँच्यो. बींनणी जी बी ढ़ोलै री मादरी सुणी. पण बींकै या बात जची कोनी. क्यूंकै बा तो बीं नै चोकस जाणै ही इस मेरी सास सपूती रो छावो इसो है। ऊँ दिन तो सेठ नै रोटी टुकड़ा खुवायो प्यायो. खाटली ढालदी. गाबा लत्ता बिछा दिया. पगां कै मूठी भर दीनी इस इतणूं गीरबो गायो है सो सगलो औलो नहीं जाँणू चाये. हर फेर सेठ जी और बी मोत सारी ठाबरपणें री मादरी री बात सुणाई इस बठै मैं या करी हर बठै मैं या करी. यूँ बात करतां करतां हीं सारी रात नीकल गई. दूसरै दिन फेर सेठ दूसरै गाँव गयो. जद बो जाँण लाग्यो तो बीनणी जी नै कयो कै आज मैं रीतै हाथां, जाऊँ क कोनी? स्यात है बै तीनूँ जणां गस खायोड़ा आज ओरूं मेरै हूँ लड़बा नैं आज्याय. आप बी आवै हर आप कै साँगोपा साथियाँ नै बी ले आवैं. सो आज म्हारो रीतै हाथां जाबो ठीक नहीं. सो थे म्हानैं म्हारी तरवार हर कमरपेटो ल्याद्यो. ढ़ाल बी ल्या देवो हर म्हारो कटारो बी ल्या देवो. मैं सज बज कर जासूं. हर मैरै कनै जे हथियार होय तो तीन तो के मैं तीन सै कै बी सारै कोनी. हर बो तरवार काढ कर बीनणी नै दिखावै. हर आप को बीनणी परेखा गाँठै. कदे तो बो औ सब हथियार बाँध लेवै हर कदे फेर पाछा ही खोल देवै. इस सो दो सै तो बै मेलां दो कर आवै कोनी हर दो बीस कै मैं रीतै हाथां हीं सारै कोनी. सो ओरूं बाँ नै बानड़ै हथियारां नै खोल कर पिलंग पर मेल देवै. सो यूँ करतां करतां कई देर हो गई. हर बींनणी घूंगटै को छल्लो मारयाँ सेठ जी नै निरखै. सो कई देर ताणी तो सेठ जी खोलामेलै में लाग्या रया हर फेर उणां कै करी इस बींनणी नै

क्या कै पे म्हारो । पंसो मत कोरियो. इबोरह जी नो भूखो मरता भूड़रड़ की पालती आप के गेलै माथ पड़ियो हर बांगो लेवी के आगे सेठ जी की लेरो पाड़ खूं वाप इबो पे बिगाड़ के दूर आर हैगो अर ऐरावा दूर आर है जद ना आज दोनों ठेरो पड़ ग्यासी हर बे नैया भेद्पार ज्यारा सो भोग सार झूठो ठग ढोला मारो सो उण वेपरो के झट आप को खाप पोरो हर पोथै मारो है छोड़ी हो गुणीरो, राखो पाछो टूबकी डुबा जग्यो दियो हर फेर आप रो मर गीतां गावड़ो पड़ ग रओ आपको हरा मोटयार बणगी हर हीपकार पातो लागा की आप को मूं डरपाण में डोलियो हरत हवा सेठ जी पिछाणै हर नही । ज्यो कहूं कांग कसर रगी ही वा आँखूं फेर बरली हर एक्दम मरद बणगई हरत सेठ जी लागवै काल में भी कोनी पिछाणता सके । इब आपने तांणी तो पत्री रई अर आपणा हैताई आप की सेठ जी नै लेली अर पड़ी हर सेठ जी के गेले में एक तंदी पड़ी ही सो बों में एक आक के ओलै आक पिछलै नांदै बैठ गई हरत गेले आबालैरो गांज सोठी बीं पर न पड़ सकै बीं नै बैठ्यां बैठ्यां थोड़ी देर हो गई तो के देखै है हरत सेठ जी तावलो तावलो खाबड़ खाबड़ पगां की रेत उछालता हर हांफता पका आवै है । जद उण बा नै इर सैं ही पिछाण कर आप की तरवार म्यांन सैं काड लीनी हर पौरा त्यार होकर जच गई हरत सेठ जी जद कने सा आव तो झट ही बीं पर कूद पड़ी अर झूठी घुरकावणी देही मेर को पागडो हर उगाई पानड़ बोपीसा देसो हो सो खोसल्यूं । इत्तै सेठ जी आपका मन ही मन सोचता बगी हा के आज घरै चालकर बींनणी नै डूंकर की रोब जमास्यां । या कैस्यां हर बा कैस्यां । जद बै चालता र बी आव के कनै आया तो बींनणी झट आप की आक मां हूं मारल्यो मारल्यो करती ही नीकली । हर बिना बात के ही सेठ जी के बांवें गाल पर इत्तो जचायो थप्पड़ कै सेठ जी की धोती ढीली हो गई हर जी जगां छोड़ दीनी । हर सेठ जी की बुरी हालत कै "ओ जी, ठाकरसा म्हैं थारी बाल गाय हूं । मनै जीव हूं मना मारो । जो कुछ म्हारै पास है सो सब आ ले ज्यावो पण मेरो ज्यान छोड़ द्यो । जद सेठाणी बोली के मैं तनै छोड़ तो बोलसी पण जा तेरै गेल के माईं तूं रालो गाय बण जयो । पण य बताय कै तेरै कनै कितोक दाम है ? तो कै सेठ ठाकरां ! सात हुईरे म्हारै कनै तो सुवा पांच रिपिया पागड़ी के पल्लै बंध्योड़ा है सो आप री मरजी होय जा

आप नै नीजरा करयूँ। या सुण र सेठाणी एक घुरकी मारी हर छोड़दे पगड़ी नई तो ज्यांन काढ़ गेरूँगो। बापड़ो सेठ पग धूजै हरी तरफ तिरफ देखै हर कैयो लेयो मेरी ज्यांन बचै। सो सेठाणी पागड़ी उतार लीनी हर सेठ जी चितामें सा खड़्या रह्या। सेठाणी ले पागड़ी र मचकी सो सेठ जी हूं पैल्यां आगे घर पूँची हर आप का कपड़ा लत्ता उतार कर पाछा वै ही जिनाना कपड़ा पहर लिया हर रसोई बणाबा लागगी। सेठ जी की खसकड़ २ करता घड़ी दो ढ़ल्यां गया घरां पूंच्या। आगै सेठाणी बूज्यो के मैं तो थारी ओतचिंत्या करी ये इतरी देर कैठ लगाई। तो सेठ जी बोल्या के बात पूछ मत, आज की बात नैं तो तूं रैबा दै। आज तो मैं कोई थारै सुहाग भाग हूं बच कर आयो हूं नहीं तो मनै बैठे ही मार गेरता। हर इतरी कैय कर सेठ जी टांपड़े पड़ गया। सो सांस पेट में कोनी नावड़ै। सेठाणी थोर पोंबत अंधाई हवा फून करी। ठंडो पाणी ल्या कर हाथ मूं धुवाया हर फेर दीवो जोय कर च्यानणें में देखै तो सेठ जी की पुतलियाँ को रंग फिर्यो है। हर जद सेठाणी बूज्यो के ये आज थे बेहाल कैयां होया हो? जो बात होय सो खोल कर मनैं साची साची कहो। क्यूंके थारै सरीखो मेरै और दूसरो कुंण है? थारै गैल मेरो जीवणूं, थारै गैल मेरो मरणूं। थारै दुख में मैं दुखी हूं थारै सुख में सुखी। तो जो बात है सो थे मनैं खोल कर साच साच कहो। मेरै की जी थांनै देख कर ज्यां छोड़ राखी है। जद सेठ जी जीब नै उपोड़ पणा का कोमी उपड़ै। तिकसी तालवे हूं जीब उपड़ी। हर जद सेठ जी पूछ्या के आज की बात जेठे है बठे ही रैण देवो, थे पूछो मती। आज कोई बे दुरजन धाड़वी म्हांनै नदी में मिल गया। उणां म्हांनै ललकार्या तो म्हे बी की सुणायो हा। तो म्हे बी करड़े पर करड़ो जाब दीन्यूं। बे बोल्या के थे कुंण तो म्हे कही के थे कुण? जणां या सुण हर बे रीसाय कर बोल्या के सावल बोलो आडा मत पड़ो। तो म्हे बी कही के थे बी सावल बूजो आडा मत बोलो। तो बे सावल के बूजां तूं कियो देस को धणी है ज्यो जिकरो दिको बतलांवा। तो म्हे थे कियो देस का धणी हो ज्यो मैं थांने जिकरो दिको बतलांऊं। सो दो बातां हो बातां में म्हारी खींचाताण बढ गई हर म्हे बी बां सूं दब्या कोनी तो बां फेर नै आप का गतवा काड्या हर म्हे उरै नै म्हारी तरवार सूंती सो आमनै सामनै भिड़ गया हर इब बाड्या ली चालबा लागी सो मैं जिकै नै हूं बी का दी ऊपर नै पग। जिकै के हूं बी का दी ऊपर नै पग। सो घणां का बिछावणा हो गया हर मैं मार मार कर म्हेल म्हेल चिणादीती। बां सारा बाणां बजा लिया पण मैं बां की एक बी कोनी

चलण दीनी. पण बै तो घणा तर हा मैं अेकलो हो तो मेरी अेकलै की बाँ कै आगै कै चालै ही. सो अेक आदमी म्हारै गैल हूं आप को वार करयो सो बो सीदो म्हारै सिर पर पड्यो. सिर की पागडी तरवार की धार कै साम्है बेरो कोड पड़ी पण म्हारी ज्यांन बचगी। हर बावड़ की फेर म्है बी की केकर कम कर कही कै जा रै गादड़ा। मा-बाप को नाँव लजा दियो। थारै मा'लै सो धोवा धूल। जे इसल जिंगणी को इद चूंग्यो है तो सामी छाती आव। पीठ पाछै रांडियाँ कै। छपता डोलै छो। सम्हाल। इब म्हारी मेंव छै सो या सुण कर हर उण पग छोड़ दिया सो आगै तो बो हर लारै मैं सो यूं भागताँ भागताँ म्है सारी नदी नै पार कर दीती। बो तो माथा ठोर आगै भाजै हा मैं सैंठेर बी कै लारै। सो भागतो र जद म्है बणी कै सांकडै आयो तो बो कर होली बणी की बणराय में छिप गयो हर म्हानै दिवलो सूँ रह गयो। म्है घणी ही बी नै गाल्याँ काडी घणाँ ही करड़ा करड़ा बोल कया. पण बो तो सुणक्यो न। म्है बोळो मैं इन्नै जिन्नै दिगै बी को पण कयूं ई सुरखोज रो लाद्यो ना। जद म्है हार कर आपणै घरै आय गया. सेठाणी नै सेठ की बात सुण सुण कर खूब हँसी आवै ही पण उण गज भार को धूंगट काड लियो हो जिकै हँसती की होठाँ पर पुरवाड़ी हँसी बी नै कोनी दिखाई दीनी। पण जद घणी हँसी आवा लागी तो बा बोली कै मैं थारै खातर थाल परोसूं सो थे पैलाँ कयूं खावा पीवा को लेवो हर पछै मैं थारै पग चंपी करस्यूं। तो कै ठीक है पण मनैं तो आज भूख कोनी। कयूं कै सेठ जी की सेठाणी कै ओल्हाव को लागो ही भूख बंद हो गई ही। हर पेट में भो को गादड़ो बड़ रयो हो। तो सेठाणी आज ही हाँ घणूं नहीं तो थोड़ो भोत ही खा लेवो पण भूखा तो मत सोवो। कयूं कै भूखै सोवण को लाँछण है। हर बा आलकोले की रसोई मैं चली गई ही कठै खूब खुल कर बक बक हँसी हा फेर थाल परोस कर हर सेठ जी कै पास चोबारै में ले गई। सेठ जी जीमण वाळा बैठ्या पण कयूं भोजन भायो ना। हा दो चार गास लेकर बोल्या हाँ मैं तो धाव गयो क्यों इतरी ही भूख ही। जद बा बोली कै सोच मत करो। रोटी खाल्यो। पगड़ी कठै जाय है जे आपणी होगी तो आपाँ नै मिल ज्यायगी. पण सेठ टूक तोड़या ना। जद सेठाणी पैलाँ तो चिड़क्या हाँ जावा जी सिर की आन ही दिया। हा फेर जद सेठ जी रै

आयो हर कँूई सेखी मारण लाग्यो तो म्हर देसी पगड़ी ल्यादर सेठ जी नैं देही हाथ माई हैक इसरी? पिछाँतो। अर सेठ नै सारै मेल रो बेरो पड्यो। हर बो हैत कर बोल्यो — हँहँहँ, जद थे म्हारै बाप मारयो जद ही मैं जाणगो हो इण पो गिल गिलो गिलगिलो हरव गीगलै री मा रो है। हर जणाँ ही मैं थारो मान राख दियो नहीं तो इसी लातों लगवार री कै फिर हँसो सो घड हूँ परै जा र पड़तो। आ नैं थारै कँूई गुर्रो है तो तड़ैह आ र बेरो पाड़ियो देखाँ रे बीतै। जणाँ पछै सेठाणी सेठनैं सदा चिड़ाती रही।

अमराराम स्वामी, कुशलिया से प्राप्त.

"टोडामल सेठ"

एक गाँव में एक टोडामल सेठ रै हो. बो मोत गरीब हो. घर में टाबर तो ही बोली हर कमावणियूँ हो बो एकलो. सो घर में सौ गाडा बोद रयी ही. पण बो साच रो बोणियूँ अर आप रो खाणियूँ हो ईमानदारी के डौंणे रो बैं रै घर में पैगाम रोतो हो. बो बसूँ नूँवा री कमाई खाबा करतो हो. बो च्यार घड़ी के तड़ैह उठतो सो उठ्यां रो बड़ हर कुल्हाड़ लेकर झर बण में जातो हर बैठ चोखी चोखी सूखी सूखी लकड़ी टोव र हर कर रा मण मण री भरोटी बांध कर ल्यावतो. सो गैह में पचतो र लेकर सैहर में पूँचतो. सैहर में सारे या बात फैल री ही कि टोडामल सेठ री लकड़ी सूँ ल्याली होय है हर सूकी होय है बड़ा सो बालबा रै काम में मोत आवै है। सो गणूँ गणूँ बीं री लकड़ी लेबा नैं त्यारयां रोता. बो तो कैतो के म्हारै गेर हर बो कैतो कै म्हारै गेर। नाखी एक हर निकारो हालो बोलो सो टोडामल तो एक हर लकड़ी लेबालो सारो गाँव। हर टोडामल भरोटी गैल दो टका लेवै। भरोटी नपी तुली ल्यावै लकड़ी एक रो बी फरक नीं होतो आवै। सो यूँ टोडामल री ईमानदारी सारै सैहर में हर सारै चोखलै में फैल री ही। बो बीं च्यार पीसाँ का दो तो दाणाँ ले ज्याय हर सेठाणी नै दे। हर बड़े उवार सूवार हो ज्याय तो धाणी सेंग डाल ज्याय कर टाबरां नै दे देवै। सो बे मूठी मूठी चाब कर ठंडा पाणी पी लेवै हर रात पर सोवै रोता ऊठा मलो ही पण बो बी इता रतेम लेवा होया हर होत घर में रूखा बासी बाधो पाको मिल ज्यातो सो खा लेवै पण दूसरै रै घरै जाकर मूँ बाणी रोता है हर हाथ कोनी पसारै। सेठाणी बी पूरी भगतमत री लुगाई ही। बा बी

म्हारी बैठी रैती आप के टाबरों ने हर मोट्यार ने पैलाँ खुवा'र फेर
जै बचै थोड़ो मोत मोलो बासी जीम ल्याता तो बाँ ने अणपूरा
हर अफर हूँ हेडा पाणी पाँडर सोता (पकर लेती। पण बा'र बी
मजाँ पर बा बोलती लेती हरत आत लाग'र। मेरे डर में बा'चाल
बोती हर. भाग वा यौन बोलती। बा और लुगायाँ की तेड़ बुगली चाल्या
बोती जाती ही न घर घर ईणाहरी नार की नाई फिर फिर कर ढब ढेरा
खाती। बा लुगायाँ में जा'र बी बोली बैठती हत बाँ के मन पर बोझ,
मिनावाँ सार गावा बोती हर। जद बा डूसरी पैरी ओडी लुगायाँ में बैठ
का सरम करती। सो पा मन में विचार कर हत के बरो कुआँ लुगाई किती है हर
कूआ लुगाई किती है, (बाह (बा बाँ का मासा रूणानो पड़ै। बा आप के घर
में हाली हवरी में बैठी रैती पण डाँर के मेलाँ में बोती जाती। आपकी
हपरी में सीली बगती खालेती पण डाँर के मिजवा में जिन मांगाँ ने
बोनी जाती। हूँ ब्हीलाँ राताँ बाँ ने आडीक जमरवती गई ही हर इब
आडीक बाकी न। घणी गई थोड़ी रई पल पल बीती जाय, पातरे कहै
परवावज्या, गई बीत बीजाय।" सो इब तो बै ओर बी मडरव मडरव
चालै लागा ही। हर बाँ की मडराई की ध्याई फेर बड़ाई चालगी ही।
रे आपणाँ रे गण्या के मगेला, ले बेरी सार ही बीं री बडाई करतो रातर
हर या बडाई होले देवताँ ताणी पूंच गई। कवे है के जैं जगल में बो
लकड़ी करबा ने जाती बीं जंगल में देई-देवताँ का बासा होग्या हा।
एक दिन बीं जगल में मंगल होरया हा. राजा इन्दर को सिंघासण
अरस पर हूँ उतर कर धरती पर आ बिराज्यो। घणाँ देई-देवता साथे
आया। सिंहो सिंहराव रो गयो। मंजी मारी दे गयो। दरजी गालिच
बिछा गयो। नाई मुसाल जगा गयो हो ओर ओ कामेती आ'र
ओ ओ राज रो गयो। हो फेर तेतीस क्रोड़ देई देवताँ को आमण
लग गयो। पातरयाँ नाँच करी। पावाँ की नेवैं पखावज बजाई हर
ताल्याँ तान तोड़ी। नाँच हुओ लो ला हुओ के सारी धरती पर फैलाँ
इतो कदे बी हुओ न आगे बै होय। इव मोर हुयो तो सगर
आप आप के थाँन मकाँन गया. पण पातरी रात भर के नाँच हूँ
हण चाकी ही सो बै आराम करबा ने आडी हो गई हर आँख लाग
गई सो सूती सूती सवा पहर दिन चढ़े जागी। हर जागती ही पण फराग तसूँ
फारग होय हर न्हाबा नैतलाई में बड़ गई इतरे में लेडा मल सैर...

नै बेठ आ गयो. सो उणाँ मन मांय विचार कर्यो, इण ने आज अठै
कै ओंतान है? सारी बात रो विचार बाँच कर विचार रे निचोड़ कर्यो
इण हो न हो के मानस तो है नहीं। जे हो तो ये इन्दर री परी होवैली।
पण जे नैंकटतें जा कर ओं नै कूँ पूछताछ करूँ तो या बात कठन है क्योंके
ओ मानस री नजर पड़बा देवै नहीं। सो जे हो सकै तो ओं सूँ छल
कर करनो चाये। हर या बात मन में विचार कर उण चोरैचोरै
लुकतै छिपतै तलाई को नाको जा लियो हर वठै पेर पत्थाओं पत्थाओं
वो कै तक के कापड़ों के कनै ग्यो तलाई के बायरै एक रेवड़ी पर पड़्या
हा जा लाग्यो। कपड़ा देखतों ही सारी पातरयां आकल बाकल होगई।
हा [illegible] रे हालो? [illegible] सुरगापत में तो ना [illegible] नहीं हर अठै
सुरग [illegible] तीरथ आयो है मिरतलोक के मानसां रो आवा गांठा
सरू हो गयो. सो बड़ो गजब हो गयो। इब करो तो के करां? यूं मन में
भांत भांत रा विचार बांधो हर रोडामल रो न्योतार ख्याल कर म्हे चाही
काली गाय हूँ। म्हांनै म्हारै तन रो कापड़ो देदो। पण रोडामल बोल्यो
हो कयो के मैं थांनै थांर कापड़ा तो देदेस्यूं पण म्हनै वचन देणो होसी।
जद उण पातरयां वचन दियो हो "आबा कुवा, झवा, रूँखां मांळा
सो न हों तो थावा री कूंड में ओंतरी हो कर पड़ां।" ये वचन लेकर
कर रोडामल [illegible] कही हक ठीक है। इब मैं थांनै थांर कापड़ा देदेस्यूं
थे आप आप रा सम्हाल लेवो. तो पातरी बोली के जठै म्हारा कापड़ा पड़्या
हा वठै ना वठै धर देवो। क्यूंके जल रै भीतर थे पकड़ायो तो म्हे पहर नहीं
सकां। हर थांरै जबां चक्यां म्हे तीरथां री गात जल सूं बायर बी रोती
हो सकां। थारी छाया बी म्हारै गात नहीं पड़णी चायो. क्योंके पैलां थे
पुरख हर म्हे नारी हर फेर थे मिरतलोक रा मानख हर म्हे सुरगापत
में रैबा वाली पातरी। सो थे म्हारा कापड़ा ठोड़ री ठोड मेल कर सवा सै
बीख म्हां सूं दूर चल्या जावो। तो म्हे जल सूं बाहर आंवा। तो रोडा
मल सेठ विचार कर्यो इस ये जे मैं सवा सै बीख दूर चल्या जास्यूं तो ये
झट देसी बाहर आकर हर आप आप रा लत्ता पहर र आप आप कै गैलै पड़
हर मैं यूं रो यूं ही धोखा रै ल्यास्यूं। पण लुगायां के कनै खड़्या रैणो
बी ठीक कोनी क्यूंके स्नान करती नंगी पराई लुगाई रो अंग देखणो
आछी बात नहीं। ईं दूं. रोव लाग्यो हर मनस्या पाप हवण री आसंक्या रैई
सो रोडामल सेठ यूं सोच विचार कर बे कापड़ा तो ऊं ही ठोड मेलदिया

आप आप रा सबां सैं सोच पैर गा खड़्यो, रमो। तो इचपातरी
मतै बाहर [illegible] हर आप आप रा आपड़ा घर नजीतो होया [illegible]
पाल पर [illegible] गाल री [illegible] में [illegible] [illegible] खड़ी ही। उड़ैरउ
फेर [illegible] [illegible] नै नड़्यो। सेठ बी खड़्यो खड़्यां [illegible] हाँडै होठ
इबां [illegible] इबां [illegible]। सो बाँ नैं [illegible] [illegible] हर [illegible]
म [illegible] [illegible] [illegible]। हर [illegible] [illegible] [illegible] हर बी रै पाछै सब
[illegible] [illegible] [illegible] री ओंग रै [illegible] [illegible]। हूँ तो म्हारै रानैं [illegible]
[illegible] पण ना म्हैलो [illegible] [illegible] इब सा गी थारै मन में हाल्यो
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। तो मा रुठा रा [illegible] म्हारो
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मैं [illegible]
[illegible] मांगूँ पण फेर म्हारो मत [illegible] रैरयो। [illegible] सब चीजां
[illegible] है हर आँ में कल [illegible] री मान है सो आ ही बी मांगली
[illegible] नहीं। हर ऊँ मन में बिचार [illegible] [illegible] बैठण खातर
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हर मैं [illegible] में [illegible] [illegible] आड़ी भांत
हर आड़ी [illegible] है। उपरी पर छाँन इटी [illegible] है। [illegible] [illegible]
होरया है। सो नड़ मैं आवे तो बो [illegible] [illegible] [illegible]
ही मैरा [illegible] [illegible] [illegible] पाछै सो एक [illegible] [illegible] सो मैहलमांगलयूँ
पण फेर बीं रो बिचार फिरयो हो यो [illegible] बी [illegible] [illegible]
मैहल के गैल पिलँगा बी चाहिजे चारखा बीं मैं घालबा नै चाये।
मैहल में टूटे बाँण री मांचली ओपै नहीं। हर जे चोखा पिलँग डाल्या
जाय तो बीं पर चोखा चोखा सोड़ पथरणा चाये। हर जे कैयाँ मैं फेर
सोड़ पथरणा जचा लिया जोवे तो फेर बाँ पर पोडबाला बी डमीर होणा चाइ
हा मैं कार लकड़ी रा तिराली गुजारो चलाँवाँ। तो मैहल बी म्हारै कीं काम रो
फेर ऊँण मन में बिचार बाँध्यो हस जे लाल लिछमी माँग लेवाँ तो बिनैत्रि
सालो बैठो मोकळो धन पास हो ज्याय। बण बण में लकड़ी काटतो बोलीफि
पड़ै। जण-जण को मूँ बोतीताकणूँ पड़ै। एक खड़ धापो हर एक खड़ भूखो
क्षोतो रैणूँ पड़ै। कूँ जै तिरी भूख बोती काढणी पड़ै। टाबरां नै बात बा
सारै तरसता बोती देखणूँ पड़ै। सो आँ सैं तो धन ही माँगणूँ चाये।
फेर ठै बिचार बदल्यो, हा जे धन माँगल्यो तो धरम चल्यो जाय।
हर धरम को सदा सूँ बैर रैतो आयो है। अर सदा ही रैतो रैगो। इ
नैं कलजग को भरोसो है। बो जै आदमी रै पास हुए है बैं रै पगा रा

गुण भी रवै है। सुबरण आदरयो सुबरण रै साथै कल गुण भी आदरणूँ पड़सी हर जै कल गुण आदर लियो तो आज तौणी को गपलप पात धाम सौंच मौच सब कैती जासी। सारी सौटी में मिल ज्यासी तो लाव लिछमी बी मागबो आछी बात नहीं। हर इब उण लाव लिछमी को भी बिचार बदल लियो। इब ऊ कै मन में इसो बिचार फुरयो हर बाबरां नै भूखो रोटी खाणी पड़ै है। कदे छाप मिलै न को पतलो मिलै न। सो जै जाय नै मांगलयूँ तो ठीक है। बाबर इड में इड खाले, घड़ी में घड़ी खाले। छाय में छाप खाले। हर घर में सात चीज सँवर ज्याय। तरकारी तींवण सँवर ज्याप। सिर चोटी गुँथ ज्याप आड़ोसण पाड़ोसण नै दो टोकसी छाप मिल ज्याप हर आये गये बरकत रीबी सद ज्याय। सो चीणूँ मांगणू ठीक है। पण फेर मन में बिचार फिरयो हसजै चीणूँ मांगस्यूँ तो मनैं जरूर मिल ज्यासी। ओं में कोई बिखोव कोनी पण पो चीणूँ भी पाप सूँ खाली नहीं। क्यूं कै जैं दिन घर में छाप न हुई हर आड़ोसण पाड़ोसण नै मांगण खातर घर आयां नार हुई तो पाड़ोसण को भी दुख पासी हर यो भी म्हारै खातर दुख पासी। सो इणरै को भी दुखावणू पाप है। क्यूं कै आतमा सो परमातमा सो इणरै की आतमा दुखाणूँ पाप सूँ खाली नहीं। हर म्हौ पाचै रिपिया पीसा नहीं सो गऊ नै चरावणूँ पावणूँ भी कोनी बण सकै हर गाय माता भूखी ठाण ऊपर ऊबी खड़ी रैहै तो यो भी पाप चढ़ै। हर जै मैं बण मां हूँ घास की भरोटी बांध ल्याऊँ हर लकड़ी न ल्याऊँ तो म्हारी बाबरां को आगो कोनी चालै। हर बाबरी भूखी रवै। तो यो भी म्हारो धरम नहीं हर गऊ और बाबरी आं दोनवां को पेट भरणूँ म्हारी सामरथ्या नहीं। सो यो बरदान लेवो भी आछी बात नहीं। सो कोई दूसरो ही बरदान लेणूँ चाये। तो इब ऊ कै मन में इसो बिचार फुरयो. हस यो पेट पापी म्हानै मोत फेरा दी घालै है सो इसो कोई बर मांगूँ हस भूख ही न लागै। तो सारा तो बाबर हर बाबरां की मा समेत सब की भूख बन्द हो ज्याय। सो न तो मनैं बण बण में भटकणूँ पड़ै हर न बाबरी को सोच फिकर रवै। सो ईं बात स्यार री दूसरी कोई भी बात नहीं है. सो हो न हो यो ही बर मांगणूँ चाये पण स्यात में यो भी बिचार ठीक कोनी जरस्यो। हस भूख लागणू ईसुर को नेम है हर मिनख को करतब है कै बो ईसुर कै नेम पर चालै। नेम नै उलागणू या बात भी ठीक नहीं। सो यो बर मागणू भी आछी बात नहीं। अर इस तरै टोडामल कै मोत मोत बिचार मन में उठ्या हर उठ उठ कर सै बिला गया नठ नै भी ऊ कै मन में यो बिचार उठ्यो हस इब मननैं कोई इसो बर मांग

चाये हत बीं हूँ न तो मेरै जीवण में कुछ फरक पड़ै हर न दुनी में छोटो नाँव रैणें पावै। इस दुनियाँ में नाँव बी सब सैं बड़ो रहै हर म्हारै करम धाम में बी कूँ फरक कोनी पड़ै। पण इसो कर के हो सके है? या बात बिरम में बेपाई। तो इतरै में परियाँ फेर कयो कै लाडा मल तो माँगणूँ टाप सो कर माँग लेवो। म्हानें टैम टाप है। सो ताकड़ करो। जद लाडामल कई कै है अपसरावो! मन्नें तो इसी नकल को बरदान देवो हस जीं सूँ म्हारो नाँव बी चोखलै में रहै और म्हारो काम धाम बी बण्यो रहै। तो या सुण कर परियाँ की राणी आप की मोचड़ी लाडामल नै देदी हर आप लव अलोप हो गई। मोचड़ी सुरगापत के मोचियाँ की बणायोड़ी ही। साचै मोतियाँ को जड़ाव हो। लाखी लाल चोवणौं पर जड़ी पड़ी ही। बाँ कै परकास में अंधकार में बी च्यानणूँ रैतो। हर जैं गाँव में बे रेवाली जाती बैं गाँव में जगमगार हो ज्यातो। सो बाँ मोचड़्याँ की छिब बरणी नहीं जा सकै। बाँ को सारो को सारो आबान देवाँ का हो। बिसी चीज मिरत लोक में मिलणी ओखी है। सो बाँ मोचड़्याँ नै पाकर लाडामल न तो राजी हुयो हर न नाराज ही। उण देख्यो कै आँ मोचड़्याँ को के बण सकै है? आँ मोचड़्याँ हूँ किसो तीन दुनी में नाँव हो सकै है? पण तैरे भाग में जो लिख दियो सो ही सार है। बीं में राई घटै न तिल बधै। सो पातरी बाबड़ी के कर सकै है? बे आप करमाँ के आदीन है। कमर के मोचड़ूँ नित नित नाँच नाचती फिरै है। बाँ कै बी पापी पेट लाग रयो है। बो भाँत भाँत का औं नाच नचावै है। बाँ को खुद को ही नाँव दुनियाँ में उजागर कोनी तो फेर बे इसरै को किसो नाँव उजागर कर सकै है? पण या मोचड़ी जो बे छोड़ कर गई है सो कोई न कोई मुतलब हूँ ही छोड़ कर गई ही। तो आँ लेणी ही चाये। के बेरो के गुण औं मोचड़ी का देवें। पण जद बो नीचो झुक कर बे मोचड़ी लेबा लाग्यो। तो बी कै मन में दूसरो बिचार फुरयो हस पर तिरियाकी चीज कै हाथ लगाबो पुरख को काम नहीं। ई हूँ दोख चढै हर नीचपणो को काम लागै। सो आँ मोचड़्याँ नै लेबो ठीक नहीं। हर यो बिचार कर कर बो आपनी लकड़ी करबा नै चाल पड़्यो। चालती बिरियाँ फेर बी कै मन में यो बिचार उठ्यो हस परियाँ देव जूण है। हर देवता को दियोड़ो पदारथ लेबा में कोई दोख कोनी। सो मोचड़ी लेर ही लेणी चाये। तो इब बो पाछो फिरयो हर मोचड़ी उठाली। इब उण लकड़ी काट कर भरोटी बाँध लीनी हर फेर लेजा कर सेहर में बेच कर भूगड़ा चाँणी लेय र घरें गयो। हर टाबराँ नै भूगड़ा चाँणी चबा दिया हर ऊपर हूँ ठंडो पाणी पाकर ज्याँ

रात नै सेठाँणी नै होडामल सारी बात मौड कर कही इपा की कहीकै
मैं बै मोचड़ी लियायो हूँ हर आपणै घर कै बारणै चोकं में टाँग राखी है।
तो सेठाँणी बी बै मोचड़ी देखी हर बाँ की छिब देखती की देखती रैगी। इसी
मोचड़ी उण आप कै जलम में कदे की कोनी देखी ही। बी कै मुकलावै में बै
कै मा-बापाँ बी नै सोन सरूप मोचड़ी करवा कर दीनी ही। पण बै की
इसी सरूप कोनी ही। सो बी को मन चाल्यो इण पै मोचड़ी तो मैं पहर
लेवूँ। पण पती कै हुकम बिना पहरणी ठीक नहीं। होडामल कही इणनै
पहर तो सको हो पण आपाँ मालदी हाँ। जै तूँ अै मोचड़ी पहर लेवैगी
तो लोग दुनी में चुगरो चाल ज्यावैगो। हम सेठाँणी कै बरुकै इसी
मोचड़ी कठै हूँ आई? उण हर मारीकै, बाटमारी। गेलो मारयोकै गुण्डा
चोरी करीकै पाप कमायो। नगरी कै राजा नै बेरो पड़ैगो तो बो आपाँनै फोड़
घालैगो। बूझैगो कै थे पै मोचड़ी कठै हूँ ल्याया तो, लेरलो नावो बतावो
तो आपाँ कै कहँगाँ। जै लेरलो नावो न साबत कर सक्या तो बो आपाँनै
कै बेरो नगरी हूँ काढैगो, कै बेरो डंडैगो हर कै बेरो कोई और कुछ फाँसो
खड़ ज्यागो। सो अै मोचड़ी पैरबो आछी बात नहीं। हर जै और कोई कुछ
बी न करैगो तो आड़ोसण पाड़ोसण तो गहर निदर कैरगी। तो सो नवेडर
काढैगी। हर जे आड़ोसण पाड़ोसण बी कुछ न बोली तो चोर डाकू फोड़
घालैगा। चोर उच्चका सारी सारी रात आपणै घर कै बारै की चक्कर काटैगाँ।
हर कोरी मोचड़ी ही नहीं, मोचड़ियाँ कै लागै जे बाँ कै थाली नीवरे, हरजे
लाग गया तो बो बी ले जावैगा। हर आपाँ दुसमणी हो ज्यावाँगा। हर जे
चोर उच्चका आपणै घर न आया तो जद तूँ पहर कर कठै बाहर भीतर
जावगी तो बठै डाकू मोचड़ी खोस लेवैगा हर स्यात छीना झपटी में थारै
की जीव प कुछ आँच आ ज्यावै। सो सारी बाताँ आपणै लायक कै हैं
ही नहीं। जै थाँनै जच ज्यावै तो मैं अै मोचड़ी राजा मान नै भेज दूँ।
राजा मान आपणूँ तो गुण मानसी हर आपणूँ सदा कै वास्तै यो फिर
आयो कोर कर ज्यासी। तो सेठाँणी कही कै या बात ठीक है हर म्हाँनै बी
या जच गई। तो इण भाँत बाँ दोन्यूँ मा णसाँ आपसरी में बिचार बाँध कर
बै मोचड़ी राजा मान कै निजर कर दीनी। राजा मान बै मोचड़ी देख कर
भोत राजी हुयो हर सब कचेड़ी का राव उमराव राजी हुया। सारा ही कही
हम इसी मोचड़ी म्हे तो दीन दुनी में अज ताँणी देखी न आगै नै देखण की आ
कोई बोल्यो मैं साठ बरस को हो गयो पण इसी भाँत की मोचड़ी म्हारै देखण में न

आई। कोई बोल्यो म्हे सजार लाल लेलिया हर कोरे कांवळे में फिराफिर
कर सारा मोचड़िया देख लिया पण इसी मोचड़ी कदैई म्हारै निगै नहीं
आयी। कोई बोल्यो हक मैं मेरी सारी उमर सेठाँ में ही बिताई है हर चोखे
करोड़ीपत सेठाँ के घराँ में म्हारो बरोबर पीढ़ियाँ सूँ आवणो जावणो रयो है पण
इसी नवल री मोचड़ी म्हारै देखण भाळण में तुरताल तांणी कोनी आई हर न
इसी नवल री मोचड़ियाँ री कठै चरचा हुई सुणी। इतरै में एक दूसरो सिरदार
बोल्यो इस मैं असली बरण को बूढ़ो डोकरो हो गयो हर मैं मेरी सूरत संभा-
ळ्यां पछै सदा रजवाड़ां ही में रयो हूँ। पण इसी सावणी मोचड़ी म्हारै तो कठै
ही देखणाँ में कोनी आई। बड़े बड़े राजावाँ री बायाँ रा ब्याव देख्या है
सुरताला बी देख्या है। मोचड़ी बी बदरी हूँ बदरी देखी है पण इसी तरह
री मोचड़ी म्हारै देखण में आज तांणी कोनी आई। राजा खुद बी क्यो
के मैं बी इसी मोचड़ी आज ताणी सारी धरती पर कोनी देखी।
पण यो रोड़ामल सेठ के बेरो कितो के नबेरो है जो के घर में बी रखातो इसी
तरह री मोचड़ी पहरै ही। तो कही थे इतरा सिरदार हो, थे थारै मांलै कोई
रोड़ामल सेठ ने देख्यो हर सुण्यो हुवे तो म्हानै बी के घर री दो च्यार बात
बतावो। बो किसोक आपतो है? किसोक कारखाना चालै है? कितो'क रुपैयो है हर
कितोक बाग बगीचा है। सो ज्यो कोई ई सेठ रो समाचार बतावै बो कोई
हो कोई कैं। पण रोड़ामल सेठ रो कोई नांव तो बतावैक। बिना सेठ छाप
से गांठ फिरै है लकड़ी बेचतो। दुनियाँ बों की कद ख्यांत राखै? दुनियाँ की
बै ख्यांत में आवै ही कोनी। के बेरो रोड़ामल सरीखा कितरा'क ई धरती
बसे है। सो कोई बी सिरदार रोड़ामल सेठ रो नांव गांव हर पतो ठिकाणो
कोनी बता सक्यो। जद सेठ को ज्यो आदमी मोचड़ी ले कर गयो हो ऊंनै
सेठ आप री कचेड़ी में बुलायो हर बों रो मोटो गैरो सनमान करयो हर
पांच रुपया सिरोपाव हर बिदाई बकसीस करी हर सेठ जी रै नांव एक
मगनू हरखी देखनायो। हरखी ले कर बो आदमी सेठ रोड़ामल कनै आयो
तो रोड़ामल के और बी ज्यादा चिंत्या हो गई। इस मेरै घर मैं तो एक खड़को
अगाड़ी होणी कोनी। राबर ही घर में आदमी आवण लाग्या आधा उधा खैं ई
ई हरखी को फेर मेरे सूँ कैसो भरेगो। या खड़को नो मण हरखे सो
तो यो रैवणो खड़को कर लियो। हाली बैठी डूमणी घर में घाल्यो छो।
सो मैं तो हाली बैठे यो घर में घोड़ो पाल लियो। पण रैवर यो घोड़ो बुक
के राजा के पूछो। सो उण यो विचार कर कर बो हरखी बुलावार के।

नै चलवा दियो। जद बो आदमी बी हाथी(?) नै ले कर बीकानेर कै राजा
कै पास पूंच्यो हर बो हाथी राजा नै निजर करयो तो राजा बी मंगतो हाथी
नै देख कर मगन हो गयो। इस इसो हाथी तो म्हारै सारे राज में बी कोनी फेर
इसो हाथी म्हारै तो देखणै में बी कोनी आयो। सो इसो हाथी रोडामल सेठ भेज्यो
है तो बो सेठ बी के बेरो किसोक जोर कोहै? राजा हाथी नै पील खाने में
बंधवा दियो हर म्हावत नै राज कै डेरे में उतार दियो। ब्राम्हण कै कचेड़ी लागी
तो राजा आप कै राव उमराव हर साहिब मुसाहिबां नै कह्यो हक आज एक
रोडामल सेठ कै हूं एक मंगतू हाथी पेस में आयो है। तो हाथी रे है बातो
हाथी ही है। इसो हाथी म्हारै आज तांणी देखणै हर सुणनै में कोनी आयो।
रोडामल सेठ तो के बेरो किसोक सेठ है? जैं कै घर इसा के बेरा कितरेक हाथी
घूमै है? पण कोई बी सिरदार रोडामल को पतो ठिकाणू कोनी बता सक्यो।
कदे कोई जांणै तो बतावै। तो इब राजा बिचार करयो, इस हाथी कै
बदलै में आपां नै बी कोई बढ़की हूं बढ़की चीज भेजणी चाये। जै न्याऊ
स्याऊ चीज भेज देगां तो सेठ कै के बेरो परसन आवैगी के नहीं। सो इसी
चीज भेजणी च्यो ऊं कै परसन आवै हर सारै सैहर नगर कै परसन आवै। तो
के इसी के चीज है आपणै कनै। तो सावल बिचार बांध कर राजा आप को
जलेरो घोड़ो सेठ कै आदमी कै सागै बदलै में दे घाल्यो। घोड़ो लेकर बो
आदमी सेठ रोडामल कै पास आयो हर राजा को दियोड़ो जलेरो घोड़ो
सेठ नै ल्याकर दे दियो तो सेठ बो घोड़ो जोधपुर कै राजा की पेस में भेज
दियो। आदमी लेकर गर जोधपुर पूंच्यो हर राजा जी नै घोड़ो निजर करयो
तो राजा बो घोड़ो देख कर मोत राजी हुयो हक इसो घोड़ो तो म्हे आज तांणी
देख्यो न सुण्यो। म्हारै तबेले में साड़ा सात सौ घोड़ा बंध्यां जो चरे है पण
इसो घोड़ो म्हारै एक बी कोनी। सो राजा बो घोड़ो पा कर बड़ो खुसी
हुयो हर आप की खास हसवारी खातर राख लियो। घुड़हसवार ज्यो घोड़ो
लेकर आयो हो बी नै राज कै खासो डेरे में उतार दियो हर आप कै हाकम
गुमास्तां नै हुकम दियो हक मोकली मोकली मनवार कीज्यो। खाणै पीणै
सोणै में कोई तकलीफ न होणै पावै। नहीं तो मेरै हूं बुरो मत जाणीयो। तो बां
बी बै की खूब खातरदारी करी। हर दो च्यार दिन बठै मोत हरख हूं राख्यो हर
हर पांच पचीस रिपिया रोकड़ी, पांचू कपड़ा हर सिरोपाव बिदागी में दीन्यां
आती दफ्रै राजा बीं नै रोडामल सेठ कै वास्तै एक सांचे मोतियां को नौलखो
नोसर हार दियो हक मा म्हारी जिनस पिछाणी कै खातर सेठ जी नै देज्यो। म्हूं

कर बा बीं नै बिदा कर्‍यो। बो बी चाल्यो थक्यो, चाल्यो थक्यो, कई दिन में पूग्यो। आप कै देस में आयो हर आप कर टोडामल नै सगळा समाचार कया हर बो नोलखो नोगर हार सेठ नै सूँप दियो हर या राजाजी थाँनै सैनाणी घाली है। तो टोडामल बा सैनाणी घर में न राख कर जगत-सेठ नै भेज दीनी। जद बो आदमी बो नोगर हार ले कर जगत सेठ कै पूग्यो तो जगत सेठ बीं की खूब खातर करी करी हर नोगर हार पा कर मोत राजी हुयो। जगत सेठ सारी हीन दुनी में माया रो पुतलो समझ्यो जातो हो हर बीं कै बरोबर इसरो कोई बी माणस धरती पर धनपत कोनी हो। पण बीं कै बी बीं नोगर हार जिसो हार घर भीतर कोनी हो। तो यो नोगर हार देख कर मोत हैरान करी हर इसो सेठ मन्नै छोड़ कर दूसरो कुण है जैं कै घर में इसो नोगर हार है। पण जे बो सेठ इसो धापतो है तो बो मोत ही जोरको है। पण बीं रो नाँव इतराँणो म्हारै सुणबा में कोनी आयो हर न कदै देखबा में ही आयो। सो यूँ मन में मोत मोत को बिचार कर्‍यो हर कसीद नै चोखी जगाँ बगीचै में डेरा दिवा दिया हर खाबा पीबा को सारो सरंजाम बाँध दियो। दो च्यार दिन कसीद बठै रयो हर खूब चाँगड़ा उडाया। फेर जद बो चालण लाग्यो तो जगत सेठ रेशमी कै एक रतनाँ रो जड्यो हर सोनै रो घड्यो प्यालो सेठ टोडामल नै भेज दियो। तो जद बो प्यालो टोडामल कै जाय पूग्यो तो टोडामल बो प्यालो एक इतर छब नै भेज दियो। सो यूँ करतो करतो सारै चोवलै में सरनाँव हो गयो हर बड़ै बड़ै राजा लोगाँ सूँ ले कर सेठ साहूकाराँ हर बोदी दुनियाँ में सब जगाँ मानीतो हो गयो। पण यो मान कोरो मान हो। घर में न तेल न ताई"। हर मान बडै बडै रजवाड़ाँ में। पण टोडामल बी या ही चाही छी हक बो दुनियाँ रै पाप दोख सूँ दूर रैतो थको आप रो नाँव दुनियाँ में सगळाँ गा लेवै। हर यो ही भार इन्दर की पातरियाँ बीं नै दियो हो। बो यो चड़ी ले की मोरै बाँ रै आला बदलै में ही नाँव पा लियो हर जैं यो चीकणै घड़े पर बूँद कोनी ठहरै बैयाँ ही टोडामल पाप दोख सूँ दूर रयो हर मन की मुराद बी पूरी करली। दुनियाँ में इसा ही मिनख होणा चायजैं।

गो॰ हनुमान दास स्वामी, रतन शहर (झुंझु॰)

एक चारण और एक नाई दोन्यूँ साथ साथ रया करता। वाँ ने दिन एक जगाँ ही उगतो हर एक जगाँ ही छिपतो। यूँ करतों करतों वाँ दोनवाँ आप री घणखरी उमर निता दीनी। चारण रै तो जजमानों रै हूँ कदे कदे हावदे काँपू आपर तो रवै हर नाई आप रो दिनगे ले रखणी हर नीसरै सो दूतो छाव हुये ताँणी जजमाती मैं फिर आवै हर दुवार कतरिया कर आवै। दुवार गैल एक रोटी जजमाती मैं बंध री ही। सो बो खाँण जोगी रोटी ले आवै हो साँझ छाप रावड़े री एक हाँडो रोवे सो बो भर ल्यावै। एक पहर री नोकरी हर च्यार पहर रो राज।" सो एक पहर मैं ही बो खरी कमाई कर ल्यावै हर वीं नै सारै दिन मोत। हो फेर तीन पहर बारठ जी कनै ही बैठ्यो मजला मारै हो वाँ नै चिलम तमाखू भर भर पावतो रै। यूँ करतों करतों वाँ नै कई बरस हो गया। करणी मालिक री हनी हुई रै एक काल री सारै देस मैं काल पड़ गयो। खाँण पीण नै सोल्यूँ साँपड़ गयो। सारा लोग बाग खलबलो उठ्या। जजमाती बी ठप पड़ गई। बारठ जी ही नवगा दोन्याँ री रोजी रुक गई तो बारठ जी देव रा बोल्या हो रै नाई रा! अठै तो इब आपणूँ आगो चालैगो कोनी हर जे तूँ रहै तो आपाँ मालवै चाल्या चालाँ। सो बठै आपणी पेट भराई होबो करै। कहरे स्याणै लोगाँ कही है हो "गुना जठै गुजरात।" तो कही रै जे आप कै या ही जच गई तो बारठ जी! यो नाई रो छोरो वी त्यार है। सो यूँ बतलावण कर कर बे परदेस नै त्यार हुया। पण चालणों हूँ पैलाँ नाई बारठ जी हूँ यो कोल करवा लियो हर गेलै माँय जठै बी मैं ज्यो च्हैन देवैगा वीं रो च्यानूँ आंनै देणूँ पड़ैगो। हर जै थे मनैं च्यानूं न देवोगा तो मैं बठै हूँ आगै नहीं चालूँगो हर बठै रो बठै बैठ ज्याऊँगो। तो बारठ जी कही हाँ या बात म्हे अंगे करी। या बात आई हो म्हे आया। च्यानूँ देणूँ म्हारै पल्लै बँध्यो। तो कही ठीक है फेर थारै जच्चै जद चालो। तो कही चालो। सो वाँ दोनवाँ आप आप रो गैरो रो पल जची कर हर कपड़ा लत्ता बाँध कर गुदड़ी गोल करी। सो बै अँधारै हूँ ता चालें हो सवा पहर दिन चढे ताँणी पैली मजल रो पीडो करै। हर जठै सवा पहर दिन चढ ज्यावै बठै ही बै आप रो पड़ाव गेर देवै। हर मिलै सारू बे खाँणूँ दाँणूँ रै हर फेर करड़े पीये ताँणी बठै आराम कर कर फेर ढलतै दिन दूसरी मजल पर भीर हुवै। हर सूरज नारायण। छपै जठै ताँणी पीडो करै हर जठै सूरज देव गरब मैं डूब ज्याय बठै ही आप रो पड़ाव गेर देवै। सो ई तरियाँ बै मजल पर मजल करता जावै हर मा...

जावै सो घर कूँचा, घर मजलाँ। ज्यूँ ज्यूँ उपर चढता जाँय ज्यूँ ज्यूँ लाम्बी बार करतो जाँय। बात रो चालणूँ हो हर संजोग रो पीवणूँ हो। एक दिन सूरज ढाठी दो पेर चड्यो जद बारठ जी हर नेवगी एक गाँव में पूँच्या। तो बारठ जी देख कर बोल्या - रे रे नेवगी, मैं तो अठै ई खेजड़ी री छाँया तळे बैठ्यो हूँ हर तूँ आगलै ई गाँव में जार एक हुक्को भर ल्याव। तो रे नेवगी बोल्यो, ये तो अठै बैठ र आराम करो हर मैं थाँनै हुक्को भर कर ल्या देऊँ हूँ। सो इतरी कैय र नेवगी हुक्को लेर गाँ में गयो। सो जद बो बीं गाँव में बड़बा लाग्यो, तो रे देखे है के बीं गाँव रै गोरवैं एक कूवो है जीं पर दो पणिहारी पाणी भरै है। एक तो घड़ो खींचै है हर दूसरी घड़ो झेलै है। सो बाँ नै देख र नेवगी सोची हर आपाँ ई कूवै पर चालस्याँ। अठै आँ पणिहार्याँ कनै हूँ सर गलली स्याँ सो हाथ पग धो लेस्याँ जैं हूँ हर खुल ज्यासी हर हुक्कै में बी पाणी भर ही लेस्याँ। यो विचार बाँध र नेवगी सीदो कूवै री पाल पर जाँर ऊभो हो गयो। सो जद बो बाँ रै सांकड़ै पूँच्यो तो बै दोन्यूँ आपस में बतळाई। घड़ो खींचबाळी घड़ो झेलबाळी नै बोली रे - 'बै आ गया' तो या सुण र घड़ो झेलबाळी बीं नै पाछी बावड़ी बूज्यो हर "बो ई आ गयो हक बै बी आ आ गया।" जद घड़ो खींचबाळी जाब दियो हर "बै ही आया हीं बो तो सेली आयो।" इतरी सुण र दोनूँ हाळी एक लम्बो निसास मार कर हर कूद र धम देती कूवै में जा पड़ी। नेवगी बाँ री सारी बतळावण सुणे हो। सो जितै ताँणी बै बात करती रयी जितै तो बो बाँ री बात चाल बो कर्यो हर जद बै बात कर चुकी हर दोनूँ हाळी कूद र बीं कूवै में द पड़ी तो यो चैन देख र नाईड़ो तो पाछो ही उलटै पगाँ भाग्यो हर दियो ताँत तो सो बारठ जी कनै आवतो दीख्यो। बारठ जी बी नै सामनै हूँ आँधर भागतो हुयो आवतो देख्यो हर साँस हूँ पेट फूल रयो हर बो हाँफरड़ै चड रयो। तो पो हाल देख र बारठ जी नेवगी नै बूज्यो - रै रे नाईड़ा! थारो यो के हाल है? जद नेवगी बोल्यो के बाबा जी! के बताऊँ? आज तो मैं एक इसो चैन देख र आयो हूँ कै के कहूँ कुछ कैणी सुणती में राती आवै। हर जे मैं भाग कर न आर हर बठै ही खड्यो रहूँ तो लोग मेरै फाँसर घाल लेवै। सो मैं तो आज बळती भाग में पग तो एक बर दे दियो हो पण बँच कर नीसर आयो। हर इब बो कैबा लाग्यो कै जद मैं ई गाँव कै माँय बड़्यो तो गाँव बड़ताँ ही गेलै कै सहारै ही एक कूवो है जैं पर दो लुगाई पाणी भरै ही। दोनूँ ही भर जोबन में ही। एक तो घड़ो खींचै ही हर दूसरी घड़ो झेलै ही। सो मनै आवतो

देख कर डाँणै मौली पणिहारी गूँण मौली पणिहारी नै बोली कै "बै आ गया।" जद ऊँण मुड़ कर बूझ्यो हक "बो ही आ गयो हक बै भी आ गया?" जद पणिहार मौली धेडू पडूत्तर दियो कै "बो तो कोनी आयो, बै ही आया है।" इतरी सुण कर बा एक लामो सो निसासो नाख कर हर कूवै में कूद पड़ी। मैं कै तो कूवै पर जाय हो हक बठे सूं पाणी मिल ज्यासी सो बी सूं चोखी तरै हाथ पग धोस्याँ अर सूं कढू हम उतर ज्यासी हर बाठ जी हालै कूवै में पाणी भी कर लेस्याँ। पण या देखेन देख कर मैं तो उलटै पगाँ ही पाछो उड्यो। हक जै या इतरी बी कूवै में ढै पड़ी तो लोग तेरै रड़ घाल लेंगा हर कोई या भी कैवै खातर त्यार कोनी होगो हक ये आपू आप पड़ी ही हर ई का आँ रै कूवै में पड़बा सूं कोई लाव लेण कोनी। तो मैं तो डरतो पाछो ही भाग्यायो। इब आप मन्नै ई बात को ब्यानू देवो। जे थे ई बात रो ब्यानू खोलोगा तो मैं आगै नै चालूंगो नहीं तो पाछो ही घर नै उठ ज्याऊँ, ज्याऊँगो। तो बाठजी कही हक पाछो क्यूँ उठ ज्यागा चालो गडड़ी उठालो। इको आगलै गाँ में भी ल्यांगा हर मैं थनै गैलै चालतो जास्यूँ हर ब्यानूँ देतो जास्यूँ। तो कही ठीक है, ई बातरो ब्यानूँ खोल देस्यो तो मैं बी थाँ लागै आगै नै चल्यो चालस्यूँ। सो दूँ बे आपसरी में बतला का पैंडे पड़्या। बाठजी तो ब्यानूँ देता जाय है हर नाईको इयाँ भरतो जाय है। बाठजी बोल्या - एक गाँव हो। बौं में एक बिरामण रैतो। बो घाप कर गरीब हो। बीं कै एक तो बेटो हो हर एक बेटी ही। बो गाँव माँ सूं दो सेर बेकरड़ी माँग ल्यातो। हर बामणी मँडका सेक देती। सो अैयाल कै आपका दिन तोड़ता। दिन घाप कर टाबरिया बड़ा होग्या। जद बामणी देख कर बोली कै हे बिरामण! आपणै घर दोन्यूँ टाबर ब्यावण सावै हो गया हीं सो आँ की कठे चल भूँणी बैठावणी चायै। तो कही ठीक है, मैं चूँन माँग माँग थाँनै मेल्यो कर देस्यूँ सो जद पनरा दिन बीत दिन को अगाऊ थाँ खातर सामान हो ज्यासी तो फेर मैं गाँवाँ में ठिकाणाँ ठिकाणाँ फिरस्यूँ। सो कठैन कठै बिड़लागो ही लागै। जोड़ैं का टाबर देख कर आँ दोनवाँ का सगाई का हलतूर सागै ही कर आस्यूँ। पण मन्नै या बताय हक ठिकाणाँ किसाक होणाँ चायै? फेर तूँ मन्नै ओलमाँ देगी हक मेरै टाबराँ नै डबो दिया। तो बामणी देख कर बोली हक जो बामण आपणी नैई गरीबड़ीया होय बैं नै ही ढूंडो। धनवान को आपणै कोई काम कोनी। क्यूँ कै धन हालै नै तो धन चायै हर आपणै कनै धन है नहीं। सो आपाँ तो गरीब की छोरी सेर घी हमर कर ले आवाँगा हर गरीब कै छोरे नै ही सेर घी होम कर आपणी छोरी देवाँगा। अैयाल बामण नै सीनड़ेथ

री बामणी चोवले में लिका दियो। हर बो बामण की सारै चोवलै नै
गा गेल्यो और सारै फिर फिर थाप लियो पण आप रै जोड़ै रो घर कठैई
कोनी पायो। तो फिरताँ फिरताँ एक दिन मेचक मिल्यो। एक गाँव में बैं ही
बामण सरीखो एक बूढ़ो सो बामण और रवै हो। बीं रै बी घर में दोय टाबर
ही हा। एक ही छोरी हर एक रो छोरो। बै बी दोनूँ मोटचार सार होग्या हा हर
ब्यावण सावै होग्या हा। बूढ़ो बामण बी बैपाँ ही गाँव माँ सूँ हो सेर बेकरी
ल्यावै हर बामणी बीं रा रोटिया पोय देवै। हर ई भाँत बाँ री उमर नीसरै।
सो बाँ रै घराँ जाय र जब बात चीत करी तो बै बी त्यार बैठ्या हर टाबराँ नै परो-
टण नै। सो बाँ चोखी तो बीं बामण री खातर चाकरी करी हर चोखी तरै हँस
बात करी हर बो बामण तो बाँ रै चोखी तरै जच गयो हर बै बामण-बामणी
बैं रै आछी तरै जच गया। दूसरै दिन बात चीत कर'र बो बामण बठै सूँ
भीर पड़्यो हर मैं म्हारै घर जा'र हर बामणी सूँ बतला कर फेर खाँड खोपरै
हर नारेल रो इसतूर करस्यूँ। तो कही सो कर सावल। बो थाँ घराँ जावो हर
बठै सारी बात चीत कर'री हर म्हूँ थाँ समझ में बैठै बैपाँ ही कर लेयो हर
फेर जिसी बात थाँ समझ में आवै बिसी म्हाँ नै बी कुरा देयो। तो कही ठीक
है। या बात कर'र बो बिरामण पाछो आप रै घर आ कर सारी बात बामणी नै
माँड कर कही। तो बामणी रै भी या बात जच गई हर उण कयो रै आपणैं तो आँ
दोनूँ भैणा भायाँ री आँटै साँटै सगाई ब्याव करल्यो। सो दो घराँ रा फलजान
भाँव कर एक घर में ही दोनूँ टाबर परोट लिया जासी। जणैं जणैं री भूठ
कोनी खाणी पड़ै हर फेर आपणैं स्यार रो दूसरो घर बी मिलणूँ ओखो है तो
आपाँ तो आपणी छोरी बाँ नै देस्याँ हर बाँ री छोरी आपाँ लियास्याँ। तो
कही ठीक है। हर या बात नितार कर उणाँ आगलै बामण नै कुरा भेजी।
तो बीं रै बी या बात जच गई हर जणैं जणैं री भूठ खाणैं सूँ के
फायदो? एक घर री भूठ खातौं दोय घराँ री क्यूँ खाई? बेटी बामण रै छोरै
नै ही देणी है। सो चाये ई घर देवो चाये दूसरै घर देवो। हर आप की बामणी
की बी राय मिलाई। सबबाँ दोनूँ घराँ री राय मिल गई तो दोनूँ नाकाँ बात
पक्की पक्की हो गई। टीकै हर खाँड खोपराँ का दसतूर हो गया हर हो गया बारी
बारी भोसरै टाबराँ का ब्याव। हे नाईका, बै दोनूँ नणद भोजाई भावी भाव
हर नणद नणद औ दोनूँ पणिहारी होजिका माँ सूँ एक जणी कूवै में ढै पड़
जा रही आरी बात तो तन्नै मैं कह दीनी हर आगी फेर कैस्यूँ। तूँ मन्नै दूध
भर कर ल्यादे। दूधा पी'र हर ताजो तिवानू होर'र फेर तन्नै आगै री बात सुणा

रूपू । तो कही ठीक है। मैं हुक्को भर र ल्याऊं हूँ । यो नाईजी तो हुक्को लेर जो
दूसरो गाँव बाँ के गेलै में मू आगै आ गयो हो बी में चल्यो गयो हर
बारठ जी गाँव के गोरवें एक पीपल के नीचै बैठ गयो । नाई हो जद सहर
में पूँच्यो तो बठै बो के देखै है कै एक साहूकार को बेटो गळै में तो कालीनाग
सपणी घाल राखी है हर बजार में हाय मेरी सपणी, हाय मेरी सपणी, करतो फिरै
है। नाई कै बो साहूकार की स्यान सिकल देख कर हैप कै लाग्यो हर यो लाख
पत सेठ को बेटो, ईं को यो रूप हर या हालत। तो मू मन में सोच विचार कर
कर बो हुक्को भर पाछो बारठ जी कै कनै पूँच्यो हर हुक्को तो मेल दियो हर बारठ
जी नै फेर कयो कै म्हाराज! पैली बात को ब्यानूं तो मनै पूरो मिल्यो,
ही कोनी हर जै पैली मैं तो दूसरो चैंत और ईं गाँ में देख आयो। तो
कही बो के चैंत देख आयो। कै के कै देख्यायो? देख्यायो एक साह
को बेटो गळै में तो सपणी घाल राखी ही हर हाय मेरी सपणी! हाय
मेरी सपणी! करतो बजार में फिरतो फिरै हो। बो साहूकार को बेटो एक
लखपत सेठ कै घर जलम लियो है। रूजाऊं रिपियाँ रा गाबा लत्ता हर सा
गारत पहर राख्या हा। रूप को धामोड़ो हर गुलाब को सो फूल हो। हो बीं कै
एक एक आँख में मो तो आंसू बगै हा। मू कुमलाय गयो हो हर अलताय
कर तो रँ की नई सूकरयो हो। तो बारठ जी कही हक पैली तो मैं तनै पैली बात
को ब्यानूं पूर पूरो रवूं हूँ फेर तनै दूसरी बात को ब्यानूं दूंगा। हर इब
बारठ जी फेर हुक्को पीता गया हर नाई नै कहता गया, हक हे नाई दा! एक बर
देस म में काल पड़ गयो तो बै बामण री तो दोनूं आप कै घर रही हर बै
बामण रा बेटा दोनूं कमावा नै परदेस चल्या गया। सो बठै कमा
कमातां बाँ नै बारा बरस हो गया। पण बाँ न तो कोई समाचार दियो हर
न बै मुड़ र आया ही। बठै परदेस में बा जो पण घर में खड़ी घड़ा भरेर
बैं रो ध्यामोड़ो बेकाम पड़्यो। हर करणी रसी हुई र बैं रा सास पूरा हो
हो गया। इसरै घणाँ ही जतन कर्या, घणाँ ही बैद भोपा बुला लिया प
टूटी री बूँटी नहीं। हर बो छेलै नाड़े पार पड़्यो। तो बीं नै बठै पाछल
मजल पूँचा कर हर बारा दिन पूरा कर हर बो इब घर नै भीर पड़्यो। हर उ
बी बामण री बेटी नै रात नै सूती नै सुपनै में दरसाव हुयो ज्याँ में बै
घर को धणी बीं नै कहै है कै मैं तो मर गयो हूँ हर परलोक जाऊं हूँ तूँ बी
मेरै गैल बेगी सी आय नहीं तो मनै नावड़ंगी कोनी हर तेरा मेरा लावा
घणाँ पड़ ज्यायगाँ। दिनगे ऊँण आप को यो सपनूं आप की भावज नै कयो तो

भावज रो वो मांड्यो तो ठणक्यो, पण ऊंण ऊपरलै मन सूं वीं नै धीरज बंधाता
बंधाई हक सपनूं तो आल जंजाल है। सपनै रो के? वो तो यूं ही आतो रवै है।
हर के जे सपनूं मूवै रो आवै तो मूवै री उमर बधै। पण उमर बधाजानै री
हो! वीं रो पती तो पूरो हो चुक्यो हो। आज वो बामण रो बेटो पाछो
फिर एकलो घरां आयो तो बा पण घर हाली तो घड़ो बरी लेकर कूवै पर पैली
आ गई ही हर बा गूंण हलीलैर नै घर में ही रैगी ही। सो बा जद घड़ो रितो
रो चालण लागी तो वीं नै पलटै निकलती नै वीं रो पती आवतो साम्हे मिल्यो
पण वीं रो पती एकलो ही आयो हो वीं रो भाई सागै कोनी हो। सो जद
ऊंण जा'र कूवै पर कही कै बै तो आप गया।" तो ऊंण बूझ्यो कै कोई
आयो है कै बैबी" हर मेरो भाई ही आयो है हक मेरो पति भी तो ऊंण
जाब दीन्यूं हरं बै ही' हक थारो भाई ही। या सुणतां ही वीं रै मन में या
जच गई कै तेरो पती मर गयो है हर वो सपनूं सोला आना साचो है। सो
बा आप कै घरकै धणी कै कहे मुताबक हो बोरी आव नहीं तो लावा बेह
होय है कूवै में है पड़ी। या सुण कर नाई री पैली संक्या तो दूरो
गई पण दूसरी संक्या पैली सूं भी वीं रै मन में गहरी उठरी ही। सो
ऊण फेर बाठ जी नै आज री हक या बात तो थे म्हारै गलै उतार दीनी
पण अब मनै दूसरी बात रो ब्यारूं देवो। तो कही दूसरी बात रो ब्यारू
भी ले सुण। मैं तनै कहूं हूं। सो फेर बाठजी तो बात कैबा लाग्या हर
नाई हूंकारा देबा लाग्यो। बाठजी बोल्या कै हे नाई रा। एक सहर सो। जैं
एक करोड़पति सेठ रै हो। बैं रै घर कोई बात री तोड़ो कोनी हो। अन री जगां अ
हर धन री जगां धन हो। हाथी घूमैं हा। घोड़ा खड़्या ठाणां में गो चरै हा। गुमा
मुनीम कमावै हा। गोली बान्दी पीसैं ही। लाख पर दीवो चसै हो हर किरोड़ पर धज
फरूकै ही। के राजा हा के रंक सैं बैं रै घरां आकर खुसड़ी मडकावता हा अ
में हरख मनावता। इसो कोई भी आदमी कोनी हो जैं नै ऊंण पांच पचीस
न दिया हो। पण धनवांन हो का भी बो कंगाल हो। बैं रै ति बातां रो भ
होतां का भी एक बात रो घाटो हो। हर वो घाटो हो पुतर रो। बो सेठ
निपुतरो हो। बैं री सेठांणी बांझड़ी ही। बांजड़ै मानस नै निरवद समझ्या
है सो वीं रो मूं देखणूं भी पाप है। संजोग रो पीवणूं हो हर बात रो चा
हो। करणी मालिक की इसी हुई कै एक दिन दिनगै पैलो सेठ तो घूमण कै ला
गांव सूं बाहर आप कै घोड़े पर सवार हो कर नीसरयो हर ऊं नै गांव का
गोरवैं भंगियां को मोहल्लो हो सो एक भंगी आप री झूंपड़ी मां सूं नीकले

सूसो उठ कर बाय नाळा छोड़ कर बा नै आयो हर उन्नैं घोड़ै की टापाँ की
नै बाजती सुणी सो बो के दो धपाँन घोड़ै राती गया तो बीं री नीजर कैं
सेठ पर पड़ी। भंगी पाछो आवड़ कर आप की भंगणती नै बोल्यो कै आज
तो बड़ा गजब होगया ज्यो दिनगे पैलाँ बाँ जड़ै मजाल क्रो मूँ देखलियो तोकइ
तो आज कोई आपणैं घर में माणस मरै कर लाय लागै हर कइ रोटी नहीं मिलै।
आँ तीन बातों में एक बात जरूर जरूर होय। या बात सेठ कै कानों में बी पड़गी।
सो बीं कै मन में बड़ो भारी असरयो हुयो हर लेले तेरो दरसण करबो तो यो भंगी
बी केवनी चावै तो तेरै कूँ छोटो और कुँण होसी। भंगी ज्यो सबसै नीचं है बो बी
मनैं नीचं समझै है। तो मेरो जलमरी धाकड़ा है पण देखाँ यो बात कैहै है बातो
बे पावणी चावे एक साची है के झूठी। सो ऊँण आप को दिनी सैल करणी ही पाछो
टी घर नै रवा दियो सो हबड़दो, हबड़दो करतो घोड़ो स्पातव में आप पाछो ही
ठाँणा पर ऊबो हुयो। सेठ उतर कर घोड़ा तो साईस नै अपड़ा दियो हर आप कयो
कै मुनीम जी कठै है रे? तो लोग जर मुनीम जी नै बुला कर ल्याया तो सेठ
मुनीम नै हुकम दियो कै आज सारै गाँव कै भंगियाँ नै सीरोपूरी साग कर
र जिमावो हर पकवाणी भंगी कै घर सारो सामान भज देवो सो बे आप ही
आप को बणास्यी हर खासी। तो मुनीम जी जर भंगियाँ कै काम में एक
आप को गुमास्तो भेज्यो हन भंगियाँ कै पंचाँ नै बुला कर ले आव। तो बो जर
पर भाग्यो भाग्यो भंगियाँ कै म्होल्लै में पूँच्यो हर बाँ नै कयो कै थाँनै मुनीम
जी बुलाया है। तो मुनीम जी को नाँव सुणताँ ही जमादार चोधरी बो बैं कूँ आगै
हर बो बैं कूँ आगै जर ठोला भाज कर सेठाँ री हेली पूँच्या हर आप ऊणाँ
मुनीम जी कूँ राम राम करी। हन भाज अनदाता! म्हानै की काम तेड्या जो
हुकम फुरमावो मे हाजर हाँ। तो मुनीम जी कही हन थे जमार नागड़ी
पागड़ी कितरा आदमी हो। तो कही कै नागड़ी पागड़ी ही बतावाँ एक लिगरी।
तो कही लिगरी बी बतावो। तो कही हन नागड़ी पागड़ी तो माणस डोड सैक
हर हर लिगरी पूँणीक दो सै। तो कही कै पूँणी दो सै कै वास्तै सीरोपूरी साग
बणवावो हर जितरो थाँनै सामान चाये बा सो आपणी दुकान सूँ ले हर
पकवाँणो भंगी कै घर में मोतिन लग कालेवो हर बठै ही सब मिलकर जीम जूठ
लेयो। ज्यो कुछ बाकी बँचै सो बो भंगी नै देयो सो आप को दो च्यार दिन
ताँणी खाबो कैगो। तो कही अनदाता! भले ही काम्यां। हर या कह कर बै भंगी
सेठ की दुकान पर जाय कर ज्यो ज्यो चीज चायती हुई सो लेले कर आप कै म्होल्लै
में पूँच्या हर फेर बीं भंगी कै घर में भट्ठी खोद कर सीरोपूरी साग बणाला

लाग्या। सो पैलाँ तो सीरो बणायो जैं में बकीलो घी हर दूँणी खाँड दीनी। फेर
पूरी बणाई हर जणाँ पाछै साग छूँकबा लाग्या तो छूँक घणूँ ऊकरयो होबे हर
सिर पर छाँन घल री ही। सो साग छूँकती बिरियाँ लपट नीसरी हर ऊपरने जाकर
छाँन कै लाग गई। हर छाँन पातीकी ही तो आग लागताँ ही भभक उठी हर
च्यारूँ मेर छापराँ कै लाय लागगी हर स्यातेक में सारो मंगीवाड़ो पाड़ै उतग्यो हर
जल बल कर राख होग्यो। जीमणूँ तो डूरग्यो हर बापड़ा कै लेणाँ कूँ देणाँ पड़
गया। हर ऊपर होली एक भाजतो होय भाज्या हर होय भाजता च्यार भाज्या तो
जाय मुनीम जी नें खबर करी हक बठै तो या बुणी। जद मुनीम जी या
बात सुणी तो बै भाज कर सेठ जी कै पास गया हर सारी बात माँड कर कही
सेठ जी सुण कर चिंतातुर का हो गया हक ज्यो बात मंगीड़े कही ही बा ही
हुई। सो बड़ा गजब हुया। थारो तो दुनी में जीणूँ ही चोखो कोनी। के बेरो
किलराक आदमी थारो रोज मूँ देखै है हर न जाणै किसी किसी कै थारो मुख देखबा
कै कारण बिपत्या भोगै है। सो ईं जीबा सूँ तो थारो मरबो ही चोखो है। सो
यो बिचार कर कर सेठ काशी करोत लेबा खातर जाबा लाग्या हक मेरै आगलै भौ
में पुत्तर पैदा हो। तो या बात सुण कर बीं की सेठाण्याँ कै बड़ो सोच हुयो
हक जे सेठ काशी करोत लेलेसी तो म्हारी के गत होसी। कँवूँ कै उण सेठ कै
ब्या कराया हा। जद पैलड़ी कै कोई टाबरटीकर न हुयो तो उण दूसरो ब्या कर
लियो। पण बीं कै बी कोई आस औलाद कोनी हुई। सो बीं की बड़ली
सेठाणी सेठ नें अरज करी हक आप काशी जी करोत लेबा नें क्यूँ जावो
हो? थाँरी छोटी सेठाणी कै पाँच मास को पेट है। तो थारो काशी जी जाबो
बिलकुल न्याऊ है। जद या बात सेठ जी सुणी तो बड़ो राजी हुयो ज्याणूँ
मरती माँ छली नें नीर मिलग्यो है। सो इब बो गिण गिण कर दिन
रखबा लाग्यो। हक आज को गयो तड़के को गयो हर परसूँ को गयो। सो यूँ
कराँ कराँ छठो मास बीत्यो सातवों बीत्यो आठवों बीत्यो हर नवों बी
बीत गयो। सारे सहर में चिरचा चालगी हक बाजाड़िये सेठ की छोटी सेठाणी
कै टाबर होसी ई छोटी सेठाणी कै टाबर होसी। सो सोरखीड़ाँ कै सुलक्ष्ये
हर दोरखीड़ाँ नाक चढ़ग्या। जद दसवों मास लाग्यो तो सेठ जी कै चाव चोगणूँ
हो गया हर हरोज बूजबा लाग्यो हक आज के सल्ली है भज के सल्ली है।
सो यूँ कराँ कराँ दसवों मास उतरबा लाग्यो तो एक दिन सेठाणी कूँठमूठ
को थाल बजवा दियो हर दाई नें हजार पाँच सै रिपिया देदिया हक तूँ सारे
या बात कहदे कै सेठाणी कै बेटो हुयो है। तो रही ठीक है। मैं या ही करसूँ

सो दाई सैहर के बीचों बीच आप के घरां गा ही गीत गाती गई हक सेठ
के इसो सरूप छोरो जायो है कै इसी नकल को टाबर म्हे तो म्हारी सारी
उमर में कठै ही कोनी जणवायो। सामै आबा जाबा हाला पूछै हक
थे दाई आज कठै गई ही तो बा कह देती आ के हक मैं तो पलांथै सेठ के
गई ही। बीं की छोटी सेठाणी के टाबर हुयो है। अणखड़ नाकड़ इसो सरूप
गीगलो है हक मैं तो मेरी उमर में घणां ही टाबर जणवाया पण
इसो सरूप गीगलो म्हैं तो देखबा में आज तांणी कोनी आयो। सो
सारै सैहर में या चरचा फैल गई हक पलांथै सेठ के भोत सरूप बेटो
जायो है। भोत हीरक है। इब नांव जातक कुंडली बणाण जोसी नै बुलायो। तो
सेठांणी बीं नै भी चुप चाप दो हजार रिपियों की भरी थैली पकड़ादी
हक थे ईं नै यो कैदो कै पड़ ज्याय हक सेठ के बेटो होतां जायो। तो जोसी
भी सारै सैहर में या ही डूंडी पीटतो फीरयो हक सेठ के बेटो के हुयो है बेटो
ही हुयो है। पण जलम इसी घड़ी में हुयो है कै बारा बरस पैलां जे बाप मूं
देख लेवै तो कंई भी बिगाड़ हो ज्याय। कहतो बाप मरै ही कह बेटो मरै।
सो सेठ नै बारा बरस तक बेटै को मूं नहीं देखणूं चायै। तो सेठ भी देखी हालत
बारा बरस तांणी मूं देखण की टाल करदेस्यां। ईं नै सेठाणयां सारै सैहर
में घणं ही गुड़ बंटवायो हर घणी ही घूघरी बंटवाई। सारै सैहर में भोत
उछाव रयो। हर फेर छोटी सेठाणी नै एक मैं बठाकर पीहर भेज दीती हक
कुंवर को पालण पोसणूं बठै करबा लागी। अठै रावलो ठीक कोनी मैं
अठै रवै तो म्हारा चूक सेठ की नीजर बीं पर पड़ सकै है। हर मैं नीजर पड़
ज्याय तो कंई खोटको होवण को डर है। सो कंवर को नानेरै में ही पालन
पोसण होसी। सो इब छोटी सेठाणी नै पीहर भेज दीती हर सेठ को बठै
आबा जाबा बंद करदीनूं। इब एक बरस बीतो दोय बीतो तीन
बीता यूं बीततां बीततां बारा बरस बीत गया। हर चौफेरै हूं कंवा
का टीका आवै लागै। सो सेठ नै कंवर को बिना मूं देखायै ही टीको लेय
लियो हक बारा बरस बीतां पछै कंवर नै ब्या लेस्यां। सो घणै उछाव हूं
टीकै को दसतूर मनायो गयो। हर बारा बरस बीतां पा सेठाणी नै कहर
दियो हक इब कंवर नै नानेरै हूं बुलवाल्यो। कंई कै छोटी सेठाणी बी बठै ही
बारा मांस पाछै आय गई ही हर कंवर नै मामी नानी पालै पोसै है
सो इब दोनूं आपस में बतलाई हक आज तांणी तो जैयां तैयां छिपा पैली
होबा करी पण इब बात भेद खुल ज्यासी सो सारे लोग कुल में आपां तेरा ताळै

बाजस्याँ हा सेठ बी मोत नाराज होसी। पैलाँ तो बो थे बेरो लगतो होत लेतो क्यूँ
केवतो लेतो पण इब तो बो जरूर लेसी। सो आपणें भाग में यो बाईसाल
रो ओर दुख लिख्यो हो सो भोग लियो। इब आपाँ नै अपघात करकर मर
ज्याँणूँ चायै। सो दूबाँदोल्याँ आपसरी में बतलावण कर कर ऊँ ही रातनै आदी
ढ़लताँ ही एक उजाड़ जेवाड़ा में कूवो हो सो बी में पड़कर मरण खातर जद
सब लोग सोय गया तो बै घर सूँ नीसरी। बो चालती चाली चालती चाली
जद बै गाँव रै गोरवैं ढ़ल गई तो बाँ नै एक साप की बंबी में धाँनणूँ दीख्यो
तो बाँ मन में बिचार करयो इण होन सो यो मणी वालो काल नाग साप है। सो
जे आपाँ नै यो खाज्याय तो मोत आछी बात होय। न तो आपाँनै कूवैमें
पड़ कर हर उण पाछ मरणूँ पड़े हर न दुनियाँ में बालो में होय इण कलाँणी की
जायी वाली कूवे में पड़ कर मरी। तो करी ठीक है। सो बै दोनूँ सीदी सापकी
बंबी पर पूँची हर कर आपका हाथ साप रै आगे पसार दिया इण रै सरप
देवता! म्हे तेरी सरण आई हाँ सो म्हाँनै डस कर म्हारो पापो कर। तो ऊँ
सरप नै बड़ी दया आई इण इब रो सो मिनख आँ री बातों में आवे है हर
आँ रै रूप नै देख्याँ मुग भाजे है। सो आँ री ज्याँन लेणी आछी बात नहीं। सो
बो सरप नट गयो इण मैं तो थाँनै डस कर पाप रो भागी कोनी बणूँ।
तो बै बोली इण रै तो तूँ म्हाँनै जे हर जे न डसे तो म्हारो सराप लेला। जद
बो साप बोल्यो कही हे देबियो! थाँ में इसो रै फोड़ो आ पड्यो। थाँ इब
री मारी थे मिराण त्यागो हो। तो बाँ आप री सारी बात बीं सापनै सुणा कर
कह दीनी। जद साप बाँ नै बोल्यो इस थे मेरो मत। मैं मेरी सपणीनै बूज कर
सात दिन रै मातै कँवर को रूप धार कर थारै सागै चाल्यो चालस्यूँ। थारव
ब्या सगाई बीकारय सधा देस्यूँ। पण ब्या रै सातवें रोज मेरी सपणी मनें
म्हैल में आकर डस लेवैगी हर मैं कँवर को खोलियो थारै घर में छोडकर
मेरी सपणी कनें आ ज्याऊँ। हर पाछो ही सरप बण ज्याऊँगो। तो या
बात सुण कर सेठाँणी बी मोत राजी हुई इण ऊँ री हा बिछायो पाय
गयो। तो बै बी ऊँ सरप की सपणी रै पास गई हर बीं नै हाथ जो
कर बोली इण हे माता! तूँ म्हारी धरम की छोरी माता है। म्हे दोनूँ ई ओड़
में हाँ। सो म्हाँनै सात दिन बेई थारै कँथ नै मांग्यो देवो। तो कही माता
थाँनै नाटूँ तो कोनी। थे सात दिन रै बेई म्हारै पती नै ले ज्यावो। पण म्हारे
जी कोनी धापै। क्यूँ कै मिनख बेईमान होय है। बो लेणूँ ही जाणै है, लेकर देणो
कोनी जाणो। सो मेरै पती नै भेजताँ मेरो जी घबरावै है हर भीतर ही भीतर डूँसी

लाग उठी है ज्यौंणू आज मेरे उलट आवै है। तो बीं सपणी नैं सब तरियाँ बसेब देय कर हर धीर धोवता जैंया कर सरप नैं सात दिन के वास्तै माग कर लेलियो हर सपणी हूं कोल करार कर लियो हत आया पूछाँ ऊजारियाँ जै म्हारै सरप नैं पूछो न मेलो हर छल कपट करो तो थोंपी री कूंड में बांदरी हो-हो कर गिर पड़ो। तो सपणी आप के साप नै सेठाण्याँ नैं सूंप दियो हर साप आप के खोळिये नैं बदल कर एक बार बरस को पागड़ो मंगल, गुलाब कैसो फूल जैं को रूप नहीं रहण्यो जाय इसो डावड़ो बणग्यो। सेठाण्यां गई तो ही रोवती हर पाछी बावड़ी हँसती। सो आप की मरण मरण करती माव करे पैलाँ ही सौरे लोगाँ के सोवतां पाछाँ ही पाछी आप का आप के मैलाँ में जाय सोई। हर खेवड़ छेवड़ तो दोनूं नाखाँ सेठाणी सोय गई हर बीच में कँवर सुवा लियो। दिनगे सेठ नैं कुरुदियो हत बारा बरस बीत गया है। इब आप मैलाँ आ कर कँवर देख सको हो। इब देखण को कोई दोस कोनी। तो सेठ जी या सुण धम धम करतो मैलाँ पूंच्यो। आगे देखै तो दोनूं सेठाणी तो खेवड़ छेवड़ बैठी है हर कँवर बीच में बैठ्यो है। सेठ कँवर की सूरत देख कर चितराम होग्यो। इसी सूरत ऊँण आज ताँणी कठै भी कोनी देखी ही। सो यो रूप देख सेठ मोत राजी हुयो हत नाराण तन्नैं इसो हीरनू बेटो दीनूं। ऊँण डावड़े के सिर पर हाथ फेरयो। मेवा मिठाई मँगा कर कलेवो करायो हर गैर गैरलाड़ चाव करया। इब गाम भर में खबर हुई हर सेठ आप के बेटे नैं परणावण चड़ गयो। इक ऊँदिये री चोर जनेत सैहर बड़ी हर के हर केवार के गळी के गुवाड़ सब लोगौ कँवर नैं मोत सराय्यो हत इसो रूपाळो बनड़ो आज तक अठे कोनी आयो हर आगे आँवण की आस कोनी। लुगायाँ छातां चढ़ टूट टूट पड़ी ही। राई लूँण कर कर फीरै ही हर तणक्या तोडै हर पुचकारा मारे ही। तोरण पर गयो तो साल्याँ, सालाहेल्याँ हर गोत सवासण्याँ सै जण्यां देख देख निहाल हो गई। फेरां में बनड़ी देख कर निहाल हो गई हत यो वर गणगोर माता भलो दुठ्यो है। तीन दिन जान रही सही हर चौथे दिन मोकलो धन डायजो दे कर बेटी के बाप बाँ नैं बिदा करया। हर बरात पाचवैं दिन पाछी घर पूंची। सेठाण्यां घणा लाड चाव करया, भुवा भाणज्यां अड़ अड़ नेग लिया सारै गाँव में उछाव हुयो हर ढोलाँ के ढमके हेई देवता कुग्या सोर सोटीदियाँ खेल्या हर जवे खेल्या। सौरे सौरे सारा नेग चार हुया। रात नैं कँवर साहुकारणी के मैल गयो। दोनवाँ की जोड़ी राम मिला दीनी ही। सो बै दोनूं चोपड़ पासाँ खेल्या हर देर तक रात नैं जागता रया हर बातां करता रया। देवरांणी कँवर

में भी घाल लियो पण कँवर कँयू आग दूं जोड़ी। कँयूँ के जो तो था नौवो दो स्त तीन दिन री कांनणी फेर अँधेरी रात। आज हूं दूसरै दिन कँवराणी रौंड हो ज्यासी हर सदा ऊमर भर बैठी बैठी रोयसी। सो कँवर को भी कँयूं कँवराणी में भी नाग मिल गयो हो तो भी वे मन मोंपता सो ऊपर कुछ उदासी सी छाय गई। दूसरै दिन फेर कँवर महेलां पधारियो हर कँवराणी रै संग मेलो हुयो तो कँवराणी तो मोत हँसी बोली पण कँवर कँयूं उदास ही रयो तो या देख कर कँवराणी कँवर नै पूछ्यो हक आप दो दिन सूं … उदास कँयूं रवो हो? तो कँवर बात टाल दीनी पण कँवराणी हठ पकड़ लियो। लुगाई के आगै मोटयार सदा ही हारतो आयो है। तो कँवर नै भी हठ मानणी पड़ी हर उँण कँवराणी नै सारी बात खोल कर सुणा दीनी हक मैं तो सरप हूं हर सात दिन के खातर तेरी सार… मनैं मेरी सपणी हूं माँग कर ल्याई ही। सो वे सात दिन तड़कै पूरा हो ज्यायगा। तड़कै म्हारी सपणी आपणें महेल में आवेगी हर मनैं डसैगी। मेरा पिराण चल्या जायगा हर तूं सदा के खातर रँडापो ही भेलैगी। इतरी सुण कर कँवराणी का होश खोया गया। हर बा टसर टसर रोवै लागी। कँवर मोत मोत धीर बंधावण लाग्यो पण बीकरौं घड़े पर का आँसू तो बी वे नीवे लागे। पण कँवराणी कोरला सासतर की पढ़्याड़ी ही। सो उँण मन में बात बेपाई हक कूँणसी गली हूं कँवर बँच सकै है। हर बीं के मन में बात समझ में आय गई। सो उँण के करी हक दूसरै दिन सूरज छिपतां ही आप कै महेल हुँलगा कर बीं बंबी तांणी छिड़काव कर दियो हर जगाँ जगाँ कांचै दूध में मिसरी घोल घोल कर कुंडारा भर भर कर धरवा दिया। मूं अँधेरो होतां ही बा सपणी आप की बंबी मां हूं नीसरी हर बायर आकर सीली सीली आली रेत में लोट लोट कर बाग बाग हो गई। फेर बा आगै सी चाली तो कोरा कोरवा दूध भरिया पाया सो बा दूध पी पी कर निहाल हो गई। सो बा चालती ही सांझ पण बा लोटती पोटती कांचै दूध का कोरा मिसरी हर मिसरी मिल्या बरवा पीती पकी आदी ढ़लतां साहूकारणी कै महेलां पूँची। बठै बीं नै च्यारूं मेर अन्तर को छिड़काव पायो जैं की बासवात हूँ सारो महेल डैमबर हो रयो हो। सो बठै जाकर सपणी को जी मोर बी राजी हुयो हर रसाक के लड़का पर सपणी बां के कनै लोटती पोटती पूँची। आगैं पिलंग पर जा कर के देखै हक दोनवां की मींट लाग री है। दोनवां की सारस की सी जोड़ी देख कर बा बी निहाल की हो गई। कँवराणी बी आदी ढ़ले तक जागती रयी पण नीं…

पापणी आडी दलतौं बीं नैं आ दबाई हर एक रूपकी आप गई।
बे माता का लिख्या अंछर टलबा का नहीं। हर मन तो सपणी यूं कै
हस कँवर नै डस ल्यूं हर एक मन बा यूं कैसे मेरी आज मोत मोतआव
मगत करी है सो जैं को मैं काचो दूद पीलियो बीं को बुरो करणें मेरो काम
नहीं। जैं मैं ई कँवराणी को दूद नी कर ई नै राँड करदीनी तो मेरै सरीखी
कोई नुगरी नहीं। हर फेर बीं कै मन में आई हक देखी जाती जो कुछ बी
होसी। जे मैं कँवर नै नहीं डसूंगी तो मेरो रे हाल होगो। हर बा फेर फण
उठा र कँवर पर चाली हर फेर बाँ को रूप देख कर पाछी हीहटगी हक
या जोड़ी राम जी किसी के सरूप मिलाई। ई जोड़ी नै खंडत करबा पापाँ को
अदकारी होबो है। हर बा पाछा ही फण पटक लियो। तीसरौं फेर बीं मन
में बिचार बाँदयो हक चाये पाप लागो, चाये धरम मैं पण मैं मेरो
धणी दूसरी लुगाई नै कैयाँ द्यूं? आज ताँणी कोई बी आपके धणी
नै माग्यो कोनी दीन्यूं फेर मैं ही माग्यो देकर क्यूं छोडूं? हर बा फेर
फण उठा कर तीसरी बार कमची का कर चाली तो रब बाकै उण बींनणी की
व्यावली रखड़ी, माँदै की सुहाग बिनली, हाथाँ का चाँवड़ जोरा हर म्हन्दी रच्योड़ी
देख कर बीं को फेर हियो पसीज उठ्यो उठ्या हक ई बापड़ी साहूकार की बेटी
मेरो के बुरो कर्यो हो जो मैं ई को सुहाग पूंछूं हूं — ई बापड़ी आपकी
मा कै गरभ ले र दुनियाँ में के देख्यो हो। मैं तो दुनियाँ रगो देख चुकी हूं हर
मेरी घणखरी उमर बी बीत गई है। हर फेर मेरै खाँवन को बी जी ई देजी
में रल गयो है सो मिल्या दिल फाड़ना आछी बात नहीं। तो या बिचार कर उण
सपणी आप को ही अपघात कर लियो। उँण उठा उठा र फण नीचे कपै आँगण
में माचा हर बा यूं फण पटक पटक र मर गई। दिन उगे कँवर कँवराणी
जाग्या तो के देखै है कै ढोलिये कै तलै काली सपणी मरी पड़ी है। कँवर सपणी
नै मरी देखतौं ही बेवलखातो होग्यो। जार बेजार रोवै लाग्यो। आप को सिर
धुणौं लाग्यो हर सपणी नै उठा कर आप कै गलै में घाल लीनी। साहूकारणी
मोत समजायो, मोत आगै आगै फिरी हर मितर। जाँणै ही उतरा सारा तेवड़
कर लिया पण कँवर की दसा पल पल उलटी खराब होती चली गई हर
इब बो साहूकार को बेटो बीं नै गलै में घाल्यां फिरै है हर हाय मेरी सपणी
"हाय मेरी सपणी" कर है। या सुण कर नाई की दूसरी संका बी मिट गई हर
उँण कथा के वा वा जी बारठ जी वा वा। खूब कही। इतै में बै करल नंदी
के कनारै जा लग्या। तो बारठ जी कही हक जा रै, नाई का, नंदी माँ हूं लोटो भर

न्याव सो म्हूं पाणी पात पीकर ताजा तिवाँना हो ज्यावाँ हा फेर तावळा तावळा चाल कर आगले गाँव जावस्याँ। तो नाई बोल्यो हाँ ठीक है बाबाजी पे अठै खेत नड़ै नदी किनारै बैठो। मैं आप तांणी पांणी ले र आवूं हूं। सो नाई तो लोटो ले र नदी पै गयो और पूग्यो तो आगे काँई देखै है के एक म्हाजन एक छै सात बरस कै लड़के ने टाबर नै सारा चोखा चोखा गाबा पहराय र हर चोखो चोखो जेवर पहराय र मूलै मैं नदी में बुहावै है। तो या देख र नाई तो फेर खड्यो को खड्यो रै ग्यो। बो माजरा बीं मूलै बालक नै नदी में बुहाय र बोल्यो के हे गंगा माता! या ले तेरो लाल। मैं तो तनै ज्यूं को त्यूं थारी गोद में कर दियो है। हर अतरी कैय र फेर पाणी में बहतै थकै ऊं टाबर नै देख्यो हर तेरा म्हारा अतरा ही संजोग हा। इतरी कह र बो बिना आंख में आंसू ल्यायाँ बीतायो गंगा माता (भागीरथी) नै निमस्कार कर र आप की मूली पहर र आप कै गेलै पड़्यो। तो नाई कै इब यो तीसरो अचरज खड्यो हो गयो। सो बो बेगो बेगो पाणी रो लोटो भर र बाबा जी रै कनै आयो हर ल्यार लोटो तो बाबा जी नै पकड़ा दियो हर हाथ जोड़ र बोल्यो। हाँ बाबा जी बाबा जी! आज मैं नदी पै एक और ऐसा तो देख र आयो हूं सो बीं को मतलब आप बतावो देवो तो जी में चित स्यान्ती होवै। तो बाबा जी बोल्या हाँ मैं पाणी पी लेवूं हूं फेर आपां गेलै चालतां चाल्यां हा थनै मैं थारी बात रो बतावूं देतो जावूं। तो कही ठीक है। सो पाणी पात पी करह संजोरा हो कर बाबा जी चल खड़िया। इब वै बीं बात रो बतावूं देबा लाग्या। बाबा जी कैवै है हाँ नाई हूँ धूरा देवे है। सुण हे नाई रा! एक ठाकर लोग हो। बो घर में तो कछू हो रोवतो। न बाड हो न फूली। न नोकरी है न चाकरी। बै घर में दो मीयूं बीबी हा। सो बो धाड़ा दोड़्या करतो। एक दिन कठै हूं माल मामलो लूट र ले आतो हो फेर बै छै मास घर में बैठ्या खाया करता। बीं कै यो नेम हो हर साल भर में खाली दोय ही धाड़ा दोड़्या करतो। तीसरो धाड़ो रोजी करतो। या बीं कै आणं ही। हर धाड़ो बी बो खाली सुनार हर बाणिये कै करतो। तीसरी जात नै कोनी लूटतो। एक धाड़ो तो बो मैं करतो हर दूसरो कै मैनै में। करणी मालिक री इसी हुई हाँ एक साल पैलो तो धाड़ो ऊंज कर लियो पण बीं में माल मतो कुछ कम हाथ आयो। पण बीं कै स्हारै कैयाँ जैयाँ करता छै मैनाँ तो दुख सुख पार काड़्या हर छठो मास उतरतो ही बो बाँध कर हथियार पाती आप कै घर हूं नीसर गयो। बो सारै चोखलै में फिर लियो पण कठै बी तक कोनी लागी। एक सतवारो बीत गयो

दूसरो सतवारो भी गयो र छेल्ले नार्दे तीसरो सतवारो भी रूके ही नीकरगयो। इब चोथो सतवारो लाग्यो। सो बी रो भी पैलो दिन बीत गयो। दूसरो बीदोरो को दोरो ही गयो हर तीसरो भी दोरबंग गये तो इब ठाकर के मन में सोच खड्यो। हो गयो हन जैं या सतवारो भी यूं ही गयो तो मोत बुरी हो ज्यासै की ए आगला छै मास टूटणाँ ओखा हो ज्यांयगा। चोथे दिनकी ठाकर सारे दिन चालू करतो रयो पण कांई भी हाथ कोनी लाग्यो, पाँचवै दिन को रातनै हर सारे दिन में घाड़ दूढ़ ही बोकरयो पण रै कांई भी हाथ पल्लै कोनी पड्यो अब छठे दिन ठाकर की हीमत टूटगी। उँण देख्यो हन जे आज भी धाड़ो न लाग्यो तो बेमोत मरग्या। घर दाणूं एक बी नहीं। सो आगला छै मास कैयाँ टूटैगा या सोच कर ठाकर हथियार पाती ले कर हर कमर कस कर बो धाड़े पर नीसर्यो। सो दिनगे हूँ दिन ढले ताणी फिरतो रयो पण कांई भी कोनी हाथ लाग्यो। नेठ नै बो हार कर भूखो तिस्यो नंदी के कनारै पाणी पीबा नै पूग्यो। तो बठै के देखै है के मोत सा लोग लुगाई ऊँ दिन नंदी में न्हाँण रया आय रही है। ऊँ दिन सूरज ग्रहण हो। सो ग्रैण सुद हुयाँ पाछै मोत सा लोग बाग नंदी में न्हाबा आया छा। सो ठाकर बिचार कर्यो हन हो न हो अठै तेरो मोको लाग सकै है। सो बो भी न्हाँण करबा वालाँ में जाय कर रलगयो बठै एक सेठाणी बी न्हाँण करबा आई छी हर बीं के सागै एक दो ढाई बरस को लड़ो सो बेटो हो। जीं नै बा सोनैं के गैणाँ हूँ कड़ातूड़ कर राख्यो हो। सो ठाकर की निजर बीं अबड़ै के ऊपर पड़ी तो बीं कै मूँ में लाल टपक आई हन जैं ई टाबर का गैणाँ गाँठी मनै मिल ज्यावै तो मोज हो ज्याय हर छै मैनाँ म्हे मीयूं बीबी घर बैठ्या गिलोरी फलका खावाँ। पण ई टाबर का गैणूँ कैयाँ हाथ आवै। जै मैं गैणूँ काडूँ, तो यो टाबर रोसी हर सारै लोगाँ नै बेरो पड़ ज्यासी, हर बै म्हारो लारो करसी। सो जे होय सकै तो कोई आवद काडणूं चाये। सो उण के करी के तरकतो सरकतो ऊँ टाबर कानी गयो हर बठै नंदी कै ढाबै बैठ कर नंदी की माँटी लेकर दो घोड़लिया बणाया हर फेर बै ऊँ टाबर कानी हाथ पसार कर नाच्या तो टाबर को जी खिलणाँ कानी मोत चालै सो बो जठै बैठ्यो बठै हूँ उठ कर हर बै खिलाणा लेबा नै ऊँ ठाकर पास गयो। तो ठाकर च्यारूँ मेर देख कर हन कोई देखै तो नहीं है के मट बीं टाबर को मूं बन्द कर कर हर नंदी में होलै सीक तिसल पड़यो। पाणी में चोबी मार कर बो ढाबै के सहारे ही सहारे दूर चल्यो गयो हर बठै ऊँ टाबर का तो गलो भींच दियो हर फेर कांठै में, गार में चला दियो हर गैणूं गाँठी सो लेकर आप भी

हुयो। बो दड़ाछंट घ[illegible] भाज्यो पण बीं को मन पकड़्यो गयो रुस लें धाड़ो नहीं रुका करी रा करी को इरमूँ लें बालक री टर पैंणा के दिन बैती गंगा कै कनारै पण सोनै रो कलसुग [illegible] बास है। बो आदमी नै आन्दा कर दैवे है। लो हजारों को धन पा कर रौगड़िया गैल री बात नै भूल गयो टर बैंगाँ ही चागड़दा उडाबा लाग गयो। करणी मालिक री। एक मास गयो, दूसरो गयो टर तीसरै मास ठकराणी आसा हूँ रैगी। तो ठकराँणी बैं सेठ के टाबोरये हालो काँठ कडूला आप के कतैं हाथां घर लिया हक जै बालक गोपाल होगो तो मैं बीं नै पहराऊँगी। ठकराँणी कै नोवें म्हैनै बेटो हुयो। ठाकर कै घर में मोत उछाव हुयो क्यूँकै बड़ी ऊमर में बेटो जायो हो। तो मोकलो गाँव में डको डलो गुड़ बाँट्यो, चोजिपार घूगरी बाँटी टर कारू कमीणाँ को नेग जोग चुकाया। जगाँ की जगाँ सारी बात हुईसकी। ठकराणी कै मन में घणी घणी खुस्याली हुई टर बै बेटै को मुख देख देख जीबा लागगा। बीं नै खूब लाडाँ कोडाँ राखता। खूब खुवाता, पाता, खूब पैराता। बो भी दिन दूणा हर रात चौगणा बदबा लागग्यो। साल गई, दो साल गई [illegible] गई इब बो उतरो ही बडो हो गयो जितरो बडो बो बाणियै को बेटो हो जीं नै ऊण ठाकर नदी में डुबो कर मारयो हो। इब एक दिन आँगण में खेलतो खेलतो बो अचाणक बेमार पड़ गयो टर बीं कै ताप चढी तो इसी जोर की चढी हक बो परेबाँ में तो टलो हेब हो गयो टर ताप में आग री नाँई बलै लाग्यो, टर साँज में सूरसोयै पड़ गयो। ठाकर ठकराणी कै मोत सोच फिकर हो गयो। उणाँ बीं को जितरा न करणाँ हा उतरा जतन कर लिया। डाकण स्यारी को टोटका कर लिया, बेकरा उतारा दे लिया, झाँझा झाड़ दिवा लिया, डोरा जंतर करवा लिया बैं भोपाँ नै बुला लिया, सारी भ्याँन का देई देवता मना लिया पण क्यूँ भी कारी होती लागी। कँवर की ताप बढती ही चली गई। टर एक दिन बो जाबक मरणासन्न हो गयो। तो ठाकर को चित उदास हो गयो। बीं की आँख्याँ री नींद टर पेट की भूख बंद हो गई बो तीन दिन टर तीन रात लाणी कँवर कै हरै तरधान बैठ्यो रयो। चौथै दिन बीं नै बैठे बैठे नै ही [illegible] नींद आ गई। तो नींद में बो के देखै है कै एक लुगाई ऊँ ही बगती नदी मा[illegible] मूँ काड कर बीं ठाकर नै धमकावै है टर क्यूँ है [illegible], तूं [illegible] जो दिन याद है। कि तूं भूल गयो जो दिन जद तूं ऊण बाणियाँणी [illegible] बेटै नै नदी में [illegible] गाड कर मारयो हो टर नै सोनै को काँठ कडूला काड कर ल्यायो हो ज्याँ तूं आज तेरै छोरै नै पहरा राख्या है। आज तेरो जितरो जी दुख पावै है उतरो ही ऊँ दिन बीं कै मा बापाँ को पायो हो। यो बो ही लड़को है ज्यो तेरै घर पड़ कर बैर बदलो लेबा आयो है। है कहती [illegible]

मैं मैं तो हे [illegible] होण री [illegible] में ज्यो रसी [illegible] बाँधीगा
हो कुरत्ता हुया औ है। तैं ऊँ घड़ी जितरो भी राजी रसो ऊँ हे [illegible] भोगणूं
तेरो भी नास [illegible] रोगो। या बात [illegible] आगमोगणियाँ [illegible] सूणी [illegible] जितरे तूँ
जीवैगो उतरै री [illegible] [illegible] इतरै में बीं री आँख खुली [illegible] तो
[illegible] उपला सांस लेवे है। कँवर री या गत देख कर ठकराणी फूट फूट कर
रोवै लागी पण [illegible] भी पकड़्यो गयो। बीं रो काळजो पाछो रो गयो।
बीं रो गैल रो पाप जाग उठ्यो हर बीं रो काळजो धर धर काँपै लाग्यो।
इतरै में कँवर रो जीव मुक्त हो गयो। तो ठकराणी तो मोत मोत रुदन करबा लाग
गई [illegible] खावै लागी [illegible] धूनै लागी पण ठाकर रै आँख में आँसू सूख
गया। बो डर लाग्यो हत न जाणे ई पाप रो आगे ने [illegible] रे फल
भोगणूं पड़ेगो। सो ऊण कँवर की खोड़ ने हसनात करबा रख तथा नफा बीं
ने चालवा पहर उठा कर हर बै बाणिये रै कँवर री लाश कड़ा गोदड़ै पेटप
कर आप री गोदी में उठा लियो हर पेर एकलो ही बण में चल दियो। सो बो
चालतो चालतो नदी रै कनारै पूग्यो हर जैं ठोड बीं ऊण बाणियै रै कँवर
ने नदी मे गेर कर मार्यो हो बैं ही सागण ठोड आप रै कँवर ने ऊँ नदी में बुहा
दियो हर नदी हूँ हाथ जोड़ कर या अरज करी हत हे नदी माता! बीं कँवर
रै बदले में मैं मेरो यो कँवर दे चाल्यो हूँ। अब मेरो पाप बराबर हो गयो
है। आगे ने मैं जितरै ताणी जीवूँ उतरै ताणी धाड़ो नहीं करूँगो चाये मैं भूख
मरतो मर ज्याऊँ हर चाये मनै मांग खोड़णूँ पड़े। पण मैं इसो नीच काम आगूँ
सात जलम में भी कोनी करूँगो। यो पण कर ली हर बो बगती नदी ने निमस्कार
कर री आप रै घर ने नावे हो। हे नाई जी! ऊँ बगत हूँ बाठ जी पूग्यो हर पो
चैन देख कर आयो। इतरै में बारठ जी हर नाई री एक दूसरी ढाणी रै पास जा
पूँच्या। तो बारठ जी तो पेर गाँव रै बाहर एक बड़ रै रूँख रै नीचै गहरी सी
छाया देख कर बैठ गया हर नाई नै कयो हत तूँ जा ई गाँव माँ हूँ कंपू खाणे
पीणै रो सामान लिया। इब कूँली छाक रो आयो है सो आपाँ अठै ही ई बड़ रै
तळै दाळ बाटी बणास्याँ हर दोपारी टाळ स्याँ। तो या सुण कर नाई तो गाँव में
खाबा पीबा रो सामान ल्यावण चल्यो गयो हर बारठ जी बैठ रूँख की छाया
बैठ गया। संजोग रो पीवणूँ हो हर बात रो चालणूँ हो। आगे गाँव में वस्ती ही
बो पैल ही मचाँ रै देवे है के एक गाँव रै उरलै पासै ही गुवाड़ी है जैं रै आँगणै में
एक मोरचार तो तळै ने सिर करयाँ बैठ्यो है हर एक लुगाई बीं रै गिण गिण कर जूता
मारै है। सो जूता जद पूरा हो गया तो बा नाँकै जा खड़ी हुई हर बो मर उठ बाघ

के श्याम लाग गयो। नाई यो तमाशो देख र चित भ्रम में डूब्यो तो हो गयो।
उण गाँव में तावलै तावलै बापू तो समान लियो हर लूँ सेनी लियो। फर
बो बाँ सी पगाँ पाछो मुड्यो हर बाबा जी रै सनै आ र समान तो सो
धर दियो हर बाबा जी नै हरख मोड़ र आज री हगत बार बाबा जी
बाबा जी। आज मैं एक औ इसो तमाशो देख र आयो हूँ जिको मैं
आज तांणी कदै ही को देख्यो हर सुण्यो न। तो बाबा जी कहीं हक
इब थारै बो इसो के देख आयो सो म्हाँने बताय। जद नाई बोल्यो,
इसा में बखत में ई गाँव माँय बड़्यो तो ऊँ बखत में मैं देखूँ हूँ
के गाँव रै ढलै नाँव री एक गुवाड़ी कै आगणै में एक गाड़ तो बंध्यो
है हर एक लुगाई बी रै ऊपर खड़ी खड़ी जूत मारै है हर बा
चोर री चोर गिणती बी गावे है। तो बा एक इ सबू को रासो।
जूत गिण र मार्या। बो मरद बो गुणक्यो न बो मुणक्यो। हर जद पूरा
सो जूता बा बे के मार चुकी जद बा लुगाई बैं नै आप ही छोड़ र
नाकै चली गई हर बो मोट्यार तो फड़को उठ र आप रै काम लाग
गयो। तो मैं यो देख र देख र हैफ़ खाबा लाग गयो हर बठै रै आड़ोस्याँ
पाड़ोस्याँ नै बूझ ताज की हक यो के बा है? तो बाँ मनै कयो हक यो
कोई नयो काम कोनी। यो तो जद सूँ ओ ब्याह हुयो हर या नार घर में आई
जद सूँ ई चालू है। या ई री असतरी है हर यो ई रो गाड़ है। सो नित
सँवेरी या ई नै आंगण में बठा र सो जूत गिण गिण र मारै है हर
यो बै आँख मीच र चुपचाप खावै है। न रोवै न रीसै। हान कोई
बात पालिये है नै ही रहै हक मेरो यो हाल है तो कुछ बे लोग बी करी
घर वालौं नै समझावै। हर यो मोट्यार इसो तगड़ो है के पाँच मोट्याराँ
नै मारै पण ई लुगाई रै आगे तो ई रो रै बेरो रै लोर जुर ज्यावै है।
यो माजरो तो म्हाँ हर बाल न ही कोनी हलावै। तो ईं रो के मरम है
सो म्हारै तो समझ कोनी पड़ी। हर न यो आप के पेट री बात कोई नै
बतावै। सो हे बाबा जी बाबा जी यो के औलाण है? जै ईं रो ब्यावरे देवै तो
मैं आगे नै चालूँ हर नहीं मैं तो पाछो ही जाऊँ हूँ। तो बाबा जी कही
हर लूँ हालूबाटी बणाय। आपाँ इण या बण्या हर रहणा हाँ सो पैला तो
भोजन कर लेवाँ हर फेर हुक्को भर र बैठस्याँ जद हुक्के के हूँ साँ सागै तन्नै बात
कैस्याँ। सो तूँ ब्याने खोत बोल मत मानै न। तो कही ठीक है तो इब
नाई तो झट लकड़ी बाली। चुग र हाँ हो। मोरियो घर र रोटा पोवै है हर

बाठ जी बाटिया सेके है। सो दाल बाटी बणा कर होतवाँ तीन पतवाड़ा बणा कर दो तो आप आपकरी मे ले लिया र तीसरो काले कूत्ते नै दियो। इब बै खा पीकर नचीता हुया तो बाठ जी कयो, हक रैगाई र। इब हुको का न्याव मैं तन्नैं बैं बात को ब्यानूँ देस्यूँ। जद नाई कै, कर हुको का बाठ जी कै जचगयो र बारठ जी हुको पीवता जाय है र नाई को हुको देता जाय है। रै वही नाई का! एक गाँव में एक नायक रैतो। बो घणो कयूँ गरीब हो। टाबरी ही ज्यादा। सो छै महिना तो हेर फेर करतो र छै महिनाँ बारलै गाँव में रैतो। बो बटै पाँच पचीस बीगा बोजा बाय लेतो जैं में कयूँ तो दाणा दुणका हो ज्याता र कयूँ पूस पानड़ा हो ज्याता। सो बीं के स्हौरै च्यार महिनाँ कार देतो। टरफर खेती बाड़ी लेकर कर देस में चल्यो जातो तो च्यार छै महिनाँ देस में का मजूरी करकर बैठ टाबरी रो पेट भरतो। बो एक साँड्य राखतो। सो बीं हूँ खेतड़ी कर लेतो र टाळा ठाडाँ टिचकार की आप को काम कर कर बीं साँड्य नै बण में खुली कर कर छोड़ देतो। बा साँड्य एक पग हूँ खोड़ी एक आँख हूँ काणी एक होठ हूँ खाँडी एक नाक हूँ नकटी ही। एक बाजू में लागर लागी ही र दूसरी बगल में रंडा। तो बा न हसवारी रै काम की ही र न बोझ का ढोवण कै। तो न तो बीं नै चोर उचंगाले ज्याता र न कोई गुवाळ पाळी हाथ घालतो। बो नायकड़ो बीं नै जेठ साढ में जा ढुवालतो र कयूँ लूँग लाळो, पूस पानड़ो, खरसणे फूँडो खुवाय पाय कर आप को काम काड लेतो र फेर बीं नै रोई में राम भरोसै छोड़ देतो। तो हळबाणी की रुत दूसरी साल सम्हाळतो। इतरै बा बापड़ी बैठ बण मे चरती फिरती। च्यार मींह चौमासे में तो बा फिर ढूँढ कर आप को पेट भर लेती पण खरी रुत मैं जद बण में लाबा नै कयो बी कोनी ल्हादतो तो बा भोत दुख भरती र तिस मरती माँदी हो ज्याती। सूकी काँटी चाबती फिरती र पाणी तो बीं नै कई कई दिनाँ ताँणी कोनी मिलतो। कदे कदा जद बो नायकड़ो पाँणी भरकर एक आद घड़िया ले ज्यातो सो बो बीं नै बठे ही रोई में पाय आतो। पण बीं हूँ भी बा कदे धापती कोनी। सो रे नाई रा, बीं का हाँडा थक ज्याता र जद बा बैठ ज्याती तो पैराँ ताँणी बीं हूँ उठ्यो कोनी जातो र जे उठ ज्याती तो बैठणूँ ओखो हो ज्यातो। सो बीं बण में कागला रैता जिका बीं नै भोत दोरी घालता र जगाँ जगाँ हूँ कुचर गेरता। तो बीं के माल निकळ आतो र लोट बगबो करतो। ईयाँ तो नीचे फूटयोड़ो हो ही ऊपर चोंच की कागलाँ फोड़ गेरता र बीं की भोत दुरगत होती। बा खरसै की रुत राम राम कर की काडी। मरती

[illegible] हाँ [illegible] रह्यो हाँ थो
[illegible] गाँव में [illegible]
बतावै। पण फेर वाँ जो जी गाँव में आगे है [illegible]
गाँव के [illegible] में एक [illegible] [illegible]
एक बूढो [illegible] जी में [illegible] तो नाई के [illegible]
[illegible] बारै में [illegible] तमाखू माँगी पण [illegible] आदमी [illegible]
[illegible] दुकान पर [illegible] तो ओ [illegible]
जी दुकान में [illegible] पण तमाखू [illegible]
बो [illegible] एक पोसे की तमाखू माँगी तो [illegible] बो दुकानदार
कान [illegible] मार गयो। दूसरी बेर उण तमाखू माँगी [illegible] बूढो एक [illegible]
[illegible] तमाखू [illegible] तो बो बूढो [illegible] बार फेर [illegible] मारग्यो
तीसरी बेर उण [illegible] तो बो बूढो बोल्यो [illegible] तमाखू [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

रो जीवती। जीवतो जीसरतो रोती हर बारी जयूं रैती रोती। हो है नाई
को! बा मूली लॉड्य तो बा लुगाई है ज्यो बीं मरदरै रोज जिण जिण रा सो
सो दुख मारे है हर बो नापङ्क बो मरद है ज्यो। तित री सो सो दुख खाय
है। बापूं कै पैलै भो मैं बीं नापङ्क कै ऊरणी नै बाजी पण भराई रोती। बीं री
कमाई नै खाई पण बीं रा सुख दुख पेल पेल कर। जैं कै अ दैल मैं ईं भो मैं बो
ऊरणी नै लुगाई बणी रहती नापङ्क मोटयार बणग्यो। तो बा बीं री कमाई खाक
है हर खाय बी है हाड पेल पेल कर। सा है नाईरा! अै बों कै पैलै भो रा
लिखतल रा फल है ज्यां भोग रया है। इत्तरी रह का बात जी री इक
इत सीळो हो गयो है सो आपां नै आगी रै चालणो चाये बापूं कह्यो है।
बार तो कारचाँ कर ली। तो कई रुक चालो। तो इत बात जी हर बो नेवगी
के आप कै गेलै पड्या। सो ब चालता चालता कई दूर चल्या गया तो
बाँ कै गेलै मैं एक दूसरी ढाणी आई तो बात जी देख र बोल्या, इस रै रै
नाईरा! मैं तो अठै गॉव कै गोरवें ईं रूँख तळै बैठूं हूँ हर तूं जा आपणै
इरो मन चाव। हर मेरै पासे लगगर की जीम र गई है सो एक पीसैरी
तमाखू बी लिया। तो बात जी तो रूँख तळै बैठ गया हर नेवगी गॉव मैं गया।
बठै बीं कै हाथ मैं इरो हेत हेत कर लात गणॉ ओनों जाता रो हाहूरहूरहै
[illegible]

कठै नाँई बात रवाई। हर गाँव री इग्हेँ ने तो परवह दियो हर काज
री नेवूँ वणो कि वारे री लालाजी! आप म्हारा आन गाँव री
ही हुजारो। अठ तो म्हाँने म्हारी बात के वाँन् केवो हर नहीं म्हे तो अँ
जाँवाँ हाँ, जद काठ री रही कि बात के है? जद म्हाँनै पैलाँ बताय
हर तूँ थोड़ो ख्यावन लाग। जे थे थाँने थारी बात को थाँनू केवाँ
जद म्हाँ साथ आगो नै चालिया हर नहीं चाय थारी गरज, होय सो कीया।
तो नाई के जो तो बात की केराँ गाँव में गुढ़री ही बे सारी री सारी
माँड कर अरज कर दीनी। जद काठ री क्यो कि चाल गाडड़ी लेले हर मैं
थाँनै बार करतो जास्यूँ हर बात केतो जास्यूँ। तो कही ठीक है हर
नाई कै गाडड़ी लेली हर बे दोनूँ आप के गैल री पड़ग्या। सो बे दोनूँ इब
चालता जाय है हर काठ री बात केता जाय है। नाई हाँ हुँकारा देतो जायहो
है रे नाई रा! यो गाँव सत जुग हूँ चालतो आवै है हर भोत पुराणूँ है।
ई गाँव में कई तरै री रीत चल्या गया है। एक तरै को किस्सो है के ई गाँवमें
एक बामण रैतो। बो गरीबाड़ियो हो। बीं कै घर में एक बुड्ढी बामणी हर एक बेटी
ही। बो दो सेर बेकरड़ी गाँव माँ हूँ माँग कर ले आतो हर बामणी मंडका पोय
देती। सो ऐं कर कर बे काम चलाता। दिनाँ नै जाताँ के काँई लागै ही। दिन बाद
का बामण री बेटी मोटयार हो गयी हर बीं नै ब्यावण सावै हुई देख र बामणी
बामण नै बोली कि आपणी छोरी ब्यावण सावै हो गई है तो ई रो कठै पल
पूँणी बढाणूँ चाये। तो कही के ठीक है। सो बो बीं गाँव के पंच महाजनाँ नै जाय
र कही कि मैं ई गाँव में रूँ हूँ। गाँव राम है। सो मेरै फिर आयो बोल
सरदा सारू सारै भायाँ नै ही बंटवाँणूँ चाये। जणाँ जणाँ की लाकड़ी हर एक जणाँ
को भार। मेरी बेटी ब्यावण सावै होरी है। सो मैं बीं को सुयंबर रचूँ हूँ
सो मेरी बसती के लोगाँ नै सवाहाय करणी चायेहर आपेड़ै बामणाँ कै छोराँ नैघरघर
में एक एक नै बासो देदेणूँ चायजै। हर घर में होय जसी सेर सेर बाजरी भले
देणी चाये सो मैं दाल रोटी बणाय कर आयेड़ै बराताँ नै मूँ जुठ्यो करवा देवूँ
तो कही थारी गत को म्हारी गत। जो थारी बेटी है तो गाँव की बी बेटी है हर थारा
बराबर ई सभी बसती का बराबर हीं। सो म्हे सारा गाँव का महाजन खड़्या होकर
थारो काम सलटा देस्याँ। तो कही ठीक है। इब बो बामण खरचै बरचै कानी हूँ
नचीतो हो कर आप की बामणी हूँ सलासूत कर कर बेटी को सुयंबर रचा दियो। हर
सारै चौवटै में डूंडी पिटवा दीनी कि फलाँणै दिन फलाँणै गाँव कै फलाँणा बामण
की बेटी को सुयंबर है सो जो कोई बामण को बेटो सुणतो फिरतो होय तो पधारया करै

परसण दीन्यो। जो यो समाचार सुण कर दूर दूर के चौखळै रा सारा लोग बीं बामण कै घर भेळा हुया। जो बाँ में एक नायक को छोरो बो। तिलक छापा कर कर बो बामणाँ कै बेटाँ में जा रळ्यो। बठै राज स्यामाण में कुणकीं नै जाँणै पिछाँणै हो सो जद सुयंवर री बेल्याँ आई तो बो बी जामा तीलक चन्दण रो टीको काढ़ कर बिरामणाँ कै बीच में जा बैठ्यो। स्योंग निकळ कर ऊँचड़ नायड़ बो सोवणू हो। ईं री सारी ड्योढ़ी रा छड़ी सी ही। जो बीं सो बठै कोई बी कोनी हो। जाणक ईं तो बो नायक रो छोरो हो पण रूप में बो राजा रो कँवर सो लागै हो। कुणी मालिक री। बात रो चालणू हो र संजोग रो लिखणू हो। बीं रो रूप देख कर सब लोग बाग राजी हो गया। बामणाँ रा बेटा बी ग्यो बठै भला भला भेळा हुया र बीं रो रूप देवता रा देवता रै गया। बिरामणी बिरामण र सारी बस्ती रै लोगाँ बाँ नै मोत कर्यो र नठै नै बरमाळा पहरावण री बेल्याँ आई तो बा बामण री बेटी बा माळ हाथ में लेकर बाहर आई। आगे जा के देखै है के सारै चौखळै रा बेटा भेळा हो रया है। पण बाँ में एक बेटो इसो है के बीं रो रूप जोयो नहीं जावै। तो बीं रै रूप नै देख कर बा बामण री बेटी मोहित हो गई र ऊँण आगै आ कर बा माळ बीं रै ही गळै में घाल दीनी र इब आला जीला बरस दरीला बाँ रा दोनवाँ रा फेरा हो गया। ईं देवता घोळ-इज रा ब्याव रा सार भेग चा दूर रा दिया। रात नै बामण री बेटी मेलो जड़ बो नायक हुयो तो दोनों तीस्या मूंछ्या चोपड़ खातों खेला र हँस्या-बोल्या। इब कै हुयो कै ऊँण बामण री बेटी एक हिरणी को बाचियो पाल-राख्यो हो सो बो बाचियो बीं नायक कै निजर क्यों न चढ़ ग्याय। जो बीं नै देख कर नायक कै मूं में पाणी भर आयो र बो बोल्यो को मारने खायता ईं बचिये रो खाय। या सुण कर बामण री बेटी चितराम सी हो गई इत होनसे-या बामण तो कोनी। जो यो बामण रो बिन्द हो तो तो या इसी बात मूं ईं कोनी कैतो। सो बीं कै मन में कँई हातो चाल्यो गयो। र बा बीं नै निगै रा रा देखण लागी। चोपड़ री बाजी मंडरी ही। पासे रा पासा पड़ रया र तो बीं बामण री बेटी री निजर बीं रै बाँवें हाथ पर पड़ी तो बा के देखै है कै बी री आंगळ्याँ पर कतार री जेर बो चाबातो पड़ रयो है फेर ऊँण ऊ कै सोणै हाथ नै देख्या तो बीं कै मूंठै री आंगळ्याँ कै बीच में रेख पड़ी होवी। तो इब बीं मन में सोच्या बिचार कर्यो इन तो न हो यो बामण को बेटो तो कोनी। या तो यो कोई रजपूत को बेटो है र या यो कोई नायक, चोरी या पारदी है जो

बा बीं नै बूजण लागी हल जी! लुगाई हर मोट्यार रो जोड़ो आद जुगाद
हूँ चालतो आवै है। लुगाई आप रै दुख दरद री बात आप रै मोट्यार हूँ
मोट्यार आप री लुगाई हूँ छानै कोनी राखै। बाँ रो भीतर तो एक हो ज्यावै है
खाली खाल दोय होवै है। सो इब थे मेरा मोट्यार हो चुक्या, हर मैं थारी
लुगाई। क्यूँ कै पाँच पंचाँ में अगन देव री साख हूँ म्हारो थे हाथ पकड़
र थारै पल्लै बाँधी है। हर मैं थारो हाथ पकड़ र सदा थारै लार
लागी हूँ। सो इब थाँ म्हारै मनां की काँई नहीं रैणूं चाये। सो थे तो
थाँ रै मन री बात मनैं बताओ हर मैं म्हारै मन री बात थाँनै बताऊँ।
तो कदी एक बार नहीं लात बार बूजो। जद बा बोली हल थे मनैं या कहो
हल थारी जात के है? जद नायकड़ो जात रो नाव सुण्यो तो खातल देखी भैलो
हो ग्यो। तो बा बामण री बेटी बोली हल थे डरो मत। जिकी बात है सो
मनैं साची बता देवो। तो बो नायक बोल्यो हल तूं तिरिया री जात है। थ:
मनैं साची मानणा बूजैं नहीं, तूं बिलतोवैगी। तो बा हल न थे मनैं
साची बात न कही तो थारो रै मोट्यार हर म्हारो रै आन्तरो। जो होणूं हो
सो तो हो चुक्यो। काचा मोती बिंध चुक्या। इब डुयोड़ा फेर पाछा तो उड़ै
नहीं। सो फेर थे मनैं बी साच क्यूँ न बतावो। तो नायक तो तीन बर बीं
नै नट्यो हर ऊँ बात तीन बार हठ पकड़्यो। चौथी बरियाँ नायकड़ै साच ली बात कह
दीनी हल मैं तो जात रो नायक हूँ। तो या सुण र बा बामण री बेटी
आप रै मन में जात दुख पाई हल लेलै थाँनै कुणाले माँ रै पाप हूँ थाँनै-
यो बर मिल्यो हर म्हारो जलम भंड ग्यो। तो दूसरै दिन बीं आप रै माँ हर-
बाप नै या बात कह सुणाई हर कयो कै म्हारै सरीर रै दाग लाग गई है
सो मैं यो म्हारो काचो सरीर अगनी में होम स्यूं। जीं सूं पाप तो उतरै
नीं पण क्यूँ हलको तो होय। तो दूसरै दिन सारी नगरी में या चरचा चालगी-
हल बामण री बेटी नै एक छलिये नायक बामण रो बेटो रूप धार कर छलली
सो बा आज जीवती थकी अगनी में भगड़ होसी। सो सारै गाँव ई बात की
बड़ी सोच फिकर कर्यो। हर फेर एक ऊँची सी टीबड़ी पर चिता चिण र
त्यार करी। हर बा बामण री बेटी गंगा जल हूँ स्नान कर र पाँचां इमरत.
हर तुलसी दल लेकर रैसम हर चन्नण री तिलक छापा कर र हरै रेसम बागा
धार कर पगाँ में बिछुआ हर हाथ में तुलसी री माला ले कर राम राम जपती
थकी आगै भी गई हर सारी नगरी रा लोग भजन हरजस गावे। बाजो ढोल
भी हुयो। आगै चिता पर पूँची तो बो नायकड़ो बी लारै लारै बठै जा पूँच्यो हर जद

बा चिता प चढ़ गई ह सारी बराती के लोग चिता में कोल्हू धर दिया
ह बा आठी इगाड़ हो गई ऊँ बखत नगरी को लोग तो म्हैं चिता हूँ छेड़ो
हुयो ह बो तावड़ो मोची पाकर ऊँ चिता में कूद पड़ग्यो। ह ऊँ बामण की
अर नगरी बेटी के बीच झाल कर सागे ही लागो ही बळ गयो। नगरी के लोग
पैलां बेरो पाटतां ही बीं नै माणा को विचार कर लियो हो पण बा बामण
की बेटी तर गई हण पो म्हारो जीवन ही चुक्यो है तो ई नै कोई मत मारियो।
जीं रो फल यो हुयो हण बा भी चिता में कूद पड़ी ह बीं बामण की घरां
रो यो जलम तो बिगाड़ ही दियो हो आगलो भी बिगाड़ दियो ह बींकी मुक्ति
कोनी हुई। इब गाँव के लोग मति सोचा विचारी की पण रे होणी जाणी ही
इब बाँ की चिता माँ हूँ दोय डूँखिया उग्या। एक तो तमाखू र दूसरो गुलगंडो
तो लोग बाँ को एक जीव करबा खातर पैली तो तमाखू नै कूटे ह फेर बीं
में कुछ गुड़ मिला कर दोन्याँ को एक जीव करे। ह फेर बाँ नै चिलम घाईर
में भर कर ऊपर हूँ बासते कर चीटा धर कर पीवे ह वे दोनूँ बळ ह
बाँ में धूँ नीसरे। सो हे देवजी! यो तमाखू तो बा बामण की बेटी है
ह यो गुड़ बो नायक को छोरो है। ह आँ दोन्याँ नै एक साथ नाता कूटकर
जो मिलावणूँ है यो ही बाँ को जीव मिलावणूँ है। हण एक रात बाँ को दोन्यूँ
जीव आपस में रळग्यो हो जिसो गुड़ तमाखू नै कूट कर एक जी मिला कर राखे
है। ह फेर आँ नै बासते के तळे धर कर फूकणा जाय है सो यो ही बाँ की चिता
में बळणो है। ह बीं बामण की जलम जाति या नगरी है सो ऊठे या आँधा
पड़ग्यो है हण कोई भी माणस तमाखू को नाँव अपणें मूँ में नहीं घालेगो ह
पीवें ऊठे रा आदमी ई बासते राखी के तमाखू ई नगरी री बेटी के मुताबिक
उगी ही सो बेटी को दाणूँ पीरकाँ के कोनी चढ़े। सो ई बासते तठे ऊठे के लोगां के
आंगळियाँ हूँ बतायो ह थाँ हथ मैं हुको दे कर नाक बढ़ायो होडण
हरखें की धाँते ई बासते ही या छ्वो लाम ता कर गैल्यो ह बाँ केई बरतली

आँधा पड़ग्यो है। इतरी बात सुण कर नाई मति मगन हुयो ह बाकी मीं रे जागा
तावड़ता तावड़ता इतरे में एक दूसरे गाँव के नाखे आय पूँच्यो। तो बामण जी रे
नाई नै कह्यो हण नाई रा है। मैं तो ई बड़ तळे बैठ ज्याऊँ हूँ ह तूँ आपणें
ई गाँव में जा कर एक लो ठंडे सै पाणी को गडवो भर कर ले आव ह एक
हुको भर कर ले आव। तो नेवजी गड़वो र हुको ले कर गाँव में चाल्यो गयो ह
ह बामण जी बैठ्या ही की गाँव के गोरवें एक लड़को दूँगर हो सो बी तळे बैठग्यो।

बातां गढ़ कोड़ी री पत पत जोती जाय। पात रहै परमातमा बात। फेर बजाय। कैवत है बालणों तो हर रो नाम रो पीवणों है। एक गाँव में एक राजा राज करतो। ओ मोत आकरो आदमी नामी हर आप री रैयत नै सताओ हो। बो पिरजा री पालना करतो हर वां रै राज में ठौड़ ठौड़ ठग बदमाश चोर जारा पारा बढ़रिया हा। राजा रो गाँव उजड़ र उजाड़ होग्यो हो। ओ मोत आकरो राज करतो रयो। बां रै एक कँवर पैदा हुयो। मोत लाडां कोडां कँवर पदवी में ही रयो। कारण कै राजा सो बरस हुग्यो पाणी री तरियां कँवर रो जनम हुयो। मोतो दिन हुग्या पण बो तो पड़ियो हो राजा मरण रो नांव नी लेवतो। तो एक दिन कँवर रै मन में कलू खल आ गयो। उण मन में बिचार करयो हण मैं तो बरस रो हुवा पाछो पैदा होगयो पणलोग बी मैं कँवर पदवी में ही रयो। हर कँवर पदवी में ही मरणो पड़सी। हर राजा री मैरै पैलां मरणो ओवेला है। सो जै राजा नै मार नाखूँ जद तो मैं गादी सालां तांई भोग सकूँ हूँ नहीं तो राजा रै हर मलक ले र बैठ्यो रैसी रै ज्यासूं। तो उण मन में बिचारी हण जै मैं मेरै बाप नै मार नाखूँ तो मोज हो ज्याय। गादी मिल ज्याय हर मैं बी लोगां में आयो हूँ सो राजा होणों री मन नाव देवं ज्याऊँ। पण मोको कद लागै। जै महल में मार देवूँ तो लोगां नै खबर पड़ ज्याय हर मेरो मूँ कालो हो ज्याय। सो इसो काम होणूं चायै हण बेरो बी कोनी पड़ै हर राजा नै मार बी नाखूँ। तो संजोग रो पीवणूं हो हर बात रो चालणूं हो। राजा रै गाँव में एक बड़ी भारी खिलाड़ियाँ री टोली आय गई। हर वाँ कचेड़ी में आय र अरज करी हण सिरकार! म्हे दूर सैं आप रो नाँव सुण र आया हाँ सो म्हारो ख्याल आप री नगरी में चलणूं चायै। तो राजा देख र आप रै हाकमाँ नै हुकम दे दियो हण ये खिलाड़ी मोत दूर दूर सैं आपणी आस कर र आया हीं सो आँ रो ख्याल आपणी नगरी में जचवा देवो। तो हाकमाँ सारै सैहर में डूंडी पिटवा दीनी हण आपणे सैहर में फलाणै दिन हर फलाणी घड़ी ख्याल घलैगा सो सब लोग देखण नै आवो। जद सारो सैहर रै मोटयार हर छैल छाबला रे बूढ़ा हर रै जवान सब र सब ख्याल देखण नै आया। राजा बी आप री परजा नै साथ ले र ख्याल देखबा गयो। तो ऊँ दिन कँवर बिचार बाँध्यो हण आज राजा नै मारणो मोको है। दूर बैठ्यो तीर मार देसूँ तो इती कलबल में कीं नै के बेरो पड़ै है हण राजा नै कँवर ही मारयो है। सो कँवर आप रो तीर कमाण त्यार कर र एक कनारै पर जा र बैठ गयो। पैली कै बखतां में बाप हर बेटो एक जगाँ बैठ

दोन्यूं जाणै जाणै ब्याव कांई देख्या व्हता। सो इत्तैं तो यो राजा रो कँवर आप रै बाप नैं मालम जातां आर हो गयो। र उणैं एक ओणियाँणी ही जींकौ पती दिसावर कमावण नैं गयो हो। जींनैं दिसावर गयां पूरा बारा बरस हो गया हा पण वो घरैं कोनी आयो हो। र वो आप रै घरैं कुदरत री आपरी उमर नैं छोड़ र गयो हो। तो वा बारा बरस ताँणी तो पती री बाट देखबा वाळी ही आज ही आवै तड़ै आवै। पण जद बारा बरस बीत गया तो उणकी मन मैं बिचारी हर होवै तो पती तो कदै आय आयो र थारो काम बिना मोट्यार चालै नहीं। सो मैं होय तो आज आपाँ ब्याव देखबा चालां ईं रो कोई मलैस सो दुख देव र मोट्यार कर लियो जाय। र यो बिचार कर र वा ओणियाँणी भी वो ब्याव देखबा नैं आई ही वा भी एक नाई निर-वाळी बैठ गई, ऊँ ही नगरी मैं एक साधु तप हो। ऊँ नैं तपतां तपतां कोई चाळीस बरस हो गया हा। ऊ आप रै शरीर नैं तपस्या कर कर सुखा दियो हो। पण केवळ राम जी का दरसण कोनी हुया हा। तो ऊँ मन मैं बिचारी हर आज ताँणी चाळीस बरस मैं ही तनैं राम जी का दरसण कोनी हुया र तपस्या करबा सारो शरीर बाळ दियो तो इब कितां दरसण होय है। तो ईं हूँ तो मैं कोई घर वालो कर लेतो तो ही चोखो हो। तो यो बात बिचार कर वो ऊ दिन वो ब्याव देखबा आयो हो वो भी एक नाई आ कर निरवाळो बैठ गयो।

[illegible] पैलां [illegible] ब्याव चाल्यो तो वो [illegible] देखतो र देखतो रै गयो। लोग [illegible] हर इत्तो ब्याव तो मैं आज ताँणी भी कोनी देख्यो। पण राजा रै कँवर [illegible] [illegible] साधु [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] में आज मैरे बाप नै मारूँ हूँ। इरयाता
कुछ कहै है बो बी सोळा आना ठीक है। जै मैं केवल पदवी कै लारै उमर ही
खोय दीनी हर तुरतालताँणी राज रोनी हाथ आयो तो इब राज रा सुख की
नै भोगूँ हैं। क्यूँ कै मेरी उमर घणी हूँ घणी ओ है तो हबै पाँच दस साल
ओर जीवूँगो। ना ई पातरी रो यो कैणू है 'घणी गई थोड़ी रही' गलत
नीं है। मेरी घणी सी उमर तो चली गई। इब तो थोड़ी सी बाकी रही है तो
ई थोड़ै जीवणै खातर क्यूँ पाप पलै बाँधूँ। क्यूँ बाप नै मार'र मूँ काळो
करूँ। हर या सोच कर उँण आप कै ती नैं पाछो म्यान में करयो। उन्नै बा बाणी
पातरी री या बात सुण कर 'इण घणी गई थोड़ी रई पल पल बीती जाय,
पातर कहै पखावजया बाजी फेर बजाय।" यो मुतलब काढ्यो इस में कै धणी
नै उडीकती उडीकती बरस बरस काढ दिया तो फेर इब उवाँ बिना उतावळ क्यूँ
करणी चाये। इब तो थोड़ो ग्यावता रेव कर एक बार बाजी फेर बजाणी ही
चाये। तो बा बी यो बिचार बाँध कर हर उँही बखत खड़ी होकर
आप कै घर पाछी गई। तीसरै नाकै बो जिण गुप्यो घर बात करयो बो
सोचा बिचारी कर, ख्यो हो बीं कै बी पातरी री या बात सुण र बिचार
बदल गयो। इस मैं आज चातीस बरस हो गया तप कर कर सारी देही नै
सुका दीनी हर आज मैं या बात करयो री सोचूँ हूँ सो या बात बेजा गती है।
मेरी घणी सारी उमर तो बीत गई। इब ग्यो थोड़ी और गुजाँणी बाकी रई
है जीं कै खातर क्यूँ यो पाप कमाऊँ। पचासी ढलतो ही बुढ़ापो आ ढब-
सी। तो थोड़ी सी गुजाँणी खातर यो पाप करणूँ ठीक कोनी। पण ई पातरी नै
थारै मन मांली बात कैयाँ मालम हुई? या सोड या बात इसारै नै आ कहती
तो थारो दुनियाँ मैं मूँ काळो होगो। जो बी बैं ही बखत उठ र आपरै गैलै
पड़ग्यो। हर घरबोसी री सुई बिका डीली ह यो हर कै गजन मे लाग गया। इबै
राजा रो कैळ उठ र आप कै महैल मे गयो हर रात भर की नींद ही सो सोवणो की
त्यारी करी पण मन मे क्यूँ अजार हरयो हो कै इस हुई ना या आज रे हुई। ई पातरी नै

थांरै मन मांयली बात तो देख्यां बीरो अड्यो। जे या रोड़ या बात राजा नै कह देवैगी तो थांरै मांय राजा के जोरों के जेलपड़ी हैगी? सो यूं जोर तो बोल्यो। बोल्यो विचार कांपकर रयो हो हर अतै में एक सिरदार मागो छुमती आयो हर कंवर नें केगी कै आप आपरा ही हुकम म्हाराज कुंवार। राजा साब तो सुरग पधार गया। हर या बात सुण र कुंवर कै मन मं अति अचरजो हुयो हक या के बात हुई। राजा नें मैं आछ्यो बीछ्यो, खुसीहाल, साजीसक छोड्यो छोड़ र आयो हो। तो अतरीही बार में या के हुई? हर फेर ऊं सिरदार नें पूछ्यो हक राजा साब नें के हो गयो? इसा कांई देख्यां देवलोक हो गया? तो कहीं म्हाराज यां तो म्हांनै कोई तोल ही के हो गयो? पण म्हे तो आ सुणी है हक राजा साब जद तमाम पाछा र धूणी आया र महैल पधार्या तो बां नें तीनहिचकी आई। हर तीसरी हिचकी मैं बां का पिराण म्हाल हो गया। तो कैंवर या सुण र आप के दिल में मोत पिछताया हक जे मैं राजा नें मार नाखतो तो बड़ा गजब हो ज्याता क्यूं के राजा की मोत घड़ी तो आय ही गई ही सो मैं तो कोरो गुनैगार ही होतो। हर ओ राजा को कंवर आप के बाप की तरह हुकम करर राज गादी पर बैठ गयो। उत्तैं बा साहुकार के बेटै की बहू भी आप के घरै गई हर फेर मन में विचार कर्यो हक ओंतर हो गई सो थोड़ा पीसणूं ही पीस लेऊं क्यूं के जे अब तो ज्याऊंगी तो फेर उठ्यार तांणी कोनी माऊंगी। हर पीसणों नें देखें ज्याय तो ठीक नहीं। सो उण के करी हक आप की घर जालां ही पीसणूं ले र बैठ गई हर चाक्की ओ दीनी। कोई पांच सात गाळा घाल्या होगा। इतरै में बी को धणी बी दिसावर से आय गयो। हर आणंद ही आ र हेलो मार्यो हक कुंवाड़ खोल, कुंवाड़ खोल। साहुकारणी नें चाक्की पीसतां धूंती धूंती अवाज सुणी तो बा चाक्की थाम दीनी हक देखां कुण हेला मारै है। इतरै में फेर हेलो सुण्यो हक कुंवाड़ खोल तो बा झट भाज र आई हर आ र कुंवाड़ खोल्या तो आगै के देखै है हक बी को धणी ही आय पूंच्यो है। धणी नें देख र उण मन में बड़ो विचार कर्यो हक देख जे मैं आज मोट्यार करलेती हर बां नें मेरै लागै आज घोलै आती तो बड़ो गजब हो ज्यातो। आज तांणी मेरै गेलै गेलै चालणों पड़ी पाणी ही ज्यातो। मेरो मोट्यार आज घरां आतो हर ईं नें आगै दूसरो मरद घरां भेती पावतो तो यो जाणतो हक मेरै परदेस गयां पाछै रांड लदा ही ये कामकरया हैं। हर मेरी सैर की कमाई पर बी पाणी फिर ज्यातो। तो भलो कै राम भी बायड़ पातरी को भी म्हांनै या हीरैं तोल्ली सीख दीनी हक धणी गई थोड़ी रसीपल बीती जाय, पातर कैहै पाळावज्या गाजी फेर बजाय।" इत्तै तो या हुई हर उत्तै

जो साद जी बीं पातरी री बात सुण कर आप रै चरणां मा पाछो ही पल्लो गयो। बौ जा'र ऊँधा आसण सूं पलाठी मार कर र आप रो ध्यान लगा लियो। बीं रा पाप धुरी ले गई ही। सो बीं नैं बी अणदख राम जी परगट हो कर बोल्या हक हे साद! माग माग, माग। तो साद आप री नींद खोल'र देखै तो मूं आगै एक मन मोवणी मूरती सी खड़ी है। जद साद बोल्यो हक हे भगवान! मैं नैं तो थारो नद आवीदो आवै जद थे थारो चतरभुज रूप मनैं दिखावो। बिना चतरभुज रूप देखे मैं थारो आदीन कोनी हूँ। तो राम जी बीं नैं आप रो चतरभुज रूप दिखायो। तो साद रै आवीदो ना गयो हक आद खुद भगवान ही पधार कर दरसण दिया हीं। तो ऊं बखत साद राम जी नैं हाथ जोड़ कर अरज करी हक हे नारायण! मनैं तो कीं भी भौत चाये न कै, पण चाये मनैं तो तो आप रा चरणां मा मुकत चायै। तो राम जी कयो ओ मा, तेरी मुकत हो ज्या भगती। हर भगती रह कर भगवान तो लोप हो गया। हरऊँ साद रै मन में बड़ी भारी विचार खड़्यो हो गयो। हरऊं मैं आज उठै घर बार कर लेतो तो आज तांणी री लो री भी कमाई माटी में मिल जाती सो भलो कै बीं बापड़ी पातरी रो जो मन ओत मौकै पर सीख दे'र बचा लियो नहीं तो मैं कालीधार डूब ज्यातो। हर आज मनैं भगवान रा दरसण बी कोनी होता। सो यूं कर कर राजा रै कँवर, साऊदरणी हर साद रै लीतवां रै पातरी री बात लागी हर बे डूबता डूबता तिर ग्या।

नोट- बुध राम स्वामी, गागंताल से प्राप्त.

"साद रो सराप"

मोत पुराणां जमानै री बात बतावै हैं कि कूजणौं रै च्यार पाँच कोस उतरादै पासै एक मोत बडी नगर हो जो कै अब तांणी थे पड़्यो है। पुराणी ठेकरियाँ हर नानी नानी आँकलाँ की एक तांणी बठै गरर पड़ रया है। आज बार कालोंग नीकालां में काडा टेवा नै ले ज्यावै हैं। बात की पालणूं तो हर संजोग की पीवणू तो। ई नगरी में दो गुरु चेलो तपया करता। बै दोनूं नगरी रै बायर एक भाकर में रैया करता। कोई तो बतावै है हक बे गुरु चेलो गोपीचन्द हर भरथरी हा। कोई कवै है हक ओ गोरख नाथ जी तप्पा करता। गुरु तो तपस्या करतो हर चेलो टहल बंदगी। एक बार की बात है हक गुरु तो छै मैनां री समाधी लगा लीनी हर चेलै नै कयो कै बच्चा तूं ई नगरी में जाय कर भिख्या लियाया करिये हर उदर पूरणा करबो करिये तो कठै ठीक है। सो या कह कर गुरु तो सांसां रूपाळी में ध्यान लीनी हर

महिनाँ री नींद लगा लीनी। इन्नै चेलो रं कर कै एक बिरियाँ दूजै गाँव में तूम्बी
लेर भिख्या लेवा जाय। बो सारै गाँव में घर घर माँगतो फिरै पण कोई बी
लुगाई बीं नै भिख्या कोनी घालै। हर बो रीतो रो रीतो ही गाँव माँ हूँ पाछो
चल्यो आवै। तो गाँव रै बारलै नाँई एक कुम्हार कुम्हारी रो घर हो। सो कुम्हार
कँवू भलो हो। कुम्हारी निजर ही। सो कुम्हारी तो लड़ती भिड़ती पण कुम्हार पाछै
बावड़तै जोगीड़ै नै आदी रोटी घाल देतो। कुम्हारी बड़बाड़ा कबो करती पण बो
बीं री कोई ध्यान गिणती कोनी रोतो। तो बीं आदी रोटी रै पाण बो चेलो
सारो दिन हर सारी रात काडतो। यूँ करतां करतां ऊणबेंछै महिना कैयाँ जैयाँ करी
दोरा सोरा काड्या। पण रोटियाँ रै बेवँ बो सूकतो सूकतो सूक कर लकड़ी सो हो गयो।
कँवूकै छै छै महिनाँ री मन आदमी में कै छोड़ै। छठै महिनै गरू री नींद खुली तो
गरू चेलै नै देख र कयो रै रै चेला! माड़ो कैयाँ हो गयो? तो चेलो गरू रै
आगै हक हक रोवै लाग्यो। हर बो रोवतो रोवतो थम्यो ही कोनी। तो गरू कयो रै
रै बावलिया! रुयो क्यूँ? बात तो है जिकी बताय। जद चेलो बोल्यो कै गरू जी! थे
तो हताद ही लगा लीनी हर मन्नै ई गाँव रै भीतर छोड दियो। ई गाँव का लोग इता
निरदई सरता हक मन्नै कोई बी आदमी छै महिनाँ रै भीतर च्यार आँगल री टुकड़ो
बी देबा जोगो कोनी हुयो। हर मैं भूखाँ मतो मर गयो। खाली एक कुम्हार का
घर ही इसो हो जठै मन्नै आदी रोटी को टूक मिल्यो करतो जीं रै पाण मैं खड्यो रयो
हर बो बी कुम्हारी रै जी पर की काँय काँय करतैं थकाँ मिल्या करतो। कुम्हार
मन्नै गयाँ पछै टुकड़ो देतो हर कुम्हारी झपाकै बरजा देती। तो या बात सुण कर
हाल तेरै चेलै की या हालत बणाई, गरू नै बीं गाँव पर घोत झाल आई हर उण
चेलै नै कयो कै बच्चा! च्यावल राख। तेरा निमाणाँ हर थाय ठिकाणाँ। आँ रै आयाँ पै
मिट ज्यासी। दूजै दिन गरू कयो हक चेला, आज तूँ फेर जा। गाँव राम है। सो
सौ गाँव में टुकड़ो न मिलै इसी बात मेरै जची कोनी। सो तूँ आज जा कर
ओजूँ बिचार। तो कयो गरू जी, मैं कयो बीं में फरक सार थोड़ो ही है। थे
मन्नै वापरे भेजो हो तो कयो आप कैवो तो मैं चाल्यो। तो जास्यूँ पण ई बस्ती
में टुकड़ो तो कोई बी कोनी घालै। सो इब चेलो झोली ले कर गाँव में भिख्या ल्याबा
नै चाल्यो। आज उण सारै गाँव को बाड़ो ले लियो। सो बारी बारी सारै घराँ में जाय
कर अलख जगावै। पण जीं घर में जाय बैं ही घर में नार पड़ै। कोई तो कैवै हा मेरो
तो खसम खाली कोनी बावड़तो सो आयो। कोई कैवै हक माँगतो पर लपूँ उतर गयो
कमाय कर लपूँ खाय नी जाँ भलो दीसै। कोई कैवै हक आगलो घर देख। कोई कैवै
हक म्हानै तो रामारचा जो मोड़ा खाय गया। सौरै दिन लँगण लाग्या रहै है। टिरवा

है रोती है। कोई कैवै हक चन्यो गा म्हारै घर ने बारा। कोई कोई गायजाध नै जिद्यावैगाौ। दोन किसो तेरै को जीर्णो को बणाव। कोई कहै हक लडके नै मा दो मार गई दियो पण फेर भी आपै जिना रोती रैवै। जिबलु पा मेरी मुवाडी मां हूं नहीं तो सूणा ब्यार मेरुंगी। यूं करतो करतो बो सारे सैहर में फिरग्या पण कोई भी सालो ना आंगतक ना कुलड़ी रोनी घाल्यो। रव वो फिरतो फिरतो सैहर ने ओर नाम हे लेकर इसरे गावं में चल गया पण कुलडी नहीं मिल्यो। बेरैम बो गांव के बारनो जो कुम्हार को घर तो बेठे पूंच्यो। सो बेठे भी कुम्हारी रोनागई पण कुम्हार मको आदमी हो सो बो बापड़ो उठ र आदी रोटी ल्या रवी साधुड़े नै घाल दीनी। हर बा आदी रोटी ले र बो पाछो आप कै धूणी पूंच्यो गांव का सारा हालचाल गरू नै कर सुणाया। तो या सुण कर गरू नै मन रीस उपजी हक यो गांव सारो ना साल उजरजाउला है हर यो आप कै पाप हूं अब अग्यमें डूबैगो। सो हे चेला! जा बीं कुम्हार की धूणी कै लात मारया हक आदी धूणी सुबरण की हर आदी धूणी मांटी की।" हक कुम्हार के पांती की धूणी तो सोने की हो ज्यायगी। हर कुम्हारी कै पांती की माटी रह ज्यायगी। तो बरी ठीक है। हर या सुण कर बो चेलो भाग्यो भाग्यो बीं कुम्हार के घर पूंच्यो। सो सीदी कुम्हारी न्याई के जारु लात मारी हक कुम्हार की न्याई सोने की हर कुम्हारी की न्याई धूल की। या कैवतां ही आदो आगण तो सोने का हो गया हर आदा धूल का ही रह गया। लात मार कर चेलो तो पाछो आ गयो हर बीं गांव में सौरे या चुगली हो गयी हक फलांणो कुम्हार की न्याई सोने की हो गई है, फलांणा कुम्हार की न्याई सोने की हो गई। सो हर भाजतो दौड़ भाज्यो हर दौड़ भाजता च्यार भाज्या सो आप का राजा नै चोप दीनी। तो राजा आप का आदमी भेज कर कुम्हार की न्याई का सोने सोने का लाग का लाग आगण आप के गढ में मंगा लिया हर कुम्हार बापड़ो रोवतो ही रह गयो। जद राज में कोई भी सुणाई नहुई तो बो बापड़ो रोवतो रोवतो बीं बाबै जी के धूणै गयो हक मेरै में तो ईं बस्ती के लोग हर राजा मिल कर या करी। तो बाबै जी नै या सुण कर घणी म्हारो आई हर बी नै कहयो हक तड़के सूरज आगण नीसरते के साथ यो गांव तो ढो ढो बन रोवेगो। जायगो सो तूं तेरी कुम्हारी नै हर सब टीकरा नै साथ लेकर गांव के बाहर नीसर ज्यायो। पाछो बावड़ कर मत देखिये हर जे तूं हक तेरी कुम्हारी पाछा बावड़ कर देख लेवागा तो बात बातरी हो ज्यावोगा। तो कही म्हाराजा! सब ठीक तो मेरे आब तांणी कोई हया नहीं मैं तो नीपूतो हूं हर मेरी कुम्हारी जो है सो बा मेरै पेटे में कोनी। पण मनै म्हार के बेरो घड़े

हम इण गाँव उजड़णवाळो लागे है। थे हरी हो ज्याय हम मैं की मूळ सौके
लपेटे में आ ज्याऊँ? तो सही जद गाँव उजड़ज्यो जावगो, के बाळत एकबाड़
भारी आँधी आवैगी। सो सो बरस का पुराणा रूंख उखड़ उखड़ हू ज्यादै पड़ै
बादळ आभा में गरड़ गरड़ करबा लाग ज्यावै हा। फिर फिर रूड़ा आप आप
को पाछा मुड़ मुड़ ज्याय। बीजळी चमक चमक र पड़बा लाग ज्याय हा सारी
धरती धर धर काँपबा लाग ज्याय। च्यारूँ मेर अंधेरो हो ज्याय र लाग
जीव जिनावर डर डर र इत्नै उत्नै भागबा लाग ज्याय हा र मोट्यार
लुगाई, टाबर हा के जुवान सै तोबा धाड़ मचाबा लाग ज्याय। कै बाळत तै
या देवे लेयो हक इब गाँव उजड़ज्यो ज्यायगो। तो तूँ थारी चीज बसतको
मो छोड़ र गाँव हूँ बीतर ज्यावे हा सागै तेरी कुम्हारी नै लेलेये। हाँ जे
तूँ चीज बसत हूँ बाँधेड़ी रहबा लाग ज्यायगो। हक या चीज ले चालूँ वा
चीज ले चालूँ तो तन्नै अबार हो ज्यायगी हा तूँ लपेटै में आ ज्याय
गो तो फेर थारो की बचणू ओखो हो ज्यायगो। जो ई वास्तै थानै मैं
पैलाँ हूँ चिता देवूँ हूँ। पण थारी कुम्हारी नै पैलाँ हूँ मतना कहदीजे नहीं तो
बा सारै गाँव भर में या खबर फेड़ देवगी, जो जीं बखत बगाय जाणो वाऊ
औलाद होबा लागी जूं बखत या खबर करदै। तो कही म्हाराज! ठीक है। हर
या सुण र बो कुम्हार पाछो आपणै घर आयो। अब गाँव में मेळ बी कोईन
कोई हुया ही करै है। सो बो जितरा बीं का मेळू हर बाँ सब हूँ जाय जाय र
मिल्यायो हर जूं दिन माँदै आणा र नेड़े भी कोनी गयो हर बीं री कुम्हारी
बी नै बैंधाँ रै मधाउ मधाउँ करबा करी, पण कुम्हार किनी काम रै हाथ लगाद
कुम्हारी रै समज में कँई भी कोनी आई हक या बात के है? आज कुम्हार रै रहो सो
ज्यो हक पः हँसे ही हँसे हा काम रै कोनी मौन भी कोनी। कुम्हारी घणाँ ई ताफड़ा
पीट्या पण बात समज में कँई भी कोनी आई। साँज रै कुम्हार रोटी टुकड़ो कँई तो लायो
कँई कोनी खायो हा अब मांचली में पड़ रयो। रात नै बो की रड़े तो आँख लागी
हा कदे कोनी लागी। कँई सोयो कँई कोनी सोयो। दिन उगे आप को धोती लोटो लेय
कर हा कुम्हारी नै कयो हक जे भाग सकै तो भाग नहीं तो बचणू ओखो है
इब थोड़े पलक में यो सारो गाँव उजड़ज्यो जाणो वालो है। पण कुम्हारी कै
री बात कोनी मानी। हा इब बखत हयो र औलाद होबा लाग्या जद कुम्हारी
री पड़ र मानी पण गाँव बीतरती ही ऊँचो बादळ कर देख्यो तो बाणै दीखै
है की, के गाजा, के मती, के सौगार हा के ढोर के कुम डीहा देखा गयो है
पत्थर को हुया पड़्या है, पण कुम्हारी भी बावड़ र देखतो ही बातड़ी हो

गई। कुम्हा लीलानजी रै गळे में केवड़ी घालर को घीतो बजा'र बो नागाड़ा बजायो। बी गाँव री तार। अहसान मोरी तके धूर गयो। बीगाँव में जितो माळ मामलो हो बो तारी री सारी अन्न तोणी बठै दीख रह्यो है। राजा री खजाना हो बै कुम्हार [illegible] बागा अब तोणीबैं रा बठै पड़ता ही। पाण बै चोई नै लाधै रोजी। बै गड़ देवी बठै हूं चालतां पत्थां नान्द रै पहाड़ पर पे अंक लिख गया — नान्द रिजाणी हूँ गई बड़ो सोड़ो दुगड़, बैह बोल कैह धायणी छपन कोड़ री माल। चौड़ बुझीबाड़ी बिलौत रैवा ओ गुवाळ।" ये अंक लिखिया तोणी बठै गड्या पड्या है। कुछ ही साल पैलाँ बठै नान्द कै एक लाती कै जमी में गड़्यो एक धन रो टोकणी पायो बतावै है पण बो चिरवा होगो हूँ अणौं री कचेड़ी में लिखा लियो बतावै है। नोट- यह बात बहुत प्रसिद्ध है.

"योगतो हर कामदार"

कवै है हक जोधपुर री में पुराणै जमानै में एक भोगतो हो। बो बड़ो रोडा, रंगी रैणी रा को हर पड़ै जिण हो। बीं र इतो ही इदयोळो हो हर इतीरी छाप चोखी ही। बीं कै एक गाँव पट्टे में लेरे हो। घरका तो खाच बाच बाँकै हाँतल- बो गाड़ी हूं चालतो। घर में रै नाज, रै पाल रै दूध, रै धरड़ा, रै घर, रै लावो हर रै माथ, रै बेटी रै माल रै ऊछेड़ सारो को काम एक बो गोड़ी हूं चालतो। बात रो चालणु हो हर संजोग रो पीवण करणी बिनाणी री इसी हुई हक जिण रो सरीर छूटग्यो। सरीर छूटती बेळ्याँ उण आप कै कामदार नै बुला र घर री सारी सम्हळावणी दे दीनी। खजानरा बैं नै ताळा कूँची दे दिया। हर मरती बिरियाँ बौं नै आप कै कँवर को जो आठ सात साल रो हो, हाथ पकड़ा दियो हर क्यो हक हैं कामदार! मैं ब घड़ी स्यात चोरूं पण [illegible] पिराण घट में रुक रया हीं क्यूंकै म्हारो जीव ईं म्हारै कँवर में उळझ रयो है। यो थाणु है। जे जीवतो रयो तो दो दिन नै स्याणु बी हो ज्यायगो। सो तूँ ईं की सार सम्हाल चोखत राखिये। ईं रो सुभाव तरताळ तोणी है म्हैनो रै से टाबर रो है। यो आठ साल रो तो रैणो रो ही है। सोलै म्हैरौ गैळ हैं ईं नै चोखो खुवाये हर चोखो पहराये। कुणा चीज रै ओलो मत रैण दैयह ईं रो चोखैं पर ज्या करिये हर मोत चोखा ईं री बीनणी रै गैणु घालिये। बीरै यान नैड़ हक यो बिल बाप रो है। तो ईं रो क्या बिगड़ गयो। हर मेरै नाव कै बट्टो लाग ज्याय। रजपूत सारू काम ईं नै [illegible] हर [illegible] पीढ़ियाँ है [illegible] आयो है। कदे गाड़ी ज्यात में हर [illegible] गाड़ी में [illegible]

रोतो आवै। जद तूं ईं डूं [illegible] जो छोरो हो जद [illegible] तेरो बाप छोड़ कर मरतो [illegible]। मरती बिरियाँ वो सारी [illegible] मन्नै दे [illegible]। मैं भगवान जाणै है, [illegible] [illegible] [illegible] वीं रो तीन बचन पूरा कर दिया। उन्नै पाळ पोस र जवान कर दियो। ब्याव दियो थापा दियो। इब तूं [illegible] जोड़ [illegible] सारो काम [illegible] [illegible]। तो मैं तेरै बाप रा बचन पूरा करया हैं। तूं इब मेरा बचन निभावे। जे तूं मेरा बचन पूरा न कर सकै तो मैं कँवर की [illegible] कोई इतरै नैं [illegible] ज्याऊँ। तो [illegible] रही [illegible] आप इतरै रो [illegible] तो जुबान पर ही मत ल्यावो। थारै नैं [illegible] म्हारै में [illegible] है [illegible] [illegible] चालतो आया हैं। आगै [illegible] बो [illegible] ही चालतो रैंगो। सो आप रै [illegible] अन पाणी म्हारी नस नस में [illegible] पड़यो है। थारो म्हारो सत पीढ़ियाँ सीर म्हारै रगा में [illegible] रयो है। [illegible] [illegible] मन्नै [illegible] पाळ पोस [illegible] सारो कर दियो [illegible] ही [illegible] [illegible] हाथ [illegible]। तो या [illegible] बी मेरै [illegible] है। सो वे कोई चिन्ता फिकर मत करो। [illegible] मैं [illegible] पगाँ हूँ, थारै [illegible] बी [illegible] [illegible] हूँ। तो या सुण कर [illegible] रै जी में [illegible] [illegible] उण आप रै कँवर नैं ज्यो [illegible] की बाई रै [illegible] [illegible] [illegible] हाथ पकड़ [illegible] रै हाथ में हाथ दे दियो अर कयो [illegible] मेरो [illegible] आ [illegible] थारी [illegible] दिखावे। नहीं तो मैं थारो [illegible] मैं [illegible] बणूँगा। [illegible] कँवर रै [illegible] पछ पोछड़ी की आसीस दे र बिदा हुयो। [illegible] रै गैल हूँ ज्या दुनियाँ में सदा हूँ [illegible] होतो आयो है। [illegible] सात दी [illegible] [illegible] गया। कँवर रै पाग [illegible] बो [illegible] [illegible] नाँव रो तो [illegible] कँवर हो पण काम सारो [illegible]। सो [illegible] [illegible] तो [illegible] [illegible] काम करतो रयो पण फेर बी [illegible] मनाँ में [illegible] आयो [illegible] इब [illegible] पर उतरयो। एक दिन रात नैं सूतै सूतै मन में बिचार [illegible] [illegible] यो कँवर [illegible] मेरो [illegible] [illegible] काम [illegible]। तो [illegible] [illegible] बिचारी [illegible] [illegible] जे कँवर नैं [illegible] मार [illegible] तो सारी मन की [illegible] पूरी [illegible] ज्याय। पण [illegible] मार [illegible] ज्याय? तो उण [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बणाई [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] बी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आप [illegible] [illegible] बी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मीठी मीठी बातों [illegible] रो [illegible] सेल [illegible] है। मारै [illegible]
मूँ आगै [illegible] अमल री बणावटी गोळी [illegible] सा रो डोप पकड़
लै। इण पेट अमल रा [illegible] मारै [illegible] ई मैं घो गुण [illegible] ई [illegible] भूख [illegible]
[illegible] ती मनड़ी चढ़ावौ [illegible] री चोडी [illegible] तनरो [illegible] जावै
जी आगे आदू लेगो [illegible] [illegible] देवो। सो [illegible] है [illegible]
अनेक फळ" सो बो ई ब्रामदारड़ी [illegible] अमल रे [illegible] पड़ग्या। [illegible]
पैलै दिन [illegible] गोळी ली। दो-चार दिन पछै दो दो लेवाग्या। दस [illegible]
आट [illegible] अमल होवै लागो। ब्रामदारियो बो सागैं ही मालो [illegible] गया
पण आप तो गुड़ [illegible] गोळी [illegible] र्वाड़ै नै [illegible] अमल की गोळ्यां दे
दे [illegible] अमलदार बणा दिया। सो [illegible] दिन रात [illegible] मैं धूंच
हुया पड़ेला रैतो हर ब्रामदार आप रै मैं मैं आई तो। इण बो गड़ रो माल
मत्तो सो सस्ता लाग ग्यो। सो [illegible] मोल तो आवै पाँच [illegible] मोंड [illegible]
री। आवै २० [illegible] मोंडी [illegible] १०० [illegible] १०० री [illegible] मोंड [illegible]
[illegible] री। बोगोड़ी [illegible] आवै [illegible] है [illegible] तो मोंड्या [illegible] पांच। [illegible]
कोई [illegible] इसो रोनी। आप रो [illegible] मांमे रोज
मा प्रसगारी। जीमो [illegible] रात [illegible]।" सो इण ब्रामदारियो [illegible]
सो सारो अमलोपमलो आप रै [illegible]। इ गड़ नैं [illegible]
दियो हर लेर नैं राजी चोखी बी रोनी [illegible]। इण [illegible] सावें [illegible]
तो [illegible] बो मलैरै पर हूँ आयो। [illegible] बो [illegible] बण्योड़ो हो। तोइब
ब्रामदार [illegible] बतळाया हर इब [illegible]! आपणूं सीर तो पड़ ग्यो बड़े [illegible]
धा मैं कोनी छूटी कोड़ी। सो जैं रवो तो आपणूं गांव गैंणो मेल ध्यो। तो रहे [illegible]
देवो। पण जैं कोई दूसरै रै मेल स्यो तो सारै [illegible] मैं [illegible] जासी सोजे
हो [illegible] तो मो [illegible] गैंणो मेल लेलो। सो [illegible] है न्यासी। [illegible]
म्हारो [illegible] बोरयो है? ब्रामदार बी [illegible] चावै हो। आज ताणी ऊंण जितणी कुबद
कमाई ही बा ई लाता ही कमाई बी। बो नैं मन [illegible] फळ मिल ग्यो। सो
ऊंण [illegible] नोट [illegible] रिपियो धीरै [illegible] मामलो है ज्यो
भाई भाई मैं हर बाप बेटै मैं बी [illegible] घाल दे। सो आपणूं [illegible]
[illegible] है सो जे [illegible] मैं [illegible] चालग्या तो गजब हो जासी। [illegible]
[illegible] मैं [illegible] हुई। तो फेर [illegible]
[illegible] मैं [illegible] काळ मैं बी [illegible] पड़ज्यो। [illegible]
[illegible]

अर कामदार [illegible] इण मैं तो थाँनै [illegible] देखा
मो [illegible] मैं गातो [illegible] [illegible] ही दैरा [illegible]
मैं [illegible] [illegible] मैं [illegible] गोला सो मंडला [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] निवाला [illegible] कामदार
[illegible] [illegible] मारीमाड [illegible] निलाला लेज [illegible]
दिशाँ में गो गांव [illegible] [illegible] उठै
को गांव कामदार कै पटैलडै। ई मैं ई गाँव को भोगतो [illegible] रोईलाड़
लागतो [illegible] नहीं [illegible] कोई कुरब [illegible] पंचांयत
[illegible] मैं [illegible] निलाला [illegible] गाजीरज [illegible]
दौलत फलाँण [illegible] भोगता [illegible] खुद। मोपको लिखत नाँहू [illegible]
कामदार नचीत हुयो। इक कामदार पीतेई रूँवर रो [illegible] हो गयो। मुद-
लालो बीत गयो पण ठाकर के घर को खरच चलणँ [illegible] हो गयो। हा
[illegible] को सामान बेचणौं सरु कर दियो। जो रहे तो घोड़ो [illegible] दियो कदे ऊँट
[illegible] कदे [illegible] कदे खेत [illegible] [illegible] पण छेलै नाई [illegible]
[illegible] नाजिम [illegible] बेच दीनी। पण यो जो सामान [illegible] मोल गयो। गरज
[illegible] है। लेवाळो को मोल है। देवाळो को मोल नहीं। पण ठेकै नाईं खाणा
पीवण का थाळी लोटा बी बिक गया। बीगोड़ी री पाई [illegible] मैं आवै रोनी [illegible]
[illegible] आवै जो कामदार राखले [illegible] भोगतो कोई कुरब [illegible] रोनी [illegible]
जी [illegible] [illegible]। मो बातै नै पैळाँ यो बेरो होनो [illegible]
पीढ़ी की पीढ़ी रोक लेगो। वो गाँव [illegible] आईपड़ै मैं मैं मेरो कामदार
बो रहँगो [illegible] आदा पड़दा कामदार नै मौगत लातै देलो करुँगो। पण कामदार सारी
की सारी बीगोड़ी खाली कर लीनी। ओर राई [illegible] मोटी पैदा होबी ही। सो
या बातें है [illegible] भोगतो [illegible] [illegible] गाँव छोड़ [illegible] [illegible]
[illegible] कोई [illegible] न्याय। [illegible] ही रै न्याय। [illegible]
वै [illegible] भोगतै नै आप को गाँव छोडणुँ पड़ो। [illegible]
[illegible] मैं [illegible] गाँव [illegible] आई
गत कै ही [illegible] हुया। सो [illegible] आगै है [illegible]
[illegible]

सो ऊँठ मैं [illegible] आयो है [illegible] दिन [illegible] ।जद [illegible]
[illegible] आवतो [illegible] आपणे गाँव [illegible] पाको [illegible]
[illegible] मा आपणा [illegible] हुकम [illegible]
ने [illegible] दिया देवो । [illegible]
रैयित उतार देवांगा । पण ठाकर जी क्यूँ मोठ को चाली हो । जो आप ऐ [illegible]
आप रा [illegible] आगे हाथ पसारबो माडी बात समझो हो । क्यूँ हाथ पसारणो
बाप दादा रो हित हु आप री माडी जाण ही । सो ठाकर देख र हुकराणी नेको
हाथ पसार के जा र बाडी मेर मेर पेट भरणे की आछो है पण थारैया जाकर
हाथ पसारबो चोखो होतो । तो कहु थार मरतो पण आप कठे हैडो कैलाडैं
तो कही हैडो तो एक म्हारो निर्णै मां कर है, तो कही जो कठै है ? तो दरह जो पोनै मैं
बतास्यूं । म्हारे बाप के जीवताँ थका एक [illegible] सिरदार म्हारै नोकर रहतो
जी को [illegible] आयलो हो । जद म्हारे बाप ने सो [illegible] पुगग्या तो पाछो
[illegible] लियो [illegible] जी ने नोकरी
सूं [illegible] । तो कही ठीक है । जो वै चालो । पण वै घाँ ने ठाव रहै है
तो कही म्हारो तो मन घणो ही ठढ़ै हेडै जरूर जरूर ठाव लेसी । बीं कै आपां
लोगाँ की के ? आपां तो आपणाँ हाथ पगाँ नै हला कर दो रोटी उपावांगा ।
सो घो विचार बाँध र बै दोनूं बीं गाँव के गैलै पड़ लिया । सो चालता
थकया चालता थकया संझ्यां के ढले वै भागा दौड़ करकर नाखो लियो ।
जद वै गाँव के गोरवैं पूग्या तो बठै ठाकर तो घो पन देख र आगै गुवाड
में जा नेड़ो हुयो हर हुकराणी गाबो चालको सम्हावण नै गैल नै खडी रैगी कवा
विताणी की । बात की चालणूं स्त ह संजोग को पीवणूं हो । बठै वा हुकराणी के देखें है
हाक एक सात आठ साल को टाबर करड़ीपर फाइँ बैठै है । बीं के गळमें
सोनै को कैठलो है । हाथाँ मैं सोनै का कड़ा हीं हर कैनां में साचै मोतियाँ को
सोनै का बाला । तो बो स्याणै लोग साची कही है हाँ "मरतो के न करतो ।" जद
आदमी ने ठाल रआ घेरे ह रोटियाँ रा चारूँ नाला बंद हो ज्याय तो ऊँ
बिरियाँ मिनख के बेरी के करतो के र बैठे । सो हुकराणी के मन में पाप छाग्यो हर
जै ई टाबर ने मरोड़ कर ई का कड़ा काँठला काड ल्यूं तो क्यूं तो सहारा लागै ।
सो या सोच र ऊँण ऊँ टाबर ने झोलो दे र आप के पास बुलायो । बो
डावड़ो भी झोलो देख र बीं के पास चाल्यो आयो । तो ऊँण हुकराणी केरी
हाम झट पट बीं की घेटवो मोस दियो हर बीं का कड़ा काँठला काढ़ लिया हर बीं
नै मोसर की पैरगी बगाबो चावै ही पण इतराँ में ई बी ने दूर ई कोई माणस

को बोल्यालो सुण्यो। तो बा घाबरीजो कर बीं टाबर नै आप कै खरलै में दाब लियो हर बेगी सी फिर पर उठा कर चाल पड़ी। ठाकर नै ई बात को ठा कोनी हो कै ठकराणी ओ फालो रोप दियो है। बै देन्यू चालता आप कै ठावचै पूग्या। आगै ठाकर नै आयो देख कर बीं को मायेलो मेल बाग बाग हुयो। ऊंण आप कै खरलै में बीं नै उर दिया दियो। ठकराणी तो डंच.डी कै भीतर उतार दी गई हर ठाकर बारणै ओटड़ी में। बीं कै लार ऊंटी बखत खीर पलवां रो भोजन त्यार करयो गयो हर न्हावण धोवण कैई तातो पाणी। सो ठाकर तो न्हाय धोय कर फुर थाल आरोगबा बैठग्यो हर फर भीम जूठ कर बाय आप हर मोरयारां में बात चीत लाग गयो पण ठकराणी भोजन करबा नै रसोवड़ै कोनी गई। बीं नै लुगायां पतायां मोत निहोरा खाय खाय कह्यो हा पै रसोवड़ै पधारो हर भोजन करो पण बा तो राम की पूरी मुसकी बी कोनी। मुसकै बी कैयां। बीं कै खरलै में मोस्यो डांमोत बरस को डावड़ो दबस्यो हो फेर भी खरलै में कोई आ कर या खबर दीनी हा कंवर झाड़ां बैठबा गया हा पण तुरताल तांणी पाछा कोनी आया। बीं नै च्यारूं मेर ढोलै धाया। हेला मारया पण कठै सुणबू न सुणवू। तो के हुयो हो के न हुयो? ई बात को ना कोनी। तो या सुण कर सारै घर में घबराई छायगी हर च्यारूं मेर लोग ढूंढबा भाज्या। पण कठै रोप तो कंवर पावै न? कंवर दबस्यो खरलै में। ढूंढता ढूंढतां आधी रात हो गई पण कठै बी खुर खोज कोनी पायो। इतै ठकराणी कै यो रोलो सुण कर पोरवालड़ हो गया। थोड़ी घणी बार तो बा मनस्योड़ी सी बैठी रयी पण फेर या सोच कर हा या बात घर कै धणी नै तो बता देणी चायै कै बेरो कै घाड़ो तोड़ै कै थोड़ी तोड़ै? तो ऊंण ठाकर नै भीतर बुलवायो हर कयो हाँ मैं तो यो काम कर चुकी। अै कंवर नै ढूंढता फिरै हो हर कंवर नै मैं मोसदी खरलै में धर राख्यो है। सो इब के करणो हर के न करणो? ठाकर या बात ठकराणी री सुण कर चितराम को हो गयो। हा कयो हर हलारी पै के गजब करयो? ओ काम करणो हु पैला मनै तो पूछ लेणूं चायै हो? ठाकर नै ठकराणी पर झाल तो मोत आई पण इबै के होर चालै हो? बो पेर पकड़यां पकड़यां सीदो आप कै मायेलै कनै गयो हर बीं नै यां सारी हकीकत कर सुणाई। तो मायेलै या बात सुण कर नाँव सळ बी कोनी घालै। पण सांज मार कर खाली या बात कही हा "हूणी नै नाम सवा है"। बेमाता का आँक घाल्योड़ा टलै कोनी। पण जो या बात ही तो मनै पैलां ही क्यूं कह्यो न? फेर घर में रोळो बेरो न रौ या बो भोजाई सा नै समजा देयो। हर बो जितो मरो कंवर हो बिरो ही थारो। जो आप की मा को तो पाव

रो बेटो हो हर भोजाई रो धाम हो। सो एक बात करो हक मन्नै बो खरलो बता देवो हक कठै पड़्यो है? तो मैं बीं नै साथ ले'र बाग जद जद ज्यांगा तो लेय कर मांही दिखाऊंगो। तो या बात भोपाळै रै मूंडै सूं सुण कर बाप हेड़ करतो को करतो, कैयो हक यो कोई आदमी है हक देव है देवतो ज्यो इतरो छातीवाळो है। बो मन में बड़ाई करबा लाग गयो हक एक तो ओ आदमी है ज्यो आज पूत री चोट खाय कर भी मन्नै या भी कोनी कही हक तेरै मूंडै के होंठ ही। हर एक बो बाणियै को बेटो ज्यो पीढ़ियां सूं अन पाणी खातो आयो है मेरै में या करी हक मेरो गांव भी दम घोंगा देकर खोस लियो हर मेरै बाबल कै अमल को घेड़ो घेप दियो। हर जीं नै मेरो बाप मरती बिरियां मेरी बांह पकड़ कर हाथ में देय दियो हो हर सारै घर को भार सूंप कर गयो हो उण मेरै में बा सतवड़ी करी। यो बिचार कर कर बाह्र मन में करारी लियायो, बिन्नै कंवर नै ढूंढणियो रोई में निकल गया हक कद भूल भोळै टाबर हो खेतां में निकल गयो हो हर फेर गैलो भूल कर हर घूम कर कठै रीबड़ी में वड्यो रोवतो हो। घर हालो सो को मैम चौ। सो बापड़ा रोई में अंधारी रात में सांपां का फिर छींतता हिरणां रै खोजां फिरबा लाग्या। सावळ में आदी तांणी तो सारै जणां में शपट रोळ पड़ी रही हर आद पछै नींत पापणी सारां की नाड़ तोड़ गेरी। इब ऊंण भोगतै कै करी हक बो खरलो धीरै सी उठा कर बाप ले गयो। हर आप कै भायेलै नै कही हक इब आकर म्हारै हलमां को बिरतव देख लेवो। तो बो आय कर देखै तो कंवर की खोड़ खरलै में दब रीहै हर थोड़ी थोड़ी सुतकै है उणां उठा कर बीं नै फड़ देती बारणो चौकी पर सुवांण दियो। हक जे जी बावड़ावै तो जिंवारी हो ज्याय। ढ़लती रात ही। ठंडी ठंडी पून चालै ही। सो कंवर कै लागी ही सो बाल्य तो बीं को जी क्यूं ओत खाई हर होळै होळै बीं की खोड़ में सांस आबा लागगो। हर नाड़ी भी बावड़ी। या देख कर सारै जणां कै जी में जी आय गयो। इतनै तो भोगतै का ज्यो घाड़ी पेल्यां खेलणियां खोया पड़्या हा बे केई जणा में जी आ गयो ज्यों जणूं दीवै में तेल घाल दियो है। हर उन्नैं ऊं डावड़ै कै बाप कै भी चंदगी सी हो गई। इतरै में डावड़ै चेत कर लियो। बीं का होंठ मुस गया। हर पण पिराण छूटता रोत हा। सो बातां री एक बात या ही हक बीं री रोवळी में तोल बाकी हा। इब उणां कंवर नै बीं का कड़ा कांठला पैरा दिया हर सारै घर का जद जाग्या तो बां नै या बात कही हक कंवर तो बारै डैलै पर सूतो पड़्यो हो हर आप बीं नै घर बाहर छांणता फिर्या। आपणे में माय तो बा इमडै कै छोरै हाली हुई हक छोरो तो कोनी बच सकैगो हर सारै गांव में मेरो कोई छोरो पाव्यो

के है, म्हारो कोई छोरो देखोड़ो तो बताओ नीं।" जणां कोई बोल्यो हां एक तो छोरो तेरै खेत पर बैठ्यो है। दूसरो कैण सैं छोरै नै ढूंढै है। जद ठाकरां याद कर्यो हां ठीक बात है, छोरो ता म्हारै खेत पर ही है। सो कैंक तो चोकी पर सूतो पड़्यो रयो हर आपां ढूंढता ढूंढता सारा घर खेत छाण गेरया। ई भांत बात नै बठै की बठै दाब लीनी। हर बाड़ की चूरी नैं भी बरसे कोनी पड़्यो, हुण दैव कै के हुयो हर के न हुयो। दूसरै दिन सुंवारै इतो घोप कर चावल रांध्या हर होया मूंग पसाया हर ठाकर ठकराणी नैं खूब हुंज हुंज भोजन करायो हर दूसरै दिन एक जणां अथाई में भेला हुया तो भोगतै नै भायलो बुजवाल्यो हर वे उठै कीं कारज पड़गया, कैयो आवणियो कोयो! जो म्हारो साकु काम होयो तो म्हां नै ओळायो। धन घड़ी धन भाग जो आज म्हांने घर बैठ्यां लूणहलाल करवा रो मौसर मिल्यो। तो या बात सुण कर ठाकर कायरी लियाये। हर आंख भर कर बोल्यो हां "दादा भाई, अब मैं ठाकर कोनी। ठाकर तो गांव को इब बामण है। तो कही बामण कैयो। या कैयो कही। इस निसाण कयूं हुया जणां ठाकर बीं नैं का सारी बात मांड कर बताई। हन मेरै मांय तो या या है सतेवड़ी करी। हर इब मेरा रिजक सारो का सारो गैणों मेल लियो हर इब मनैं डुरियो दिवा कर छोड़ दियो। हर म्हारै नांव ऊंठा इतणां रिपिया कड़राख्या ही। घर में ज्यो टेटला हो बो बी सारो आयो गयो। हर के ऊर के घोड़ा है बामणीरये था कर दिया गैल री गळियां। हर म्हारो चोकस गैलो हुय गयो जद म्हे गांव छोड़ कर भाग पड़्या हां देख चोरी, पहलां चोरां।" या बात सुण कर भायलै कही हां आपणैं घरां घणुं ही दरब पड़्यो है हर यो सारो आपकै ही खजानै को है। सो जितरो धन चावै उतरो आप कै लिज हो। जितणुं धन आप चावो उतणुं आप ले ज्यावो हर बाकी तड़कै मैं दरब को ऊंट भर कर ल्याऊं हूं। सो बामण जी नैं ब्याज मूळ सारो पीसो को पीसो चुका देस्यां हर आपणी लिखत पूठी लेलेस्यां। तो कही ठीक है। सो दूसरै दिन ठाकर नैं तो आप चढ़ण का घोड़ो दे दियो हर ठकराणी नैं रावळी मैल जुड़ा दीनी। हर पांच हजार सागै दे कर बिदा कर दिया। मोकळो दरब दे दियो तो बे चाल्या चलता चालता पकड़्या आप कै गांव पूग्या। आगै के देखैं है के रही सही के गाड़ के भी नालो जड़ राख्यो है। तो या देख कर ठाकर नै भोत रीस उपड़ी हां बामणी तो मेरा रैवास का ठांण नैं बी खोस लियो। इतरै में बामण नै बेरो पड़ गयो हां भोगतो आय गयो है। हर बो सागै बाईसी चढ़ा कर भी ल्यायो है तो वडे कोई खटपरा न करै। सो [illegible] जंगड़ री जात है। सो झगड़ में कद्दू साचा बिचारी न कार गतवारे। [illegible]

बा सायराँ कही है हाँ अणत कुट्टी बाणियाँ रै पड़ूत्तर कुट्टी जाट / तुरत कुट्टी
तुरकड़ा रै बामण सम्मट पार।" तो सोळा आना नहीं सवा सोळा आना साची
बात है। कामदारजी पैलाँ ही लाल गयो हो इब तेरी गरमाई कोनी चालैगी
लोग घाड़ेत्याँ नै लि री गरमी उतार दीगाँ। सो बो पड़ कर भाज्यो तो धोती
तो ढीली होगी, पगड़ी का पेच बिखर गया, कमरी री तणी खुलगी। हर बो धूळ उछाळतो
खचखड़ खचखड़ करतो गढ में पूँच्यो। दूर सूँ ठाकराँ नै हाँफ जोड़ नीचे माड घणो
कुरब कायदाँ सूँ राज गुँड़ सरणी पहुँच्यो हो आप म्हानें तमचा दिपे बिना हीं कठै
उठ गया हा। मैं तो थारै बेरो पाड़ धाप्यो पण कठै बी ठा कोनी पायो। हो फेर तो
बड़ी भारी चिंता हुई हर आज तीन दिन हुई म्हानै तो नींद हराम हुई। आप बी
पामणा बी काचा होय तो। घर में टाबर बी भूखा बिलबिलावै है। तीन दिन
हुया चूलो बळ्याँ। तो आप या के करी? आप कै या काँई मन में आई? यो
गाँव आप को, ये लोग आप का, मैं आप को हर मेरो सारो माल मामलो आप को।
आप तो म्हारा मालिक छो, धणी छो, माँ-बाप छो। तो आप कै बरी बेरै
डेरो नाखबो आप नै सोभा कोनी दे। आगै आप मरजी छो। म्हैं सूँ स्याणा छो।
सो मैं आप नै अरज करतो कै चालो लागूँ। सो यूँ मीठी मीठी बात बणाकर
ठाकर नै पिंगळा लियो। हर इसी बाताँ में मुळा कर सीधो कर दियो ज्याँ सूँ बी
कै रीस उपड़ी जी कोनी ही। हुकम सिरकार मेरो धन सारो आप को ही तो है। मैं किसो आपनै
तोड़ कर ल्यायो हो। यो और ही का ईं ही गढ को अन है। आप को ही परताप है।
म्हे सब तो आप कै चिरणाँ का चाकर हाँ। आप की दीयोड़ी रोटी खावाँ हाँ। आप कोई
हुकम बजावाँ हाँ। तो जे म्हारी चाकरी में कदे काँई भूल भोल चूक बी पड़
ज्याय तो सिरकार म्हानै ततपीड़िया चाकर जाण कर बगसो कोनी। म्हे सावाँ
पीढी का राज का चाकर हाँ, कदे सूँ चाकरी बजाता आया हाँ, म्हारा घर बड़का
आपसरी मैं एक जगाँ बैठ्या, एक जगाँ कुद्या, एक जगाँ नीच्या, एक जगाँ ही
जूठ्या एक जगाँ रह्या एक जगाँ सह्या एक जगाँ नीपा हर एक ही जगाँ माचा। तो
म्हारै ऊपर आप एक नाकुछ बात वास्तै कुमाव मत होवो। गलती तो मनख
सूँ व्है सकै है। तो जे म्हारी गलती बी हो गई होय तो बी आप म्हानै तोड़ कर
बगालो। निताल यो नीसरसी हाँ भोगता पर राती हो गई हर कामदार भोगतै नै
को गाँव पूठो दे दियो हर भोगतो जद रिपिया लिया हर जिका पाछा देबा लाग्यो
तो बाण्यूँ जाबक नट गयो हाँ आप सूँ मैं कै रिपिया ल्यूँ। ऐ रिपिया आप
ही ल्यो। मैं बी आप को ही छूँ। तो सिरकार थारो म्हारो कंठ बाँध्यो छै। सो इण
भाँत बीं बाण्ये की बात सुणी तो ठाकर ठंडा हो गयो। हर बाँको बणी बणाई

हरखी राम जी

गा: मूलसिर, सुलताना रे उपड़ु.

हरखी राम जी डील रा धणी हा, ह्र बाँ की खुराकी भी ओराँ सूँ घणी बेसी
छी। गाम वाळां में भी बे रत बोती घालता। जद बे जी गाम के बिड़जाता
तो एक नाके तो बे एकला ह एक नाके गाम आदमी बराबर पड़ता। बेंसरीर
रा जितरा भारी हा, ह्र यो भारीपण बाँ के बाळपण सूँ ही छो। पण बे जद जोर
जुँवान हुया तो ओर भी भारी पड़ गया। जद बे चाल्या करता तो बाँ की धोत्यूँ
राँन आपस री में भिड़्या करती। कदे टैं के एक दिन हरखी राम जी रसोवड़ेओं
सूँ पैलाँ चाल्या गया। तो रसोवड़े में साग की जगाँ सवा मण गुँवार की फल्याँ
ने उबाळ कर कूटी कर राखी ही। सो हरखी राम जी पाछ बैठ्या तो बे सारी कूटी
एकला ही खाय गया। ओर दिना बाँ के बाप की या कुराट छी ह्र जद सारा
आदमी जीमर चाले तो सै कै पछे हरखी राम नै जिमायो करो। पण जिके दिन
या चूक हो गई ह्र हरखी राम नै ओराँ सूँ पैलाँ थाळ परुस दियो। जी
को यो फळ मिल्यो ह्र हरखी राम जी सवा मण की कूटी एकला ही चेट गया ह्र
ओर सब लोग भोरव रैग्या। ईं पर हरखी राम जी का बाप भोत नाराज हुयो ह्र
कयो कै हरखीड़ा तेरो आगो म्हारै कै बोती घालै। तूँ तेरै पाणै फूलै लाग रयो
तूँ डूँगीजोड़ हो गयो हो लाला तेरी कमाय कर खा। म्हारै कूँ सदा ही तेरा झ्रख?
बोती पड़ै। या बात बाप की सुण कर हरखी राम जी कै काळजै में चोट लागी
ह्र तूँ रजपूत को बेटो है ह्र तनै तेरो पेट भी भारी होरयो है। सो रात रात तो
हरखी राम सूत्या रया पण नींद बोती आई। बीं बात को बड़ो भारी चाणक्य
रयो। दिनगै हरखी राम भाँजरे बोती उठ कर आप का पाँचूँ कापड़ा ह्र पाँचूँ हथियार
सम्हाल्या ह्र फेर आप के साथियाँ नै बतळायो ह्र ज्यो मेरै सागै चालणूँ चावै
तो आप का हथियार साथ ले कर मेरै साथ होलै। सो हरखी राम के सागै भी
कई रजपूत हो लिया। क्यूँ कै हरखी राम सरीर को धणी ह्र हरो भरो होरण
बाँकड़ो हो। पीछै फेर वो आप की जमा में कदे भी बोती चाल्यो हो। सो बीं कै
सागे रजपूत फेरू रवाना होग्या। तो घणा जरख रजपूत आप की लेले तरवारा ह्र
घोड़ाँ पर चढ़ गया ह्र जीती। बै सब हरखी राम कै साथ हो लिया। गाँव डूँगरे
आकर बाँ चोदर करी ह्र आपाँ रजपूताँ का बेटा हाँ सो तरवार की कमाई खाय
कर जमा करस्याँ। तो कठी आपणूँ हमलो करै होय। तो कठी सुलताणाँ के नवाब
है ह्र साँज कै पैर बावन पालकी तो हवा स्वारी जाता जीतरै है। तो आपाँ तो
सब सूँ पैली सुलताणाँ पर चढ़ाई करस्याँ। सो सब रजपूताँ हामळ भर लीनी ह्र
फेर एकै मतै हो कर लोटें लूँण गाल्यो ह्र जितरा सुलताणाँ चालै बै यो निसरबी
ले ह्र या तो रण बीच कट ज्यावाँगाँ ह्र या सुलताणाँ फतै कर लेवाँगा। घोड़े

जितरै रजपूतां का बटा स उणां सबां हीं खींच लिया हण वा तो म्हे सुलतांणूं
जीत लेवांगां हर कर हरखी राम जी रै तानै रण भौम में बैरचां हूं लड़ता पड्यां
पिरान दे द्यांगां पण पीठ देखा कर हर खत छोड़ कर इठ रै नी भागांगां। तो ठरी
ठीक है। इब सुलतांणां पर हल्को बोल कर चड़ ज्यावो। तो तै सूरज उगतै ई साथ
जा सुलतांणां पागड़ा झाड़या हर नवाब नै या खबर भेजी हण ने आप गया हां या तो
म्हारो झगड़ो झल हर या गढ छोड़ कर हर अपणैं बच्चैं बच्चैं नै साथ लेकर सैहर हूं
बाहर होज्या। अणहद यो समचार सुण कर नवाब हरखो बावळो रैग्यो हण म्हारी
तो हरखी राम जी हर ऊं कै घर वां हूं कोई लड़ाई होती ही। या कै हुई हण आज औ
डाका लोग म्हारै ऊपर चड़ आया। नवाब या सोची नांणो हो हत तरै मांय
गा जाणैगी। ओ सूरज री गाई सूत्यो पड्यो हो हण यो राज थारो हर थारै
बाप रो। थांनै धान्या रैणा वाळां की कोई कोनी कर राज खोसबा वाळा
तो होता ही कूंण तवै हैं? सो ओ ई गपरळत में हगा गयो। फोज पलटण बी
ज्यो घोड़ा मौत ही का साजां रै सागै दिल्ली गया ड्ही ही। तो इब नवाब बी
लड़ाई रै वास्तै चड़ (खड्यो) स्याहेल ज्यो ज्यो ओछी मूंछ रा लाल डाढी
वाळा तुरक्यां रा बाँ नै सागै लेकर हरखी राम जी पर टूट पड्यो। हरखी
राम रै सूंवैं चाचारै में नवाब तीर मारयो पर हरखी राम सवा मण सोसै
री टोप आप कै सिर पर ओड्यां हो सो तीर माथै में लाग कर पाछो ही तळै
आ पड्यो। तीर तळै पड्यो देख कर नवाब रोवण लाग्यो हण मेरो तीर ओा की
तो म्हारै हाथ हूं छूट्यो को नी हर मैं छूट गयो तो मगनैं हरखी री चाचरी चीर कर
आर अपार नीकळ गयो। पण आज मेरो ओ ही तीर हरखी राम री चाचरी में लाग
कर पाछो आ पड्यो। सो इब मेरो ओखो आ गयो। सो मैं रण में जीत सकूं नहीं
सो उंणा आप का तीर कमठा म्यानैं कर लिया हर हरखी राम जी नैं कहा भेजी
हा मैं ऊ धंदा में सुलतांण खा लो कर देस्यूं सो फकत मानैं ऊ धंदा री म्होलत
दी जाय। तो हरखी राम जी रै पास जद आदमी यो समाचार लेकर गयो तो
बाँ रै दळ में ई बात पर बिचार करयो गयो हर नवाब नै ऊ धंदा री म्होलत
बकसीस करी गई। उनैं हरखी राम री फोज भी गाँव रै अगूंणा नाकै डेरा
डाळ कर मोरचा करतो रै लाग्यो हूं। रै बेरो तुरक री नात है न नांणो कर
कर कोई दगाफैंसी करेर। हर उनैं नवाब नै ऊ धंदा रै मांही मांही आपका
सराजाम सारो बांध कर हर चाखती चाखती चीज बसत लेकर दिल्ली नै भाग
पड्यो। हर जातै बाजत घोड़ै पर हूं उतर कर एक कैदियो नै पकड़ कर खींच्यो सो
जड़ मूळ हूं खाळ डैरी ऊपड़ कर हाथ में आग्यो। जातै जातै नवाब हरखी राम नै

सा पतरी मांड कर रोग्यो। हाल म्हारो ओरतो कुरबान होत। हायो है पण म्हारो तो छोरो, चोंको ही आय गयो। सो यो राज पाट सम्हाल लेयो हर म्हारी तेई हेत मत करियो। या निसते जाण लीज्यो हाल। जबे दिन थे हेत करवा लाग जावोला बों ही दिन म्हारी बो ही हाल होवेगो ज्यो आज म्हारो हुयो है। यो समाचार पड़ कर हम्मीर राम आप री फौज ले कर सैहर में बड़ग्यो हर आगे गढ़ में ना कर दोवे तो जाग पड़े हर हुकम हुयो। गढ़ को दरवाजो खुल्लो पड़्यो है। तो हम्मीर राम गढ़ पर कब्जो कर लियो हर सेखाणूं झंडो फैरा दियो। सारै सैहर में हम्मीर राम जी री दुहाई फिर गई हर सुलतानों में जूंजे बरसां बाद फेर हिंदवाणी राज कायम हुयो। ईण भांत हम्मीर राम हरहै बीकल री सुलतानों री गादी घाली हर आप रो नयो राज बणायो। जे दिन हूं फेर सुलताणूं हम्मीर राम रो सुलताणूं बाजे है। आज हम्मीर राम जी रे बंस रा सुलतानों में हजारूं हाथ लोग हो गिया है।

" सेखावतां में किन्या बद कर है !

हम्मीर राम जी री बाई जी [illegible] मरुधर में उछाव हुयो सारै कुटम कबीले में चाव लाग्यो। घर में बधाईयां गाईजण लागी। गीणा गाईजण हर थापड़ा झिलीजण लाग्या। तीजों वार करबा लाग्या हर बिरै बिरै री चीजां जचावा लाग्या हर किन्या दान में दियां। पण रजपूतां रे यो रिवाज धारो है हर जद बींद राजा चौंवरी आवे तो बठे दुस्तूर कर बैठ ज्याय हर अंतर [illegible] लियां आगे चालूं तो बींद राजा रो सुसरो हर सालां बीं ने [illegible] मनावें हर फेर [illegible] आगे चाले। फेर गोरवें आ कर बींद राजा अड़ ज्याय हर यो यो देवो तो आगे चालूं नहीं तो आगे नै रोती चालूं। पण छेलै नावें फेरां बैठ जठै तांणी बो अड़तो जो रवै। सो जो बींद राजा हम्मीर राम जी री बाई नै परणबा आयो बो तो मोतही अड़ीलो हो। सो बो जद चौंवरी में आयो तो बठे हूं अड़वा लाग्यो सो अड़तो अड़तो ना फेरां तांणी हम्मीर राम जी नै आकलो कर दियो। हर छेवट नै फेरां बैठतो कह्यो हर हम्मीर राम जी रे चढबा को घोड़ो, सिर रो टोप हर हाथ रो खांडो ले कर फेरां बैठूं नहीं तो फेरां रोती बैठूं। हम्मीर राम जी भोत नरमाई [illegible] करी हर और आप नै कुछ चावो तो मांग लेवो पण म्हारे चढबा रो घोड़ो, सिर रो टोप हर हाथ रो खांडो मत मांगो। अे लेबा हर देबा दोन्यां री आंण छै। रजपूत और सब कुछ दे सकै है अठे तांणी के बो आप रो सिर भी दे सकै है पण अे चीजां नहीं दे सकै। सो थे म्हा ऊपर यो इसान राखो हर अे चीजां न मांग कर और आप अन मांगो, धन मांगो, लाव मांगो, लिछमी मांगो, हाथी मांगो, घोड़ा मांगो, गांव मांगो, रिजक मांगो, गोला मांगो

बाँदी मांगो, पण ऊँ बगत म्हारी मत मांगो। पण बीन राजा हट चढ़ गयो। हाल मैं
ल्यूँ तो ऊँ लागण लीन ल्यूँ हर नहीं तो म्हा भी श्रोता करऊँ। बीन राजा नहीं
मान्यो तो मांडैलाँ हर जनेताँ माँ ऊँ गाते गवे आडीफियाँ। निबरी खोल ओलावण होनी
ही उतरी होती पण जे चौरूबाँ चढ़े हर आवे तो बीन राजा के डोकला गो। सो मनाय-
मनाय र सैं जणां थाप गया पण बीन राजा नहीं मान्यो। ईं जिद बारे में घणी
ही बोलाँ हल गई पण बातड़ी फेरँ नहीं बैठो। या देख र आपसरी में बाताँ
होती लग गई हर बात बढ़ गई। तो बीन राजा रीज र उठ खड़यो, हुयो हर घोड़ा
ने चाल पड़यो। तो या देख र हरभी राम जी के बड़ी भारी चिंता हुई हर या हुई
कै ई नौवता खड़ी होगी हर रजपूत की बेटी को यो धरम नहीं हर फेरँ आयोड़े ने छोड़ दे
र दूसरे ने बरे। हर ने बेटी दूसरे ने न परणैगी तो सदा म्हारी पोल में कुंवारी बैठी
रैगी सो यो ओर भी सब सूँ खोटो काम होगो। तो हरभी राम जी जाते पर बीन
के गले माँय खड़ग तो भया हर गेलो रोक र आप बीन राजा ने रोकण लाग्या
हर आप ने म्हारी सोगन है जे अगूठा पड़ोगा तो। पण बीन राजा सोगन की रोती न
पायी तो बीन राजा ने सोगन उलांघ र जातो देख हरभी राम जी आपको तीन टूक
लगा दियो, हर म्हारे सिर पर पाँव मेल र पाछा जा रह्या हो। तो बीनराजा के
की हर हरभी राम जी के सिर में लात की मार दीनी। या देख र हरभीराम
जी ने मोत रूपल आई हर जे कोई दूसरो होतो तो मैं अबार सीस धार बगातो, हर
हर बेरा ची? गायतो। पण ये करूँ म्हारे घर बेटी आई है। सो इब हरभी राम जी
आप के चढ़ण को घोड़ो, सिर को नवा मण को टोप हर हाथ को खाँडो बीन राजा
ने निजर करण अंगे र लियो हर बीन राजा कही हाल मैं तो पैलो लेऊँ हर फेर फेराँ बैठूँ
तो बापड़े हरभी राम चढ़ण को घोड़ो बीन के डेरे बँधा दियो हर आप को टोप हर
खाँडो बीन राजा ने बठे ही बठे निजर कर दियो तो बीन राजा टोप ओढ़ र हर
खाँडो कमर बंधे लगा र फेर फेरा लिया। यो हरभी राम जी की बाई के ब्याव में
हासो हुयो। ऊँ दिन हरभी राम जी पा सोगन करायी ही हर जे कोई मेरे बंस
में टिल्या राखैगो तो बीं ने माथे ओ के लीन लागा है। नहीं तो बीं में भी या
ही होगी ज्यो आज म्हारे में बीती है। सो सेखावतों में टिल्या बंद को चालण हो
हर संजोग की पीवण् हो। सो बीं दिन ऊँ सेखावतों में या टेक आण पड़ गई हर
बै नामती वाली टिल्या ने मारबा लाग गया।

नोट— मूल सिंह, सुजानगढ़ रो आड़ा

एक थाणेदार हो. बो मोत करो सुभाव रो आंदे घर को हो. बो बिना घूस कोई
ई बात नै कोनी करतो. चावे कोई आपतो हुवो चावे कोई गरीब पणा
बो देखतो ही कोनी हमे ई ई तो घूस लेणी चाये हर ई ई कोनी लेणी चाये.
हर बो थोड़ी मोड़ी घूस नीं लेतो लेतो. बों पो नेम बणा राख्यो हो इस मैं
तो वे तो घूस का सौ रिपिया लेणेगा हर कै घूस लेवे हो बोनी हर न आगत
को घूस बिना छुटकारो कोनी. मुकदमा बो को झूठा घड़ लेतो हर झूठ मूठ को
बापड़ी बोदी दुनियां नै फंसा लेतो. अेक बो दी बात है हक अेक गरीबड़ियो हो.
बो दिन रे चक्कर ई फुलक रे मौरे में आ फंस्यो. बीं री छोरी मोहल्ले रे टाबरां
में खेल्या करती. और तो सारे मोहल्ले का लोग सागरव हर हर बो अेक बीं
बास में गरीब हो. पण टाबर गरीब रा भागवान सा रे कै नोंं. टाबर तो इस्याही
गरीब का हा इस्या ही भागवान अरवा के ख्याल में बराबर का हो बी रवेलें. बास-
बा में हेत बराबर में लड़ें, बराबर में सीरी करें हक लाए राम करबरी भा करें. बा
गरीब की बिन्या बी बास के सारे टाबरां में बराबर की हो बा खेले. जे कोई बीं
के अेक मारे तो बा मड़का बीं रे दोय मारे हा नै कोई टाबर बीं नै अेक
गाल सुणावे तो बा बापड़ का बदले में बीं नै सौ सुणावे. पण कदी बी हुबी
दबे कोनी. बास गली का लोग सारा बी नै बदमास बतावें हा बतावें हक इ छो-
छोरी में छुट मलाई सारा अोगण हीई बात को चालणु हो हर संजोग रो फावणु
हो. अेक सरकार की बेटी बी बां टाबरां में खेलण आया करती. बा अेक दिन खेलती
खेलती आप के घरां ई आप री मां को सोने रो अणत उतरा का आप पहर आईपण
बो ढीलो होवण. ई खेलती रो हर ना ई उतर गयो तो उण बीं अणत नै आप के
गोड़ै पा मेल लियो. जद खेलती नै देर घणी हो गई तो बा बीं अणत नै भूल गई हर
जलदी में खड़ी हो बा आप के घरां भाग गई हा बो अणत बठे ई पड़्यो,
तो बो अणत उठा का न जाणे कोई टाबर ले गयो हर न जाणे कोई बी ठोले
आयोड़ै नाखोड़ै. हर बा सरकार की छोरी आप के घर खेल क पाछी गई
तो बीं री मां बीं ई अणत मांग्यो. हर अणत को नाम सुणतां ई बा छोरी
चोलणी होगी. हर बोली तो कोनी चुप चाप खड़ी रही. तो यादव का बीं री मां पूछ
क्यो रे के उपमत बताय तो सही. बोले बी कांई कोनी. अणत कठे है? बीं नै दे आई?
तो छोरी रोवण लागगी हर मैं तो नदे खेले ही बठे गोड़ै पा मेल्यो हो. फेर मलै तो
बेरो कोनी हक कठै गयो हा कुण ले लियो. तो कही तेरे करतें कुण कुण खेले हा
हर तू कठै खेले ही बो नाम बताव. तो बी चाल सो उण छोरी कठै खेले ही
बठै आप की मां नै बुलाय का ल्याई हर बा नाम ल्या कर दिखा दीनो हस मैं

तो अठे बैठी बैठी खेलें ओ. तो कदी तेरे कनैं ओ जुण जुण टाबर हुतो
उँण सारै टाबरॉं का नाँव बताया हा के हो, बो हो' हर पछै पीछे उँण
गरीबड़ी छोरी को नॉंव बी बतायो हा बा बी मेरै सागै तो कोनी खेलै ही
पण थोड़ी सी दूर जा खेलै ही. तो कदी नेव तै. बा गरीबड़ी छोरी ने जदै
आपको अणत तो और कोई कोनी लेगी होत हो बा छोरी लेयगी केवत है
हा गरीब की पू नै हा कोई भाबी कहदे". सो दूसरॉं का नॉंव तो ले कोनी सकी
कॉंई बराबोरी को नॉंव लेतॉं सै की ऑंख दूखै. हर बोदें पर सै चढ़ र बॉं बी
छोरी कै सिर लगा दियो. हर बा पैली पोत चाल कर बीं छोरी नै खेलती नै पकड़ ही
पकड़कर हाथ कै तो म्हारो अणत ल्या देदै हा नहीं तो राँड की हमी पासली तोड़ गेरॅं-
गी. तो बा छोरी बापड़ी घणी ही रोई, घणी ही सोगत खाई, घणी ही रोई
पण बीं बापड़ी की कुँण मानै हो हर तैं अणत कानी लियो. छेकड़ नै बीं को
कान पकड़ की बा बीं कै घरॉं लेयगी हर बठै गाल मेल कायदो सरु करदी हा
हा कै तो मेरो अणत ल्या थे छोरी कनैं हूं मंगाय दी धाब लियो बो देदो,
हर नहीं तो मैं इसो कराँगी हा खाय न कुता खीर. बीं छोरी का मा बाप बी
बापड़ा भोत रीराया हा म्हारी छोरी तो चोरटी कोनी. चाये कोई बोल विचार
पड़ो स्यो म्हारी छोरी तो हाथ बी कोनी लगावै. हर जे तेरै या ही जच गीं
मैं छोरी नै पूछ लेस्यूँ हर या कैय की बीं कै बाप छोरी नै खारकाई
कयो कै जे तूँ बो अणत ल्याई है बो कै तो मनैं बता दे हा नहीं तो मेरै
हूँ बुरो मत जाणिये. पण छोरी लियो हाय तो बतावै. छोरी नै इसाई
मुलाई सारा नतका लिया पण अणत किसो खाल माँ हूं नीसरै हो. सो
छेलै नावड़ बा हराम गोड़ की या अड़ाप करी हा मेरी छोरी को अणत
कोनी लियो है हा म्हारै सैंस हुंग में बी या चोरी कोनी है. कठै दूसरी जगॉं
पूछ ताछ करो. पण मेरै मॉंय थारो अणत कोनी है! घणॉं ई टाबर खेलै
हा. सो उणाय तो कोई दूसरो ले ग्यायो हा नॉंव दूसरै को हो ग्याय. पण बीं
री कुँण सुणै ही. बै सारै घर का मोट्यार मती बीं पचीकार हो गया हा
बीं पर चोरी रो मुकदमो चला दियो. तो बठै ज्यां थाणादार हो बो भोत
बईमान हो हर बीं कनै या रिपोट पूगी तो उँण बिना छाण बीण करे ही
बीं गरीबड़ियै नै बुलायो हर आवतै कै ही बिना छाण बीण कै पाँच जूतॉं
मरवा दियाँ हर फेर बीं नै बूझ्यो हर बताय तेरी छोरी बो अणत चोर लियो
जिको कठै धो राख्यो है हर बो तूँ कठै राख्यो. माछो कठै कोनी दियो
तो या स्यूण को उठा आक करी कै मेरी म्हाराज! मेरी छोरी इसो कोनी.

चावे बीं के तूं आगे सोनूं सुखाव धो पण वा वी कें हाथ वी कोनी लगावे
मेरी छोरी स्याणी सोनूं है. हर या सुण कर थाणादार जी के पाँच रुत फेर मरर
दिया हर क्यो, कें तूं हर तेरी छोरी लाडकी हो तो फेर थारे म्होल्लुं में चोर कुण है।
हर उँण है के बीं का च्यान लेणो सरू कर दिया. कै बताओ साची साची बो अणत
पैली पोत तैं देख्यो हो क तेरी छोरी. मैं या मंडवाव हूं हर बो अणत पैलां फिदवी
देख्यो हो. बो साहूकार की लड़की के हाथ में हो. जो उण उतार कर आपके गोड़े
पा मेल्यो हर तो फिदवी आप की छोरी सैंनकर कर मँगवा लियो. औयाँ कर
कर उँण थाणादार झूठो च्यान बणा कर लिख लियो हर बीं की छै महीनां की जेल
को जोगाड़ कर दियो। तो या देख कर बापड़ो बो घबरायो. हक जे मेरी छै महीनां
की कैद हो गई तो मोत बुरी होगी. घर में भे दिन का तो टाबर भूखे
खाणा नैं दांणाँ कोनी. हर न पीसैं पी कोईयो लगाई टाबर कर ल्यांबू.
हर फेर बीं की बी भाई बिरादरी में आप नाहू इज्जत आवा ही. सोऔ
बी माटी में मिल ज्यायगी. यो बिचार कर कर बो हाथ जोड़ कर थाणादार
नै अरज करी हक मेरे हूं पाँच पचीस लेल्यो हर मेरी छुटकारो करो. तो औ
जाब दियो हक कें तो सो रिपिया घूस का ल्यूंगो. जा ल्यादे हर फेर तने छोड़
बाहर कर देंगो. तो बो बापड़ो आप के घरां गयो हर या सारी समचार
सुणायो तो घर वाळी बी बापड़ी मोत सोच फिकर कर्यो. हक या अणआई
सिर आ पड़ी सो. और तो राम हर राज आगे कोई जोर कोनी चाले हर
ज्यो बो थाणादार माँगे सो देय लेय कर कैंयाँ कैंयाँ बी हूं पिंड छुडायो
जाय. तो बो बापड़ो रात नैं कितें बाहर पाळ्यें में की बरतें हूं पाँच तें
हर कोई बरतें हूं सात लेय कर हर जोड़ साथ कर ७५ रिपिया बणाया हक
बैं लेय कर थाणादार कनैं गयो. हर फेर हाथ जोड़ कर अरज करी हक
लिखो मेरे बरतें तो ये ल्यो ७५ रिपिया ही. मैं तो सारे भाईलांक्याँ
नैं जाँच कर ल्यायो हूं. मैं तो राम दुहाई सारै फिर लियो. पण इतरा ही
रिपिया बण सक्या. तो थाणादार जी फेर कर हर आँख ऊपर कर बोल्यो
हक तनैं कह दियो नैं घूस सो ल्यूंगो सो. एक पीसो बी कम कोनी ल्यूं.
तो उँण फेर अरज करी हक लिखो मैं गरीब आदमी हूं हर मैं सारै फिर मार
कर आयो हूं. जे मनैं रिपिया और मिल ज्याता तो मैं पूरा १०० लेकर ही
आतो. पण मनैं कोनी मिल सक्या. सो आप ७५ ही ले लेवो हर मनैं जाण
जाँण कर छुट ज्यो देयो. तो या सुण कर बीं थाणादार कै मोत गुस्सो आयो हर
ऊँठा आप के सिपाई नैं क्यो के अे रिपिया रखोस कर बो कुवे में गेर आवै

ना छिपाई के रिपिया की कतें ई खोस र कूवे में गेर दिया हा के
धक्का ना र कारणे निकाल दियो हो अर ओद कर कढ़ दियो हो सो करडू
यो हक १०० रिपियाँ ई धार एक पीतल की क्रान ल्यूँ हा पोचिडलो
हो मांगो खाय है. तो यो बापड़ा रोवता रोवता ओ ई पाछो घरां आयो
। ये सारी बात घरवाळां नै सुणाई. तो घरवाळां की घणों ई नोचा किया
पोरक और तो हुई सो हुई पण ५६ रिपिया औलू सार गया. जो बो
०० ई कतली न लेवे हर तो मत लिया होतो पण खोस र कूवे में क्यूं
गेरया. पण हाडे आगे के जोर चालै ? नाडो मारे की हर रोवणा की बोली
वे. सो बो बापड़ो उण वाले आप को सारो हुम छल्लो हो घर का सारा
मण बरतण पालि लोटे तांणी बेच दिया पण दो की ५६ रिपिया ही
४च पल्ले पड़या. पांच रिपिया खातर उण ओत हरा पग मारया पण
ठे की पार कोनी पड़ी. छेवट नै हाकम के ५६ रिपिया ही लेर वो आयो
नै गयो हर थाणादार नै अरज करी हक मैं तो सारे घर को अलेवण
बेच खोच र ५६ रिपिया ल्यायो ई सो सिरकार मे रिपिया नै आप
लेवो हर म्हारो कसूर माफ करो। तो थाणादार ने ईकयो हक तनै करडियो
नै पूरा सौ ल्यूंगा हरा सोळसो ई चार आना पीसा की कोनी छूटै
तो उण बापड़े ने अरज करी हक सिरकार! राम दुहाई जे मेरे ई तो हराम
९ रिपिया कण लगया है. इब मैं पांच और कठे ई ल्याऊं. आप मेरे
उपर दया करो और ये रिपिया लरहा वो. तो थाणादार ने रो कलक आई
र उण के ५६ रिपिया की ई हरख मा ई खोस र बानिते में गेर
दिया हर वे फक रेसी कलम को राव होग्या. इब बो गरीबड़ियो बोल्यो
के थाणादार! तेरे नचे तो रो. इब मेरे करते ओर खांण नै कोडी कोनी
है. हर थाणादार की बी चलाण कर दियो हर बी नै छे महीना की केद
होई. केद में जाता उण की थाणादार नै कुससो दोनो हक कही राम थारे बी नरे

रवै. सो बद औ गरीबाँड़ियो छै मौत सूँ छूट र आयो तो बो पाखाण्ड
बोकूँ पगाँ मा पड़ेर हाथ जोड़'र अरज करी हाँ तूँ मनतै जो मेरै
मौत करी बाँ की माफी दे तो बो बोल्यो कै गई मैं तो तेरै मौत नहूँबी
कोनी करी. तूँ स मेरै मौत मत चाली करी. पण जो तूँ करी बिसो ही रामजी
तनै तेरी करणी को फल दे दियो. सो इब तूँ भगवान सूँ अरदास कर. बो ई
तेरो यो सब कसर काटेगो. मेरै तो की या बात कानी हाथ मैं तेरो यो कोड़
दूर कर द्यूँ. जा तूँ तेरै घरी का पाखण्डी मोत मरचा पड़या हीं चोरवलेड़ा
बै तेरी तरै ही बोटी उजाया तै फोड़ा घालै ही सो तूँ बाँ नै फिर फिर'र
समझाय हाँ बै रिपियाँ हालै करतै हूँ रिपिया लो. गरीब नै न सतावें तो बो
ऊँ ही दिन सूँ यो नेम कर की हाँ हूँ. नीसर गयो हाँ मैं जठै ताँणी
जीवतो रैगो बठै ताँणी यो काम करतो रैगो. हर बो रब यो बिलै मैं नीसर्यो.
बो पुलस कै आदमी नै बोली इसुण कर पिछाण लेतो हाँ यो आदम पुलस
को हर यो कोनी. कँडू क पुलस कै आदमी की बोली की हाँ पिछाण ही हाँ
बो कड़क कर बोलै गाँवाँ सामले आदमी नै खाय ही ज्यासी. हर जै बोकूँ
खड़्यो बैठ्यो होय तो तण कर खड़्यो, बैठ्यो होय. हर जै चालतो यूँ सड़क
का चालै ज्याँणै सामलै को जाणतो ही गैरी उतार लेसी ही जाँ छै नाँव सूँ बत-
लावै. सो बो आँनलो पाखाण्ड दूर सूँ बोली सुण कर पिछाण लेतो हाँ
यो पुलस को आदमी है. हर जै मूँ सूँ न बोलतो तो तो बो सेल सूँ ही देखकर
पिछाण लेतो हाँ यो पुलस को आदमी है. भेक दिन बो भेक गाँव मौकर
नीकल्यो तो बठै बाँ गाँव में पुलस आयोड़ी ही. सो बो आनलो दूर सूँ ही बात
करता सुण कर गर बो कठै की नीसरयो तो बाँ नै सुणा कर बोल्यो हाँ
अठै तो पुलस हालाँ की बास आवै है. ऊँण या करी आ कैतो पाँण है
पुलस हालाँ ओळख्या हाँ कयूँ रै आनला! तेरी नाक इसो है कै हम म्हारी
तनै इतणी दूर खड़े नै बास आवै है. इतणै मैं दूसरो बोल्यो हाँ चार
लेवो साळे की नाक. तो बो आनलो बोल्यो हरस मैं झूठी बात कोनी कूँ
मैं तो सवा सोळा आना साची कूँ हूँ. जे मेरी बात झूठी होय तो
थे जरूर नाक काट सको हो. तो कै या बात है तो मैं बारणै खड्या हो
कर बोलता हो हर तूँ इ खूड़ी मैं बड़ ज्या. आगे म्हे बाड़ जादया
सो ज्यूँ म्हे बोलाँ ज्यूँ ई तूँ बतातो जाये हम दो तो पुलस का हैं हाँ हो
कोनी तो कहो ठीक है. सो जे तूँ पिछाण लेगो जद तो तनै छोड़ देस्याँ
जे तूँ बोली सुण कर नहीं पिछाण्या तो म्हे थारी नाक काट लेस्याँ. तो बड़ो आ

ठीक है. तो आतलो तो खूडी मांय बड़ गयो हर फुलण हाळा बारणे बोलण लाग्या. तो वठे तो गाँव का आदमी बोले हर वठे का बीच में फुलण हाळा पण बोलतो तो रैवो छांनो. बोतो रै सो रैवो पिछाण का आतलो करके हर यो फुलण हाळो है. यो फुलण हाळो है. सो यूं उण न्यारा न्यारा छांट कर बता दिया तो फेर लोग बोल्या हर बोलो बोलो पिछाणवा वो जो तने बणे ही आवे है तो म्हे खड्या हो जास्यां सो तूं सूंग सूंग का पिछाण ले. तो ठीक है. तो गाँव हाळा आदमियां में मिल का फुलणहाळा भी बीच बीच में खड़े जगा खड्या हो गया तो फेर बीं आंतले ने कयो के इब तूं पिछाण हर कुण तो फुलण हाळो है हर कुण कोनी. कोन लेतो जा हर बतातो जा नहीं तो तेरी नांव कर लेवंगा. तो कही ठीक है. तो बो आतलो हर यां हूं माल मौख का बतातो गयो हर यो खड्यो सिपाई. हर हाथ पकड़ कर दियो करके हाथ भाव कुरे न. हर ओठूं हाथ हूं रैटलतो र हाथ पकड़ कर दियो करको हाथ भाव कुरेन. तूं सिपाई हूं ज्यादा पाप है. तूं कुनो है हर फेर उण ओठूं हाथ हूं रैवो कण लड़ का दियो तो रैटलतो र धाणीयां ने जाद पकड्यो हर ई में सै हूं ज्यादा बाँत आवे है हर यो बो धाणाद है हर उण हाथ पकड़ का दियो करको हाथ भाव कुरेन. हर उण औयां सारै फुलण रै आदम्यां ने हाथ पकड़ कर न्यारा छांट दिया. तो या देख कर फुलण हाळा भी चकराया हर यारै मांय साचयांणी कोन आवे है सो उणां भी या सोच बिचार कर ग्यांन बाधो पण कुछ भी समझ में कोनी आई. फेर बां बीं आंतले ने ही बूज्यो हर के सुरदास! तूं म्हांने ई बात रो भेद बताय. जद उण आप बीतीं री सारी बात बताई हर मैं औयां पैलां खुद भी धाणाद हो हर औयां र मैं चिरमां ने फोड़ घालतो. अेक दिन मैं अेक गरीब का रिपया चोर कर मांटी में मिलवा दिया हर फेर बीं ने रैत में गाड़ दियो तो बीं की आंतड्यां रै साप हूं मेरी या गत हुई। सो थे भी सै मेरै हूं या सीख ल्यो हर चिरमा ने फोड़ मत घालो।

मो. रामनाथ पुरोहित के जाड़

"बूढ़ा री अकल'र जवानां री मार"

पं. गुलाब चन्द जी रै जोड़

ओक बाणियूं ... बे दोन्यूं लोग लुगाई बूढ़ा हो
गया हा पण बाँ कै कोई नानो टाबर कोनी हो. पण बाँ ...
... हो. बाँ आप की उमर में कमायो ...
सो बाँ करतै "तुणकै तुणकै ताल'र कणकै कणकै छाछ" थोड़ो थोड़ो कर की बो मोकळो
धन जुड़ गयो. सो लोगां की आँख बाँ पर रया करती. ओक दिन ओक चोर
धन को ठोड़ बैठ आ फँस्यो. हर बाणियूं बाणियाणी दोनूं जागै हा सो
चोर नै देख र बाणियूं बाणियाणी नै बोल्यो हस आजै ... सोवै है आ
कै म्हैं ओ जागूं हूं. थनै ओक बात कहूं. वै कहो. कै ओक बर मैं ... गयो.
सो बठै ओक आपणी हेली सरीसो ही ओक मकान हो. बीं में मैं डेरो लगा दियो.
मैं दिन मावस की रात हो. मनै बेरो कोनी हो. सो मैं तो मेरो गाबो काढ
कर नांखै धरूं हर मावस की रात बीं नै चर ज्याय. सो मेरा सै गाबा मावस
की रात चर गई. सो फतरी कैप कर बै तो ठरड ठरड डोरै लागा ज्यांणुं बाँ
बापड़ां नै नींद आय गई होय. हर बाँ कै स्हारै ही ओक ओबरो हो. सो बो चोर
धन को भूखो बीं ओबर में बड़ गयो हर बीं की नीचै ही मूं खोल कर लेडू
पछेवड़ो बिछा दियो हर बाँ तो चुपकै चुपकै सरकाय कर है चंपत करयो हर
चोरड़ो देखै तो पछेवड़ो कोनी. तो उण मन में सोची हस यो बाणियूं कहै ही
बात साची है. जरूर तेरो पछेवड़ो की मावस की रात चर गई. पण लालच
कूंण नन्यो है. उण आप कै सिर को खंडवो उतार कर नीचै बिछा दियो हर फेर सेठड़े
है उचक लियो. हर चोरड़ै देख्यो हस यो भी मावस की रात चर गई. पण फेर भल
कोट उतार कर बिछा स्यूं. हर उण फेर कोट बिछायो. पण बो भी उण चंपत करयो.
पण छेलै नांख उण आप की धोती खोल कर बिछाई हर बा भी सेठड़े गुलक में धरी
हर इब सेठड़ो उठ कर नाला छोड कै सिन बायर आयो. हर फेर घर कै आगै खड़ो हो
कर हेलो मार्यो चोर है चोर है. दरवाजे की कूंवाड़ ठाडा जड़ लिया. सो रोळो सुण र
कर सारै बास का आदमी भेळा हो गया. हर चोर नै है कबजै करयो हर मारण लाग्या.
तो बो बोल्यो हस कै मरूं पैली मेरी बात सुण लेवो फेर मारियो. तो कही बताय
जद बो बोल्यो हस मैं थारो कूई बी हानी की. उलटो मेरै तन का गाबा थारै सेठ
कढ़वा कर दाब लिया. हर मनै माट को सो छपोड़ो कर दियो. मनै तो यो भुलो
दे दियो हस गाबा मावस की काळी रात चर ज्याय है. हर आप सरकाय र कर धरबो
करयो. इब थे ही बतावो हस मैं तो चोर हूं हर यो सेठ साहूकार है के? जद बाँ
लोगां बीं चोर नै छोड़ दियो हस इं कीं लियो तो है नहीं फेर ईं के गैल क्यूं पड़ां?
हर सेठ नै कही हस भई तूं इं क्यूं ओट में है. ईं को सारो तन को गाबो उतरा दे

चार लियां. सो ऐ चोर को चोर है. सो ई नै बापड़े नै लावादे. जणां चोर नै आद के गेलै ग्यो. सेठ आप की हेली में गयो हर लोग आपि र के घर गया. पण चोरे के मन में कूं दरद रयो. सो ऊंण आ कर आप कै भायां नै कही इस सेठ माँय फलांणा बणिये या करी. तो भायां मिल कर बिचार बांध्यो हस अब चालो बात. इब बां के करी हस बां में सब सैं हुस्यार हो बो चोरी करण नै सेठ कै चाल्यो. पण सेठ सेठाणी जागे हर. कूं हस बे रात नै तो जागता रैता हर दिन में सोता सो बो चोर जद घर में आयो तो सेठ बीं नै देख लियो. जद बो सेठाणी नै कयो रै कही, बो मेरो सोना को मूंनड़ो कठै है? तो बा कोई हांडी में दिन में अेक बीछु बड़ो देख्यो हो. सो बा बीं पर ढक देदियो हस जै चोर आसी तो बीं बखत यो काम आसी. तो सेठांणी बोली- ना कही फलांणी जगां अेक हांडी पड़ी है हर बीं प मैं अेक ऊबो ढकण दे राख्यो है. सो बीं में धारो हीरै कणी जड़्यो मूनड़ो पड़्यो है. पण रोळा मत करो. जै कोई चोर परस्यूं कोई चोर सुणतो होगो तो बो कद कर ले ज्यायगो. सो चुपका रहो. तो चोर दैखी हस आज सेठड़ो बार में आयग्यो. सो बो ठै बीं हांडी नै जाय कर उघाड़ी हर आप को दांणूं हाथ भीतर दियो. मांय तो बीछियो. सो ऊंण चट देस्यां बीं कै हाथ के डंक गडो दियो. बिछु जैरी हो. सो चोर कलै के डंक गडतां ही अेडी हूं चोटी तांणी चीस चालती हर बो हाथ नै बारै काढ्यो मार्‌यो. जद सेठड़ो देख कै बोल्यो हत आंगळी में चोर नै तरह जचा कर पहरलै. हर जै न आवै तो सुनार कनैं ढीली करवा लेये. यो कूं कसेड़ा है. सो या सुण कर चोरे कामायत सा मरग्या हस सेठड़ै करी हर मोत करी. पण इब गोर के चालै? बो बापड़ो कणारतो घर गयो हर घरकां नै सारी बात कही. तो बां नै जोर की फूंगल आई हस सेठड़े मोल चोट प चोट करी. पण इब आगे नै बात. सो बै इब चुगवार च्यार जणां छंटच हत आजां इब कांई चाल कर बीं को माल मनो तो ल्या स्यां उठाय हर बां दोन्यूं राण्डी रण्डवां नै गेरस्यां मार. सो जद आपणूं बदलो उतरसी. सो यो बिचार बांध कर बै च्यारूं जणा जे ले लाठी बरछी हर बै और पड़्या मिलै. ऊंण सेठ बिचार करो हत चोरड़ा गैल पड गया हैं. सो इब खैर नहीं है. तो ऊंण के करी हस बां की हेली कै पिछवाड़ै कांमरखां नी रै हर. सो पैलां तो सेठड़ै को जां हूं जाणजणती रैती. पण फेर सेठड़ो अेक दिन पतासा लेकर बां कै गयो हर टाबर टीबरां नै खूब पतासा बांट्या. हर फेर दूसरे दिन और गयो हर फेर टाबरां नै कहीं नै गुड़ का डला दिया हर कहीं नै मूंन खा पीसा दिया. जद तो कांमरखांत पतरया हर बोल्या कै सेठां, म्हारै सार कोई काम हो

तो ओड़ा देया. म्हे थारै हूं दूसरा केतनी हाँ. जद सेठ बोल्यो हाल दूसरा
कुण बतावे है? घर का नहीं. पण कदी काम पड़ेगा तो मैं कह दूंगा. ओर तो
काम पड़े है पण आज काल तो चोर म्हारै गेला पड़र्या है. सो मैं रात बेरात
काम पड़ ज्याय तो घरां कोनी आवां. तो बाँ कोमरेलांका का नांव हाबू साबू हा
सो बै बोल्या कदी म्हारो नाँव लेकर हेलो मार लेया. फेर सुणता पाण ही
आवांगा. तो कही ठीक है. हर या सारी बात सेठ आप के घर जा र सेठाणी
नै बताई. हर बाँ दोनुवाँ आप की आप करी में समझौता करली के जे
चोर आय गया तो आपाँ नै अब काँई या या करणी है. हर साँझ हुई तो
सोता पड़ता ही है च्यार चोर धम धम कूद कर भीतर आ बड़्या. हर सेठ
के कान भणक पड़ी. तो बो सेठाणी नै सैन देर बात करबा लाग गयो. हर
तो सेठाणी बोली- जी हाँ, आपणें इब बेटो हो ज्याय तो थे बीं को के नांव
कढावो? जद सेठ बोल्यो कही ना है गाण्ड की गाण्ड. इब बुड्ढे थारे क्यां को बेटो
होतो? तो कही नहीं. ने मानल्यो हो ज्याय तो थे के नाँव धरो? तो कही फेर
नाँव धरूं? हाबू नाँव धर ल्यूं. हर कही दूसरो ओ नाम ज्याय तो बीं को
नाँव धरो? इतरी बात सुण कर बाँ चोरां में सूँ एक चोर बोल्यो हाल यो
सेठड़ो इब बात कही करे है. यो काँई न काँई गाल घड़े है सो या तो ई
की बेगा सा रात काटो हर नहीं तो यो आपाँ नै फँसावेगो. जद दूसरा
साथी हरका बोल्या हल्दी बापड़ा आप की घर बिद की बात करे है. काण
द्यो. क्याँ को यो गाल घड़े है? तो फेर सेठ बोल्यो हाल नै दूसरो बार होय तो
बीं को नाँव साबू कढाऊँ. हर फेर सेठाणी बोली कही- हर थारै तीसरो और
बेटो ही हो ज्याय तो बीं को के नाँव धरो? जद सेठड़ो बोल्यो हाल
जीव डहकावे? बावली इब आपणें तीन तीन बेटा कठै धर्या है? तो फेर
सेठाणी बोली हाल मानल्यो हो ज्याय कांई हर राम की गत न्यारी है. बीं के घ
कोई बात को बी घाटो कोन. तो कही बीं को नाँव के के कढाऊं! बीं का नाँ
कढाऊं चोर. तो सेठाणी बोली हाल बै तीनूं बारणें खेलता हुया हर थे बां
नै हेलो मारो तो कैयाँ मारो? जद सेठड़ो बोल्यो है कही गाण्ड की गाण्ड इ
सीली रात में जोर से काई पाड़ोसी, सुणैगो के कैगो? हाल म्हारी
अणूता दीनी. सो हेलो तो देबा दे. तो कही, छाना सरी होल्यो सी कहै
जद सेठ जोर को सो हेलो मारयो हाल हाबू साबू चोर. तो है हाबू साबू
लेले लठ हर भाज कर धम धम भींत ऊपर की आय पूंच्या हर ठ
चोरां के रडू घाल लिया. हर इब हरकांकाका लागया ओ मारमार ठुकाहर

हरड़ सेठ रै भगवान सणाँ जीरा की बात सुणाई। जका आगरा आज मेळा हो गया हर चोरटाँ नै टका गण लागगा तो बाँ हवन नाई नै भाखी है आज की रात मई ओ कोनै मारो जु हे? यो सेठ रामा सैठाणी नै आपरा नै बात दी: ओ म्हारै बाड़ कर रखू सड़ी हर सै लपड़ रया हो. हर फेर बाँ सैठ को आगो किसो हताओ जद गाँव जाताँ मेळा हैत क आप कै घर गया हर चोराँ नै पीन्याँ छोड़. सेठ सेठाणी दानूँ घर जड़ की सोय गया रूँखाँ नै नींद तो केणी आई पण आप हर में बतळाता रया. पण चोराँ नै चैन कोनी पड़ियो. बै उदास हो गया हर बै फेर आपरा सहायो जोड़ियो हर सेठ नै बैयाँ बसबतणी में लेणु चायो. जद बाँ माँ हूँ च्यार जणाँ चुगताँ चुगताँ छैटा हत भव थाळ मे जाल्याँ हर बाणी बैरी पोछ सिरान धार कर आया. इतै ' अगन कुदी बणिएँ. सो सेठ बी अगाड़ सोच लीहर इब के करणु चाई. बात गली ना तो ओ आँगा दोनी हर चोराँ कलियो नाड़ो से इब कोई इसो जाबता घड़णु चायो हर आँ चोराँ की भोजन तान कर जाय तो ठुण के रीत कठे हूँ साखिया लायो हर फेर घराँ ल्याय की खीर बणाई. हर बीं में मोदकी खाँड हर केसर भिसतुरी देय की हर भरथाळ आँगणें में सिला दीनी. हर आप दोनूँ नाळे सी जाकर आड़ो हो गया हत ज्याण नीत आरी हो. इतरे में चोरटा आ पूँच्या तो बाँ हैन की बिचारी हत खीर तो के है भला खीर है. हर बाँ के मन खाँणे की आई सो बै च्यारूँ डोर हर चावड़ चावड़ रोस गया. एक नाळे बाँ खीर पीयी न हर बाँ के ऊपर फेर फिर गयो. सो बै च्यारूँ ओळा होय होय आँगणें में ढै पड़ग्या हर आप आपरी मैं भाग हूँ च्यारूँ आँगणें में पोड़ गया. इब सेठ देखी हैत तो च्यारूँ पूरा हया पण आँ नै नाळे सी गिरबाणा चायो. नहीं तो दिन गे राज हाळा फाँसी घाल लेसी. पण आँ नै दूर सी ले जा कर गेरै कूण? सेठ हूँ चालै न हर सेठाणी हूँ चालै न. तो सेठ कै मन में एक पुजारी की याद आई जको पाड़ोस में रैतो हर नित की भोजन रै सेठ कै घर स्नान न्हावण आया करतो. सो सेठ आप कै बारणें में आय बैठ गयो हर बीं की बाट देखबा लाग्यो. थोड़ी देर में बो पुजारी बठीनै नीसरयो तो सेठ नै बैठ्यो देख कर राम स्यामा करी हर बूज्यो हत सेठाँ आज इतरा सै बारणें में क्यों बैठ्या हो? जद सेठ पड़ूतर दियो हत पुजारी जी म्हारै घर में ओरा आ बड़ियो. सो बीं की मंतर जंतराँ कै जोर हूँ बड़ी सुंहाणी करनै हूँ पार कोनी ना लीनी. हर बो था कर मर्यो हत हूँ रात को हरथ पाँव सैं बीत लियो है सो इ को उठ माणा पर कोई बी ओर कोनी बातेगो. पण यो आज [illegible]

आवैगो सो वीं नै कोई बाड़ै नै आदमी रै सिर पर उठवा'र गाँव रै बारणैं मिल्या
देख्या हर गेरवा वाला नें पाँच सेर लाडू हर पांच रिपिया रोकड़ी देस्या. जद पुजारी
लाडू हर रिपियाँ री नांव सुण'र पुजारी रै मूं में लाळ टपक पड़ी. हर बो बोल्यो
हत ल्यावो सेठ मैं सिर पर उठावां. मैं हर सांझ गेर आऊं. तो सेठ बोल्यो
ही चावै तो सेठ नै पुजारी रै सिर पर पोट उठवा दीवी. हर कयो हक या पोट दूर
गेरियो नहीं तो यो फेर ओरूं पाछो ई आ ज्यायगो. तो पुजारी बोल्यो हक थानें
बेमन करो. मैं इसी जगां लेज्या'र पटक सूं हक यो आंसै ही रेवैली. हर बा पोट लेयर
मचल्यो सो गाँव बारणें ओक नदी बगै ही सो बीं में लेज्या'र गेर दीवी हर हर बो
मन में राजी होतो थको फेर'र बाणिये कनै आयो तो उण आगै इसैई पोट
बाँध'र त्यार कर राखी ही. सो पुजारी रै आवतां ही सेठ जी बोल्यो हक पोतो
पुजारी जी बोली बार हो गई ओठै पाछो ही आ गयो. तो अब बाळैय'र का
दूर गेर'र आजो. जद बापड़ै पुजारी ओरूं बा पोट सिर पर'र हर चाल्यो
सो गाँव सूं बारणें ओक खाळो हो सो बीं में गेर'र हर अब दन छिपण
की टेम गुड़ा'र पाछो आयो. तो सेठ फेर तीसरे री पोट आगै त्यार रखी हक
यो तो ओरूं पाछो ही आ गयो. जद पुजारी घणो झाळ करयो हक यो मैं
तो गेर'र आऊं हर मेरै सूं आगै लार मिलै. सो अब बाळ ई नै इसी जगां गेर
कर आस्यूं हक ओरूं आवै नी बैठली. तो बो तेल रो सिर पर पोट हर गाँव
बारणैं लेय गयो. ओठै ओक सूकी लकड़ियाँ रो ढिगो पड़यो हो सो बीं में गेर
कर आग लगायदी. हर अब बो मन में राजी होतो पाछो आवड़यो हक सेठ
कने सूं पाँच सेर लाडू हर पाँच रिपिया रोकड़ी लेस्यूं. सो यूँ मन ही मन
बो चाव करतो आवै हो. सो जद बो सेठ रै हेलो पूँच्यो तो सेठ ओरूं चौथी
पोट बाँध'र आगाऊ तेल राखी ही. सो पुजारी नै कयो हक पुजारी जी थे तो
बोली बार तो गई. पाछो ही चल्यो आयो. तो पुजारी मन में तो घणो दुख
पायो पण के जोर करै? बापड़ो बो बात में बँध गयो. जे पोट न गेरै तो सेठ
रिपिया किंयाँ देवैली? हर गेल री करी करायी सारी बेगार में ली जाय. तो
बीं में साप छछूँदर हालो गत हुई. सो उण बापड़ै ओरूं बा पोट उठाई
हर अब कांई ओक उजाड़ में सूनी बावड़ी पड़ी ही सो पोट लियाँ लियाँ बो
बावड़ी पूँच्यो. हर बीं रै कनारै खड़यो हो'र पोट नें ऊपर सूं पटकी सो बा
धररर करती बावड़ी में जा'र पड़ी. ओठै ओक कोई अतीत पड़यो हो. बो
टुकड़ा तो गाँव मां सूं मांग ल्यायो हर पाणी रै वासतै ओठै डेरो ढाळ दियो
सो बो पोट रो [illegible] सुण'र [illegible] बारणैं निसार कर [illegible]

आगे तो अलीतड़ो हर गैल पुजारी हत जांण कोनी घूंगो. तूं मतैं आज मो
पेड़ा घाल्या हां. सो आगे तो अलीतड़ो गैल पुजारी. सैं ठेक. सो भाजतां
भाजतां अलीतड़ो गाँव में पूंच्यो हर जो कोई भाजण मनी मिले जणा नीमिं
छुडजा देवै नहीं तो हैं त जाँण हूं मारस्यां. सो गाँव बड़तां ई उरलै नाके सेठ
ही बारणैं पड्यो पाल्यो सो बो भाज र सेठ की हेली भीतर बड़ गयो हर
गैल हूं जद पुजारी बड़ण लाग्यो तो सेठ ठ आग र को रवाजो ढ़ोक्यो
हर पु जी, म्हारी रुत तो म्हारे ही घरां रैसी. थे क्यूं हूं बयाने
थारो काड्यो पो धोती जाय. सो बापड़ो पुजारी हूं फलको सो लेर आ
वे घर गयो हर सेठ जी पाँच रिपिया हर पाँच सेर मिठाई बंधा दीनी
हर इब अलीतड़े नै कह्यो हक हूं तेरा पे मोलो मिडा तो छोड़ दूं. बखारी में
बड़ज्या नहीं तो तूं मरतै बी मरवैगो हर तूं बी मरैगो. क्यूं हमैं
बामण भाई ही सो जे सेठ जी की बात आयी तो गैल नै जुती हैं
छोड़ैगा. तो बो बापड़ो गाबो जाी तो सेठ नै सूंप दीनो हर आप बखारी
भीतर बड़ गयो. दिनगे उठ्यो तो सेठ नै बोल्यो हक सेठ जी, थारो गुण
भलो होयो ज्यो थे मेरो जीव बंचायो. इब ल्यावो मेरा गाबा तो
देद्यो. जद सेठ गाबा तो बीं नै ल्या दिया पण बीं की गाँठड़ी में एक
चीरड़ी कै पल्लै दस रिपिया हर ओक पावली बँधी ही सो बा तो चिलम
का गुल्लड़ में धरी हर चीरड़ी कै गाँठ बँधी की बँधी रै जणा दोतीं हर
फेर बो गाबा चाल्यो अलीतड़े नै पकड़ा दिया. अलीतड़ो आप का लत्ता पक
आप कै गैलै मारग पड्यो हर सेठ आप की मूंछाँ पर ताव लगायो. आगै जाय र अली
आप की गाँठड़ी खोली तो दाम कोनी. जद बो पाछो वाँ ही पगाँ भाज कर पाछो सेठ
कै घरां आयो हर आप का सेठ नै दामाँ की बात कही. तो सेठ हर सेठाणी दोनूं ही
नै मारबा आया हक आयो है रांड की रांड को अठै साहकारी बणण को, बामण
सेठाणी की हँसली लूंटी नै हूं उठा कर ले गयो बा पाछी ल्या दे नहीं तो
मैं रांड की रांड कै नै च्यार बजता राज कर कमठ में दिवा दूंगो. तो भाज
कर बापड़ो अलीतड़ो बी आप कै गैलै लाग्यो. उण पीसो पीसो कर आप की
कमाई मैं दोरो सोर कर दस पाँच पातड़ी जोड़ी ही. बो सेठ ठाव ली जद हर बो
रोवतो गयो हर आप कै गैलै चालतो गयो. ईं भाँत सेठ आप कै बुढ़ापै में
कई चोराँ नै छिका दिया हर च्यारां नै ओकैं ठाण राख दिया. बिना लाठी लाठी हाथ
नै पकड़ लिया. पुजारी हूं च्यारूं कुराँ बारणैं गिरवा दिया हर मजूरी की होती न. अलीत
आंधी मुड़ की जोतीं. साता ढळी है रात बूड़ी की अकल जू जाता वै मोर हूं समझ रै है.

राम चन्द्र जी नै चौदा बरस को बनवास मिल्यो तो बै नगर छोड़ कर रोईमिं चल्या गया हर जठै डेरो लगा कर भरथ जी की उडीकना करबा लाग्या तो भरथ चतरघण आप कै नानेरै हूँ आया तो बै रान परवार, राज माता हर नगर कै नर नारियाँ नै सागै ले कर राम चन्द्र जी हूँ मिलबा नै गया. बठै वाँ बाँदी सारी बात चीत करी. हर बै पाछा चालोगा नईं. नगर को कै परबन्ध करसी? पिरजा की रुखाळी कींकर होसी? तो राम चन्द्र जी भरथ जी नै सारी सँभळावण देदी. मातावाँ नै धीर धोबना बँधाई हर पिरजा नै समजाय करईं हर नगर का नर नारी सब पाछा चल्या जावो. तो भरथ जी चतरघण [illegible] नगर कै सब नर नारियाँ नै सागै लेर पाछा चल्या आया पण हीजड़ा पाछा कोनी आया हर जै बठैई बैठ्या रह्या. राम चन्द्र जी अठी कूच कर आगै नै भीर पड़्या. हर बै बनवास भोग कर औ रावण नै परलो सैमत मार [illegible] हर ज्यानकी नै बिजाण में बठा कर दल बादळ [illegible] बै पाछा आया तो वाँ नै हीजड़ा बठै का बठै बैठ्या पाया. तो राम चन्द्र जी वाँ नै बूजो हर रैं कई यो अठैई कैयाँ बैठ्या हो? [illegible] हीजूँ हाँ म्हाराज, आप बठा मैं [illegible] पधारई हर नगर का [illegible] नारी छुट आप [illegible] कै धो [illegible] जो नारी हा बै तो [illegible] फिर गया [illegible] म्हे न तो नर हाँ न नारी वाँ कै [illegible] आप कुछ भी कोनी फरमाई. तो म्हे आप कै हुकम बिना [illegible] कोनी जाता हर अठै का अठैई बैठ्या रह्या. तो या सुण कर भगवान [illegible] वाँ नै यो [illegible] दियो हर [illegible] मैं राजा कुळ होसी, [illegible] को या [illegible] अपना करी है. हर अबै [illegible] हर नगर निवासियाँ नै भी [illegible] हीजड़ा [illegible] तो वाँ भगवान नै [illegible] करी [illegible] म्हाराज [illegible] हीजड़ा [illegible] राजा [illegible] तो [illegible] आप नै [illegible] पिराचार [illegible] आप नै कुरा [illegible]. तो आप [illegible] या सुण कर भगवान [illegible] मैं आई हर जो [illegible] बोल्या हर [illegible] जामवन्त जी पटेल [illegible] हर वै [illegible] आचार [illegible] डेरा [illegible] राजा [illegible] रयाँ बोल देींगा सो इब पटेल जी जामवन्त जी को औतार हीं हर आज काडै राजा कै हीजड़िया हीं सो पटेल जी आँ नै आचार [illegible] नाकै मेलता जाय है।

जनरौ जनरी

नो. मोहन सिंह, बिजौलियाँ रे जरिए.

अेक हो जनरो हर एक ही जनरी. जनरो तो हो राजा हर जनरी ही राणी. जनरो तो राजा बगड़ावत हो हर जनरी गैली राणी ही. जनरा सिंग बगड़ावत तो राज करतो हर राणी जनरी गैलोत म्हैलाँ बिराजता. जनरा सिंग बगड़ावत सहज को नई हो. बो मोत जोर को राजा हो. बावन गढाँ रा गढपती बीं नै सलामी भरता हर सत्ता राव हर बहत्तर उमराव बीं नै ड्योडी में खड़ी हाजरी भरता. बोदी दुनियाँ बीं हूँ थर थर काँपती. बडा बडा सेठ साहूकारों की जनरा सिंग बगड़ावत, जनरा सिंग बगड़ावत करताँ जीब सूकती. बड़ा बड़ा बामण ग्यानी पिंडत बी जनरा सिंग बगड़ावत रो जस गावता. चौतलै भर में इसो कोई बी माणस मती होनी हो ज्यो जनरा सिंग रो तेवो न खातो हर जिनै नै जनरा सिंग री मुलाकी हो ज्याती बिनै नैं ही लोग आपूँ आप आगे हूँ झागे पगाँ धाकड़ हर सारी धणी धरा पर या हवाई फूटगी हस राजा जनरा सिंग बगड़ावत मोत जोर को है, राजा जनरा सिंग बगड़ावत मोत जोर को है. जनरी राणी गैलोत बीं री साँज सुवेरी सात सेहल्याँ नै साथ लेर भगतो करती हर सारै नगर की लुगाई बीं को गीरबो गाती. पातर बीं के आगे नाचती. तबलची तबला बजाता हर जाँगड़िया खड्या सिंदू देता. चारण भाट जस बिड़द बखाणता. इसा बै राजा जनरा सिंग बगड़ावत हा. राणी जनरी गैलोत म्हैलाँ बिराजता. बाँ कै अेक ही दासी. बीं को नाँव हो मीड़कड़ी. मीडकड़ी मोत आछे सुभाव की ही. बा सारै सारै दिन भाज भाज घर को खारेसा करती. बीं नै काम करताँ करताँ ही दिन छिप-तो हर धंदो करताँ करताँ ही दिन उगतो हर बा दिन छिपे उगे बीच हा उगे छिपे बीच बैपरवाँ हीं हलगा भाजती करती हर कदे बी हार सार कोनी मानती. दिनगे पीसती, कूँली छाबाँ पाणी भरती, करड़ी छाबाँ रसोई करती, पीये के पहर छाँटती छुकळती. आथण कै लकड़ी छाँणौं घालती, गोधळ कै गाय साँतर दुवालती सज्या चोखी रसोई करती. राजा राणी नै जिमावती, फेर बाँ री सेज बिछावती हर जद राजा राणी पोढ ज्याता तो बा बैठी बैठी पूँन घालती हर पग चंपी करती. सो बा राजा राणी रै मोत दूँ लागती ही. पण राणी कनै बा ज्यादा रैती सो बीं कै बा ज्यादा दूँ लागती ही. पण सै की सदा ही अेक सी कोनी रै. ज्यो मीठा खाय बीं नै खारा बी खाणाँ पड़ै। सो अेक दिन बगड़ावत राजा जनरा सिंग नै कमाई पैं बोली बार लागगी। ज्याल की बिरियाँ चली गई. जद राणी जनरी गैलोत कै मन बडो सोच उपन्यो. हस राजा जनरा सिंग बगड़ावत तुरताक मोकलो करता कोनी आया सो बै भरल का काचा ही सो बाँ नै श्राप लागगी होगी. बा कुआ

ग्वाँ मरताँ को करतो होगो. सो उण आप की दासी मींडकड़ी नै भेजी हर या तूँ राजा जनरा सिंग बगड़ावत नै कचेड़ी हूँ बुला कर ल्याव ज्यूँ मोतिनकर लेवैं। पण बठै जाय कर अदब हूँ खड़ी हूजे, अदब हूँ हेलो मारजे हर जीभ सारै हूँ बोलजे नहीं तो राजा जनरा सिंग बगड़ावत थाँ पर कूमल हो ज्यांगा हर फेर थारै म्हारै दोन्याँ कै तूमत मँड ज्यायगी. तो वरी मनैं पैलाँ समजा दो हर की भाँत बाँ नै कचेड़ी मैं मा रा आदरन करूँ। तो कही कचेड़ी मैं बड़ा बड़ा राजा, राव, उमराव हर सेठ साऊकार खड़ी ताजीम भरैं ही सो बाँ सब के बीच मैं बड़े नाँव हूँ सीकारो देर यूँ आदरन करज्यो हर- कपड़ा फाड़ण, जमीं उखेड़ण, जण जण नै डरावण हर राजा जनरा सिंग बगड़ावत। ब्याल्यू की बिरियाँ चली गई. मोजित सीलो होय छै सो म्हैलाँ पधारो।" थारी राणी जनरी गैलोत जबी भुरबै छै। तो वरी ठीक है. मैं या ही बात कचेड़ी मैं जाकर अरज करस्यूँ। तो कही भूल मत जाजे। जी कही बोली भूलूँ। सो मींडकड़ी दासी या बात याद करती चली कचेड़ी मैं पूँची पण गैलै मैं सीकारो तो जीब हूँ उतरग्यो हर रै कारो रवाँ होग्यो। सो बा चालती चली चाली चली कचेड़ी मैं पूँची तो बठै के देखै हर राजा जनरा सिंग बगड़ावत की कचेड़ी भरपूर है। सो कँयूँ तो बा पैली ही बावळ गावळ होगी ही हर कँयूँ फेर बा राजा जनरा सिंग बगड़ावत की कचेड़ी की छिब देख कर इक चुक हो गई। सो उँण राजा नै यूँ हेलो मारयो- कपड़ा फाड़ण, जमीं उखेड़ण, जण जण नै डरावण हर राजा जनरा सिंग बगड़ावत! ब्याल्यू की बिरियाँ चली गई. ~~मो~~ टूकड़ा ठंडा हुय छै सो म्हैलाँ चाल। तेरी राणी जनरड़ी जबी रोवै छै।" सो या बात सुण कर राजा जनरा सिंग बगड़ावत भोत बेराजी हुयो हर लाल ताती आँख काढ़ कर मींडकड़ी कानी हर बोल्यो- 'थारी खाल कढ़वाय स्यूँ' हस थे जबाँन सम्हाल कर कोनी बोली।" या सुण कर मींडकड़ी दासी का होस गुम होग्या हर बा बाँ ही पगाँ पाछी भाजी. तो कठै तो पग धरयो हर कठै कोनी धरयो। आँधा ही सल्यो। सो भाजी दौड़ी भाजी दौड़ी म्हैलाँ पूँची। जद बाँ राणी जनरड़ी गैलोत कनै पूँची तो बीं नै लाल लाल भरी देख कर राणी जनरड़ी गैलोत बूज्यो हस-मींडकड़ी दासी। कैंयाँ साँस चढ़रयो है? कैंयाँ घबावरी है! के बात है? है सो साची बताय जद मींडकड़ी दासी बोली- राजा जनरा सिंग बगड़ावत मेरै ऊपर कूमल हे गया हर मनै बोल्या हस मींडकड़ी दासी थारी खाल कढ़ायस्यूँ।" सो मैं तो बाँ नै कूमल कर दिया। जद राणी जनरड़ी गैलोत बोली- रै कही निगोड़ी बावळ गावळ जुबान काढी होगी। है जिसी मनै साची साची खोल कर समझा

जद मींडकड़ी दासी अरदास करी- हुकम मैं तो बावली रांड हूं। मेरै तो इसोई इक थोलो हर इसी ही छाप धोली। मैरै तो इसोई रैबारो हर इसोई भीचारो। हर फेर मैं जणां राजा जनरासिंग बगड़ावत की कचेड़ी मैं पूंची तो वठै मैं वॉं की कचेड़ी की ठाठ्या देख कर चितराम सी हो गई। सो जीवणै की बात तो मैं भूल गई हर फेरै मूँ हूं रैबारो भीतर गयो सो ई बात पर राजा जनरासिंग बगड़ावत कुमाव हो गया। सो वै मन्नैं इब जीया ज्यांन की मौत मारैगा। इतरी अरदास कर कर मींडकड़ी दासी डु, डु रोवै लागी। तो मींडकड़ी दासी नै रोवती देखी जद राणी जनरड़ी गैलोत को जी भर आयो क्यूं कै बा रात दिन राणी जनरड़ी गैलोत की पेलवान रैती हर बीं को आज काज ओड्या कड्या करती। सो राणी जनरड़ी गैलोत को मींडकड़ी दासी मैं जीव पड़ग्यो हो तो राणी जनरड़ी गैलोत मींडकड़ी दासी नै धीर धोबना बन्धाई हर कह्यो, हस मींडकड़ी दासी तूं मन मैं सोच बिचार मत कर। जठै तांणी म्हारी लागसी वठै तांणी मैं म्हारो सारू आणौं बजासूं। हर थे बिलकुल बी मना डरो। थारी गत सो म्हारी गत। या कैय कर मींडकड़ी दासी को दिल जम्मो करी हर फेर आप नहाय धोय कर हर सोला सिंणगार करबा लागी। तो पैलाँ तो ऊंण आप कै बाल बाल मैं साचा मोती पोया हर बालाँ नै जड़ हूं लेकर अंणी तांणी मोतियां हूं लड़ालूम कर लिया हर वै सीस हूं लेकर जांगाँ तांणी छिटकता इसा सरूप लागता ज्यांण मोतियां री बाल्य लटकती हुवै। हर फेर राणी जनरड़ी गैलोत मांथै मैं सिंदूर की सुहाग बिंदली हर नैणां मैं काजल की झीणी झीणी रेख घाली। नाक मैं नकबेसर हर ओठां परलाली रचायी। गल मैं नौसर हर तलै पाट पटम की आंगी। कड़्यां मैं तागड़ी हर तलै रेसमाली साड़ी पटरी। झटबंध लाड़ा घाल्या. पगां मैं तलै पायल हर बाजणां बै झण झण करता बिछिया। आंगलियां मैं सोनै की चिटकी पोला हर ऊपर हाथ मैं बाजू बन्द। बाजूबन्द कै तलै लटकती लूम। हाथां हूं नीचे पूंचा मैं हाथी दांत को चुड़लो। हर चुड़लै कै आगै पाछै सोना का बन बंगड़ी। चीटली आंगली मैं हीरा जड़ नोलखा मूंदड़ी हर हथेल्यां मैं मैंदी रचावणी। इसो सो सिंणगार कर कर राणी जनरड़ी गैलोत राज की डूंगर कन्डा कर हर सावण सी गाती पलो सम्हाय कर झण झण करती राजा जनरासिंग बगड़ावत का आप कै लोवण की कचेड़ी पूंची। वठै कचेड़ी की छिब देख कर राणी मन राजी हुई हर फेर ओटै हूं पीठ फेर कर देखो मारयो- राजा जनरासिंग बगड़ावत मोतीन सीलो होय छै। तिरणां को बालनियां करतो होसी सो हुकम म्हैलां पधारो। जद राजा

ऊनरासिंग बगड़ावत यो कीवारो सुण कर मोत राजी हुया हर राणी ऊनरी गैलोत नै बोल्या राणी ऊनरड़ी गैलोत ! थे मैलाँ बाहर क्यूं आया? थारो कांचो काया कै धूँन लाग ज्यासी. थारै पगाँ कै फाला होज्यांगा. सो थे चटकै पाछा मैलाँ पधारो। याँ नै नासर हर घड़वा देस्यूं हर थारी सावण सहेल्याँ नै गेडरा। तो या सुण कर राणी ऊनरड़ी बगड़ावत मोत राजी हुई हर पूठी मैलाँ आय गई। लेर डूं राजा ऊनरा सिंग बगड़ावत बी कचेड़ी तो बरखास करी हर मुलकता थका मैलाँ पधार्या। राणी नै दूसरै दिन सुनार नै बुला कर नासर हर घड़ा दियाँ हर मींजड़ी दासी नै गेडरा। लोग बतावै है हाल ज्यो आदमी राजा ऊनरा सिंग बगड़ावत नै रैबारो देता बाँ नै राजा ऊनरा सिंग कच्चो कच्चो चाँणी माँ कर पिला देता हर ज्यो मणस बाँ नै कीवारो देता बाँ नै बै मोकलो धन देता हर ऊँचा ऊँचा ओदा देता सो आज ताणी राजा ऊनरा सिंग बगड़ावत की लोग चिरच्या करै है हल इसा ही।

"बाप को बदलो"

ओक नगरी में ओक बूडो बाणियूँ हो। बो हाट खोलतो। हाट कै पाण घर को धंदो चलावतो। बीं कै घर में ओरतो कोई कुड़मो कोनी हो. ओक बाणियाणी ही सो बै दोन्यूं लोग लुगाई चोखो खाता, चोखो पीता, हर आप का मोज उडाता। बाँ कै घणाँ दिनाँ ताँणी कोई टाबर टीकर कोनी हुयो. तो छेकड़ नादै बाँ मोत जप करम तीरथ कर्या, सेठाँणी बरत कर्या। धरम पुन कर्यो तो बाँ कै बूडे बारै ओक डावड़ो हुयो। तो सेठ सेठाँणी कै चाव चढ्यो। बाँ मोकलो धन दायजो, बाँट्यो, भूखा माँगणाँ नै दियो। सारी नगरी में भेल्याँ भेल्याँ गुड़ बाँट्यो हर घणाँ ही गीत नाच करवाया। घणूं ही चोखो पईसो खरच कर्यो हर पगाँ चालतै सारै गाँव नै जिमायो। सो सारा नेग चार कर कराय कर सेठ तो आप कै हट-बाट लाग्यो. हर सेठाँणी कँवर नै पाळबा लागी। हर कँवर लाडाँ कोडाँ हुयो हो सो बीं को पाळण पोषण बी खूब लाड चाव हूँ होबा लाग्यो। घरमें कोई बात की कँवर खातर घाटो हो कोनी. सो बो दूणाँ को धायोड़ो रात चोगणूं हर दिन दूँणूं बदबा लाग्यो. तो बो बारा मैहनाँ को ही पाँच बरस को सो लागे लाग्यो। ओक दिन सबेरी कै बगत सेठाँणी तो घर कै कामकाज लाग गई हर कँवर नै सेठ कै गोदी दे दियो। सो सेठ गोदी ले कर सारै आँगणै मोद में घूमै लाग्यो। इतरै में नीमड़ी में ओक कालो काग लियो कखू की बोल्यो। तो काळै काग की कखू बो सुण कर कँवर आप कै बाप नै बूझ्यो हर बाबा सा यो नीमड़ी में कै बोलै है? तो सेठ कयो हाल यो तो कागलो

कागलियो बतलै है। हर फेर कँवर ओजूँ बूज्यो हस बालो रग, यो नीमड़ी में
कांई बोलै है? हर सेठ फेरूँ पड़ूतर दियो हस यो तो नीमड़ी में काळो काग
बकूबै है। हर फेर कँवर मुड़ कर बूज्यो हर फेर सेठ बो ही जाब दीन्यूँ। सो ईं
तरै कँवर तो सो बर बूज्यो हर सेठ सो बर जाब दीन्यूँ। इतरी बर पड़ूतर
दियो उतरी ही बर सेठ गिणतो गयो सो सौ पर गिणती पूँची। सेठ स्याणू हो
सो औ सोवूँ सवाल जवाब बही में मांड दिया हर बार मिति हर घड़ी पुलाँ
सै चोक्स घाल दिया। बा बही सेठ ठाई ठोड़ सम्हाळ कर मेल दीनी। हर
या बात आई गई। दिनाँ नै जातां के बार लागै! समै पाकर सेठ तो बूढो हो
गयो हर कँवर जुँवान हो गयो। ब्या-सगाई बी सारव हो गया। घर में बहू
आय गई हर रैणी सैणी हो गई। कँवर हर बार घर गुवाड़ी को सारो काम
सम्हाळ लियो। सेठ बूढो डोकरो हो गयो हर पोळ में खाट घालली सो
सारै दिन खाटली में पड़्यो रै हर कोई पाणी को लोटो पकड़ा देवै तो पीलै नहीं
तो राम राम करबो करै। अेक दिन सेठ मन में बे पाई हस कँवर को बेरो तो
पाड़णूँ चायेन हस यो मेरो कितरो'क बादलो उतार सकै है? जद अेक दिन
ओजूँ बाँ ही बार मिति हर घड़ी पुलां में बो ही मेचव मिलगयो।
हस कँवर सेठ के धोरै बैठ्यो हो। इतरै में काळो कागलो आय कर नीमड़ी में
बकूब्यो हर सेठ के इप आप री पैलाँ हरकी बात याद आई। तो उणा कँवर
नै बूज्यो हस लाडा! यो नीमड़ी में के बोलै है? तो या बात सुण र कँवर
जाब दीन्यूँ हस यो तो काळो काग बकूबै है। तो कँवर नै फेर बूझलै मुड़ कर
बूज्यो हस बता! यो नीमड़ी में के बोलै है? तो कँवर ओजूँ यो ही जाब
दीन्यूँ हस यो तो नीमड़ी में काळो काग बोलै है। डोकरै फेर बूज्यो हस यो
नीमड़ी में के बोलै है? तो ईं पर कँवर नै झाल आई हर बो झलाळ कर
बोल्यो हस थाँ नै कितरी बर बताऊं? यो तो नीमड़ी में काळो काग बोलै
है। हर बूडै फेर पाछै ही बूज्यो हस मोती! यो नीमड़ी में के बोलै है? तो
या ही बात ओजूँ सुण कर कँवर नै मोत रीस आई हर बो झल्ला
कर बोल्यो हस यो थारो सिर बोलै है? उतरी कैय कर कँवर बैठ्यो हुआ
खड़्यो हुयो हर पोळ हूँ बाहर निकळबा लाग्यो तो सेठ पगाँ रा गातेड़ा
खड़को सुण कर हर फेर हेलो मार्यो हस मोती अेकर पाछो आव
तो कँवर बोल्यो के अबकै के बूजणूँ है? के बाकी रैग्यो? थायो मैं थारा
औ बाद पंचोल। मनै मेरो काम करबा देवो। तो सेठ कही हस लाडा

अेक बर तो पाछो आव। थारै सूं म्हनैं कांई काम है। कै बळगो थारो
काम। पड्यो रो बोतळबाळर ई मांचली में। तो कही थां नै म्हारी सूं दे अेक
बर पाछो फिर। तो कंवर आळ मारतो थको पाछो फिर कर बाप कै
पास आयो। हर बतायो देवां बो थारो दिसै पंचोळ है? तो डूडकोया
कही हर आपणी उगणी साल कै सामलै आळै में अेक बही पड़ी है सो बा
उठा कर मेरै पास ल्याव। बीं में लाख म्हार री अेक हिसाब मंडयो
है सो बो मैं जीवतां जीवतां थां नै बतादूं। लाख म्हार रो नांव सुणते
म्हार पावलो हर कै बेरो खिवरो धन सूं आप सी हर मेरा हाळर धुप
ज्यांसी। सो बो म्हार देसी उगणी साल में भाज कर गयो हर बठै ई
सारा बही चोपड़ा उठा कर आप कै बाप कै आगै ल्या धरया। तो बूडै
बा बरसां पुराणी बही निकाल कर आप कै जवांई कै साथै फेल दीनी
हर फेर कह्यो हर ई रो फलांणू पांनू काढ़। तो कंवर धन कै मूढ़ै
हो बो ही पांनू काढ कर आप कै बाप कै आगै धर दियो। तो बाप बा
कही हर बेटा। ओ हिसाब पढ कर म्हनै सुणाय। जद कंवर बोलियो
पड़बा लाग्यो तो कै पढै है हर यो तो थारो ही लेखो है। सो बो
मन ही मन में सोच हूं गयो। हर म्हार बाप बोल्यो हर मोतीया
समाचार पढ कर म्हनैं सुणाय हर ई में के मांडयो है? तो कंवर पढ़कर
सुणाबो चावै पण सरमां मरतै सूं पढ्यो कोनी जाय। बो बीं बही को बो
लेखो पढ कर तळै रो तळै हर ऊपर को ऊपर रैग्यो। ज्यांणूं सारै
सरीर में सुन छाय गई है। तो फेर पितराम लिख्यो सो देख कर डैणं
ओजूं बोल्यो हर जे थारै सूं न बंचै तो मैं बांच कर सुणावूं। म्हारी
आंख्यां सूं तो कोनी दिसै पण यो समाचार तो म्हारै हिवड़ै में मंडयो
है। जद कंवर करड़ी छाती कर कर सरमां मरतै थकै बो लेखो पढ्यो
तो सबू पण बीं में बाकी कांई रही न। बो थोलो चुप होग्यो हर
फेर हाथ जोड़ कर आप कै बाप नैं अरदास करी हर बाबो सा मेरी जा
भूल हुई सो थे माफ करो। ओजूं मैं इसो काम ओजूं जीवूं जठै तक
भी कोनी करूं। बाप बाप ही है। बाप को बदलो बेटी बेटा कदे
सो काळ में भी कोनी उतार सकै। ई भांत सेठ आपकै बुढापै में कंवर
नै साची सीख दीनी हर आप री बूडै बारै सेवा करबा को साचो गेलो
घाल्यो। कंवर जें दिन पाछै सदा आप कै बाप की सेवा करी हर कदे भी
कयो कोनी गेरयो। नोट- लक्ष्मीनारायण स्वामी से प्राप्त.

लो. मनोहर लाल स्वामी
गढ़ो रा ... [illegible]

सूजाँ- पिरथीराज

मोत बरसाँ पैली री बात बतावै है कै चितौड़ रै राज में बीर मोत हुया करता। लुगाई मोट्यारां सूं बी ज्यादा बीर होती। बैं री बीजड़ सखरी आसी तो उदैपुर नगरी रो नाम नाम ही बीर बणग्यो हो पण बैर बाँ में बी सारां में सीसोदिया सिरै रैता। पिरथी राज सीसोदिया आप रै जमानै में बडो भारी बीर हुयो है हर बीं रो नाँव बीरता रै नाते इतिहास में हगग्यो हो। पिरथी राज रै एक भाण ही। बीं रो नाँव सूजाँ हो। बीं जमानै में बून्दी रा राजा बी मोत जोरका हा। बाँ बाबत या कैवत चालती आती ही कै "गाडो बी डिगै पण हाडो ना डिगै" एक गाडो तो उथळ सकै है पण रण में हाडो कोनी उथळै। सो पिरथी राज री भैण सूजाँ रो ब्याव बून्दी रै हाडै राव रै सागै हुयो हो। पण कोई बिरियाँ हाडै राव आप री बीरता रो बखाण सूजाँ सूं करणो चायो पण सूजाँ आप रै भाई री बीरता जाणै ही सो बीं रै सामनै हाडै राव री बीरता रो कै बखाण करती. तो सूजाँ हाडै राव री बीरता पर नाक चढ़ायो तो हाडै राव नै या बात चोखी कोनी लागी. [illegible] सूजाँ पर हाडो राव नाराज हो गयो हर नाराज बी इसो हुयो कै सूजाँ नै नित री ठोकबो सरू करदियो. एक बारी भाई जे हाडो है तो तूं बीं नै पांवडो घाल दे हर नहीं तो थारै नित री ठोक छै सो ये भाग म्हारी स्याहाय करो. तो सूजाँ कई दिन ताणी तो गम खाबा करी पण छेलै बाकर उण आप रै भाई नै यो बेरो भेज दियो कै "बीरा रै चोखो थे दूंड्यो म्हारो सासरो. चोखी थे बाँदी बाई री पाळ जामण का रै जाया हुकड़ाँ किरीभी रै बीरा मैं फिरूं [illegible] तो पैरचाँ बीरा रै कापड़ा हाथ जे लीन्या चोबा बोग जामण का रै जाया खड़ी रै उडावूं नित उठ कागला. बीरा रै आदी गाडलो रै म्हानै भोम में आडी रावैलाँ म्हानै बार जामण का रै जाया आता तो नाना रै हाडा मारसो बीरा रै जे बळ थारी बाँवाँ माँय जामण का रै जाया आप छुडाज्यो रै सूजाँ भाण नै." यो भाँण रो समचार सुण कर पिरथी राज घूंडै नै चडखाड्यो हर अठै आवता हाडाँ सूं जुद्ध रचायो तो जुद्ध में सारा हाडा हग गया हर बाँ पिरथी राज रै आगै पगाँ में घाल लेलिया. जद पिरथी राज आप रै भणोई नै ही मारबा लाग्यो तो सूजाँ मना करदियो हर एब दोन्यूं पागाँ में राजीपो होग्यो हर पिरथी राज जी जद घोरै में आय गया हर बाँ रो सिर कट लियो तो बाँ रो ~~सिर~~ धड़ सिरोही सूं चाल कर गढ़ में आय करगिरयो. लैर सूजाँ आई हर बा बी बठै भाई री चिता कनै पिराण देदिया. सिर सिरोही रै धड़ गढ़ में री [illegible] गढ़ में बाँ री समाद हीं। लोग पूजै हीं।

दुगानाथ जी राठोड़ को नाँव जोधपरवाळी में जण जण री जीब पर मिलै है। बैंयाँ तो राठोड़ाँ में अेक सूँ अेक बढतो हुयो है पण दुगानाथ जी बी अेत जोरका बीर हुया हीं। जद दुरगादास जी जोधपर री म्हाराणी हर कँवर नै काबल सूँ जोधपर ल्यावै हा तो गेलै में नौरंग स्या बादस्या बाँनै रोक लीन्या। दुरगादास जी आप री अूरमा सागु घणी ही बादस्या सागै अकल लड़ाई पण अेक बी कोनी चाली। दुरगादास तो या चावै हा हक राणी हर कँवर नै लेकर वैयाँ न वैयाँ जोधपर जा पूँचूँ हर नौरंग स्या या चावै हो हक राणी हर कँवर नै अठै का अठै थाम ल्यूँ हर दुरगादास रो रीतन कर दूँ। छेलै नावै राठोड़ाँ रै तम्बवाँ में या चिन्ता छाय गई हस बाक उराणूँ हो गयो हर इब राठोड़ाँ री बाजी रावणूँ नारणा रै हाथ है। तो या खबर सुण कर सारे ठाकरलोगाँ का मूँ पीला पड़ग्या हर खेलणियाँ खोया गया. राणी हर कँवर नै बचावण की सैं रै चिन्ता लाग गई. तो सारे राठोड़ाँ मिल कर चोदर करी हस बादस्या री बाईसी नै कुँण रोकैगो हर राणी र कँवर री हसवारी सागै जोद पर कुँण जावैगो। तो मरी चोदर में बीड़ा फेरा गया. तो कोई भी बीड़ै नै हाथ कोनी घालतो. छेलै नावै दुगनाथ जी राठोड़ बो बीड़ो उठाय कर चाब गया हर तरवार रूँत कर बोल्या हस "मैं यो पण रोपूँ हूँ कै जठै ताँणी राणी कँवर री हसवारी बगार कोस पूगा ज्याय जी जठै ताँणी मैं बादस्या री बाईसी नै रोकी राखूँगा. तो मैं छतरी नहीं तो छतरी को अंस नहीं. फेर तरवार नै घुमा कर कयो हक माता मुवाँनी! तूँ मेरी रिछ्या करिये." दुगनाथ जी रै लैर और बी कई राठोड़ त्यार हूग्या हर फेर दुरगादास जी तो राणी री हसवारी सागै भीर हो गया हर दुगनाथ जी राठोड़ हर बाँ का साथी लारै रैग्या. पैलाँ तो बाँ अमल आरोगयो. बाँ बाँ नै हर बी बी नै हथेल्याँ मैं घाल घाल अमलकर वायो. हर फेर बै आपसरी में बाँथ घाल घाल मिल्या हस आज को यो मिलबो छेलो मिलबो है. अब का मिल्या ओजूँ कोनी मिलाँगाँ. हर इब बै चोकस त्यार होग्या हर इतरै में बादस्या री बाईसी आ पूँची. तो राठोड़ाँ नै रोक कर डूंगर की नई खड़्या हो गया. तो इब आपसरी में खाँडा बाजण लाग्या. हर राठोड़ बाईसी नै गाजर मूल्याँ री नई काटबा लाग गया हस जो राठोड़ जिन्नें जाय उन्नें ही मार मार कर सैं फळा उडा देवै. और दुगानाथ जी राठोड़ बीच में घाई घालै. सो यूँ लड़ताँ लड़ताँ बाईसी का दाँत खाटा कर

दिया. पण कठै तो बाईस हजार फौज हर कठै गिणती का राठोड़. छेलै नांद
दुगानन्द जी का साथी कट कट कर धरती पर पड़बा लाग्या. तो सैं को सैं कट
लिया हर दुगानन्द जी अेकला बंच्या. तो बाँ मन में विचार कीयो इण पौर
सावँ तो थारै सागै दगो कीयो ज्यो सै क सैं दुरग को लालच कर कर पैलाँ
उठ ग्या. पण थे ज्यो पण लेयो हो बो पूरो करणूं चायजै. तो बाँ अेकलां ढाई
घड़ी ताँणी बादस्या की बाईसौ नै रोकी राखी. छेलै नांदे बाँ कै डीलकी
बोटी कट कट जमी पर पड़बा लाग गई. सिर बी कट कर कै पड़ग्यो, पण
बै बिना सिर जूझता रया. बाँ का पेर पोन्दूँ हरफ बी कट कर गिरग्या,
पण बाँ को धणू ही गैलो रोकबा करयो. फेर धड़ का बी टूक टूक होग्या,
पण ढाई घड़ी पूरी कर दीनी. ई भाँत दुगानन्द जी आपको पण पूरो करयो.
ऊं दिन राणी नै बंचाबा हाळा दुरगादास जी नई दुगानन्द जी था।

नोट- लक्ष्मी नारायण स्वामी, रतन शहर से प्राप्त.

31061